RNI No. UPHIN/2011/40224

पंजीकृत सं.-एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी-341/2021-2023

हिन्दी मासिक पत्रिका
सितंबर - 2023
मूल्यः 20/- रुपये मात्र

प्रकृति मेल

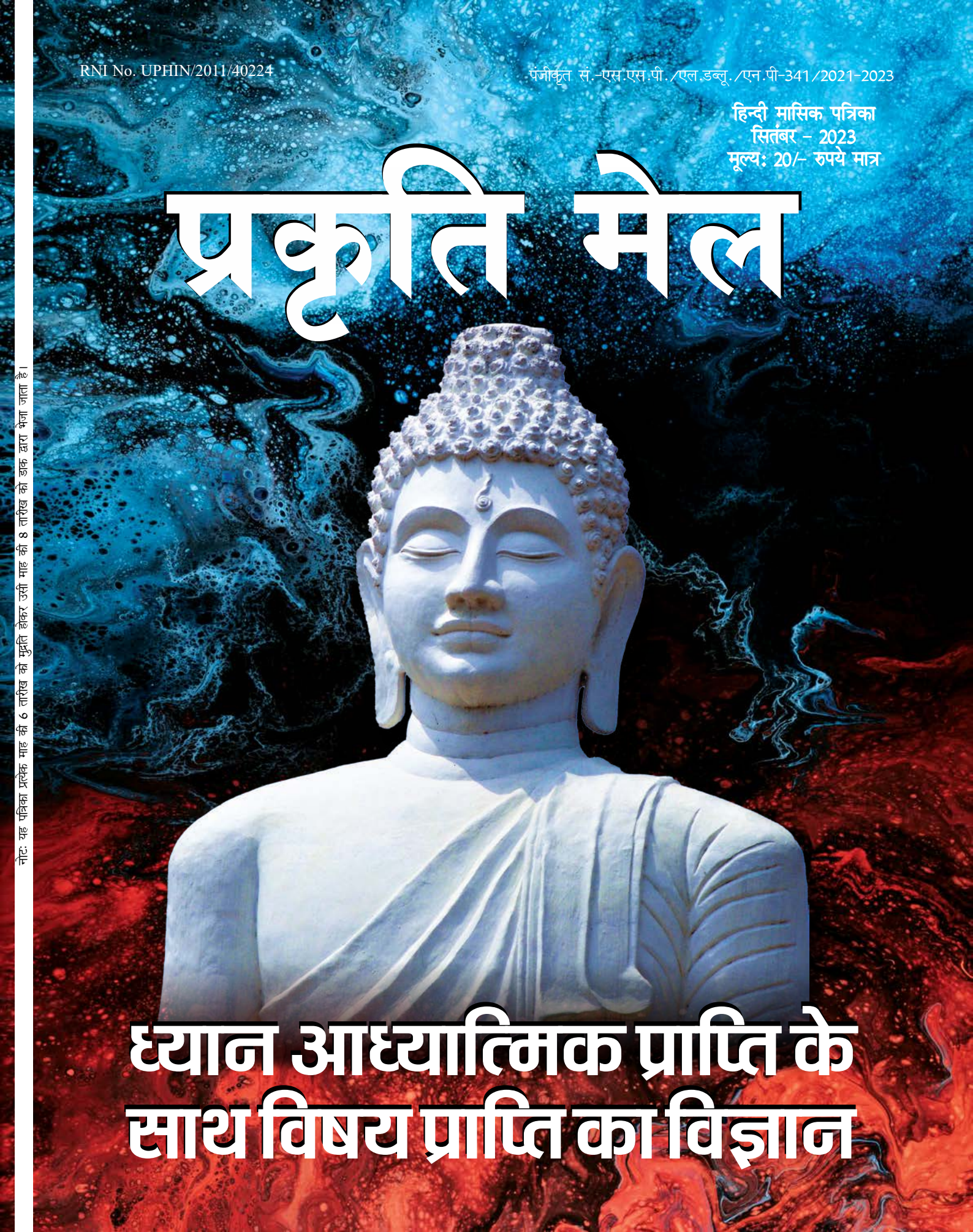

ध्यान आध्यात्मिक प्राप्ति के साथ विषय प्राप्ति का विज्ञान

नोटः यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है।

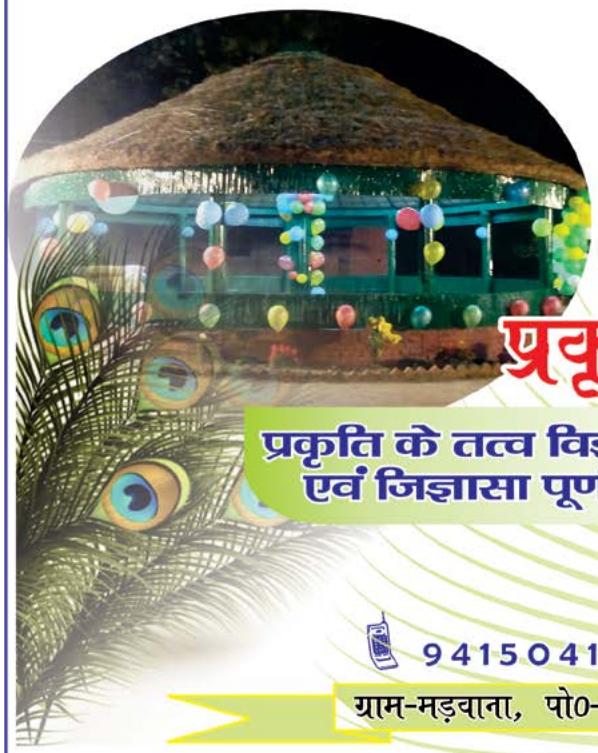

प्रकृति आश्रम

प्रकृति के तत्व विज्ञान, जीवन के मूल रहस्य
एवं जिज्ञासा पूर्ण करने की प्रकृति स्थली

'अशोक मानव'

9415041794, 9807636072

ग्राम-मड़वाना, पो0-रघुनाथपुर, निकट सैदापुर, लखनऊ।

कोमल

बिल्डिंग मैटेरियल

सत्य प्रकाश मिश्रा (राहुल मिश्रा)

बिक्रेता • बालू • मौरंग • सीमेंन्ट • गिट्टी

मछली शहर, जौनपुर

मो0 9792512188

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्षः13 अंक : 3

सितंबर -2023

संरक्षक

डा० उत्तम प्रकाश मानव

संपादक

अशोक मानव

कार्यकारी संपादक

उमेश

विधि सलाहकार

नवनीत कुमार वर्मा

मुख्य संवाददाता

आशीष त्रिपाठी

वरिष्ठ संवाददाता

अरविन्द त्रिपाठी

दिल्ली संवाददाता

मनोज

पुर्वांचल हेड

श्री प्रकाश मिश्रा

संवाददाता

सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील प्रदीप, गौरव पंत, अभिषेक पंत, हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी, सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी, अक्षय कुमार, अभय सिंह

ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीकि

संजय यादव

कैमरा मैन

धर्मेन्द्र त्रिपाठी

प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता

संपर्क : 8423330911, 9807636072

पंजीकरण कार्यालय

सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश– 226022

प्रधान कार्यालय

18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग, फैजाबाद रोड, लखनऊ – 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच–पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

नोटः इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृत्तिका के स्वेक्षा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिंटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद–लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित कराकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।

संपादक – अशोक मानव

Website : www.prakritimail.com

Email : editor.prakritimail@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

P 10 प्रकृति रासायनिक केंद्र

P 13 स्वर तृयांकुरित वैधता - उत्तरजीवी सभ्यता

P 21 मिलान की मिलावट का गणितीय अंत परिणामिय भक्षण

P 24 स्थिर चित

P 35 अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवसः शिक्षा का महत्व

P 38 AI के नैतिक निहितार्थों का अन्वेषण

P 41 सावन से हो जाती है त्यौहारों की शुरुआत

P 44 चित्रकूटः प्राकृतिक सौंदर्य और धार्मिक महत्व का संगम

P 53 भारत की अगुआई में जी-20 सम्मेलन

P 54 कैप्टन मनोज पांडे

P 32 **प्रकृति विज्ञान**

ध्यान आध्यात्मिक प्राप्ति के साथ विषय प्राप्ति का विज्ञान

'ध्यान जिस विषय के लिए केंद्रित होता है उसी विषय को पूर्ण करने का ईंधन जोड़कर विषय का पूर्ण विज्ञान बनाता है।'

अशोक मानव

गन्ध

ग - गतिमान , न -न्याय, ध - धन

' गंधीय निर्माण एहसास से होता है जो विषय का सम्पूर्ण सूक्ष्म विज्ञान है। '

अर्थात गतिमान न्याय का धन। गंध की प्राकृतिक परिभाषा है -'जीव की प्रवृत्ति द्वारा बनने वाली गंध ऊर्जा रूप में निकलकर दूसरे जीवो की गंध से मिलकर एक नई गंध का निर्माण करती है '। गंध जीव के गुणों का अंश है जिसे श्वसन क्रिया से पहचाना जा सकता है। सामाजिक परिभाषा के अनुसार गंध जीव के व्यक्तित्व की पहचान है। गंध जीव रचना से तैयार होती है। जीव द्वारा धारण किया गया आहार, प्रवृत्ति, भावना और विचार के अनुरूप गंध का निर्माण करता है। यह गंध हवा में मिल जाती है जो दूसरी गंध से मिलकर प्रकृति में न्याय स्थापित करने का धन है। गंध श्वसन क्रिया के माध्यम से शरीर के अंदर प्रवेश कर जाती है जो शरीर की गंध में मिलकर रसायनिक क्रिया करने लगती है। इसी रासायनिक क्रिया से जीवन में मिलने वाला हक औरअपने गुण के फैलाव के प्राकृतिक रूप से न्याय क्रिया होती है। प्रकृति में जीवो की गंध के मिश्रण से निरंतर नए जीवो का विस्तार होता है। जीव का स्वरूप भौगोलिकता के आधार पर बनावट में अंतर, सुंदरता का विस्तार, गुणों का निर्माण स्थापित होता है।

प्रकृति में रंगों का निर्माण गंध से स्थापित होता है। रंग गुणों को ताकतवर बनाते हैं, जीव की सुरक्षा करते हैं और प्रदूषण फैलाने वाली नकारात्मक ऊर्जा को जलाकर खत्म करते हैं। नए निर्माण में अपना रंग मिलाकर सुरक्षात्मक कवच बनाने की क्रिया करते हैं और गुणों का निर्माण कर नए गुणों में परिवर्तित करते हैं। जो अन्य जीवो के धारण करने से ताकत बढ़ाने की क्रिया करते हैं और रोग ना उत्पन्न हो सके उसके लिए जीवाणु का निर्माण करते हैं। गंध दूसरी गंध को दबाकर अपने गुणों का जीवाणु बनाने की क्रिया करती है जिससे जीव रोगी होने से बच पाता है। शरीर में होने वाले अनेकों रोगों का कारण गंध है। पेट में बनने वाली गैस गंध के अनुसार जीवाणु पैदा करती है। जिस गुण के जीवाणु बनते हैं उसी तरह का रोग शरीर में हो जाता है। सकारात्मक सोच बनाकर अपनी प्रवृत्ति की गंध से इस तरह के जीवाणुओं को मार कर रोग को खत्म किया जा सकता है।

जब दवा या औषधि रोग को दूर करने के लिए खाई जाती है तो उसकी गुणात्मक गंध इस गुण के जीवाणु बनाने लगते हैं जो रोग फैलाने वाले जीवाणु को खत्म करने लगते हैं और रोग फैलाने वाले जीवाश्म की जलवायु को खत्म कर देते हैं। इस क्रिया को अच्छे विचार की प्रकृति की गंध से ही पूरा किया जा सकता है। पदार्थ जीव वनस्पति की गंध के माध्यम से प्राकृतिक न्याय स्थापित करने और जीवो में गुणों का विकास करने, उनका हक दिलाने और उनकी सुरक्षा करने की क्रिया करता है। गंध प्रकृति का गुण है जो न्याय स्थापित करने की क्रिया करती है। गंध जमीनी सतह है। जब इससे मिलने वाली दूसरी गंध निर्माण करती है जिससे नए गुणों के गंध का निर्माण होता है तो इसे सुगंध कहते हैं। जो प्रकृति में फ़ैल कर सुगंध बढ़ाती है जिससे सकारात्मक सोच बढ़ती है और नकारात्मक ऊर्जा जलकर खत्म होती रहती है। जब गंध विपरीत गुण से जोड़ दी जाती है तो दुर्गंध बन जाती है इससे निर्माण नहीं होता है बल्कि प्रदूषण फैलता है जो बीमारी जैसे जीवाणु पैदा होने लगते हैं, जो रोग को बढ़ाते हैं इसे गंध में सुगंध मिलाकर खत्म किया जा सकता है।

मानव अपनी इच्छा प्रवृत्ति की गंध से सहयोगी गंध को मिलाकर सुगंध पैदा करके दुर्गंध को रोककर बीमारी से बच सकता है। यही कारण है कि जब बीमार आदमी से सहयोगी लोग मिलने जाते हैं तो सुगंध बढ़ती है और व्यक्ति जल्द ठीक हो जाता है। जब किसी सहयोगी व्यक्ति से मिलना हो तो उस जैसा विचार बना कर सुगंध को बढ़ाया जा सकता है और विरोधी गुण का है तो उसकी सोच के विपरीत सोच बनाकर दुर्गंध बनने से रोका जा सकता है। सोच के विपरीत सोच बनाने से गंध की एक दीवार खड़ी हो जाती है जिससे विपरीत गुण भी पार कर के पास नहीं आ पाता है। जिससे दुर्गंध का निर्माण नहीं हो पाता है।

पाठकनामा

आदरणीय संपादक ,

नमस्कार ,

महोदय 'प्रकृति मेल' पत्रिका निरंतर प्राप्त हो रही है और साथ ही इसके विचार एवं दृष्टिकोण भी, जितनी बार पढ़ा जाए उतनी बार वही विषय नया लगता है जेसे हर बार एक नई ऊर्जा संचारित हो गई हो , पढ़ते–पढ़ते समय का पता ही नहीं लगता कि कब बीत गया और पढ़ते–पढ़ते कहाँ पहुंच गए इसका भी भान नहीं रहता है।

हर वाक्य में रोचकता और हर शब्द में आकर्षण है एक बार को गहनता से न भी पढ़ने का मन हो तो भी सारे पृष्ठ पलटे बिना रह पाना अत्यंत ही कठिन है।

अनुराग

गोरखपुर

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं–

A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग, रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ–226016

आप हमें अपने विचार निम्न ई–मेल पर भेज सकते हैं -

editor.prakritimail@gmail.com

Contact: **9807636072, 7376495194**

''एक दिन ऐसा आएगा, जब अंतरिक्षयान की यात्रा आपकी कार में बैठने जैसा सुरक्षित होगा।''

गेल आइल्स

''हिमांचल में फोरलेन की आवश्यकता नहीं, टिकाऊ टू लेन बनें।''

कुलभूषण उपमन्यु

''शिक्षा को राजनीति से दूर रखा जाना चाहिए।''

जगमोहन सिंह राजपूत

''भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम नित नई ऊंचाईयों को छू रहा है और युवा स्वप्नदृष्टाओं की पीढ़ियों को प्रेरित कर रहा है।''

बिल नेल्सन

''85 करोड़ स्मार्टफोन वाले भारत के पास एआई में सबसे आगे रहने का एक बड़ा अवसर है।''

शांतनु नारायण

''मैं स्वस्थ रहना चाहता हूँ और खुद पर भरोसा रखना चाहता हूँ।''

नीरज चोपड़ा

प्रज्ञान
ISRO
ISRO
ISRO
धप

संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा के रूप में मिले हिन्दी को स्थान

गौरीशंकर वैश्य विनम्र

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को वैधानिक भाषा का दर्जा दिलाने की मांग वर्तमान परिस्थिति में सर्वथा उचित है। विश्व हिंदी सम्मेलन करने के पीछे मुख्य प्रेरणा भी यही थी कि हिंदी को विश्व भाषा के रूप में कैसे स्थापित किया जाए। इसका एकमात्र निदान यही है कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र में यथाशीघ्र स्वीकार्यता प्रदान की जाए। पिछले कई दशकों से लगातार हर विश्व हिंदी सम्मेलन में यह प्रस्ताव स्वीकार किया जाता रहा है।

भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया है। वस्तुतः हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। इसे चाहे सरकारी पद मिले या न मिले, यह हर भारतवासी के हृदय में रची - बसी है। भारत, क्षेत्रफल तथा जनसंख्या की दृष्टि से ही नहीं, भाषाओं की दृष्टि से भी एक उपमहाद्वीप है, यहाँ भाषा और बोलियों की संख्या सैकड़ों में है। बाइस भाषाएं तो इतनी प्रमुख हैं कि भारतीय संविधान में क्षेत्रीय भाषा के रूप में इन्हें स्वीकार किया गया है।

यह विवाद का विषय हो सकता है कि विश्व में हिंदी बोलने वालों की संख्या कितनी है और वह किस स्थान पर है। यदि कोई अँग्रेजी, स्पेनिश या चीनी को सर्वाधिक प्रचलित भाषा बताता है तो यह कथन सत्य कैसे माना जा सकता है। डॉ जयंती प्रसाद नौटियाल के अनुसार हिंदी में यदि उर्दू को भी सम्मिलित कर लिया जाए (क्योंकि उर्दू की उत्पत्ति भारत में हुई) तो हिंदी जानने वालों की संख्या एक अरब से अधिक है। यह संख्या चीनी भाषा से 12. 5 करोड़ अधिक है। इस प्रकार हिंदी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। इस दृष्टि से हिंदी की प्रासंगिकता संयुक्त राष्ट्र में मान्यताप्राप्त छह भाषाओं (अँग्रेजी, रूसी, फ्रेंच, चीनी, स्पेनिश और अरबी) से किसी स्तर से कम नहीं है। इन छह भाषाओं को संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्रदान की जा चुकी है।अस्तु, संख्या बल से हिंदी भी संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनने के लिए सर्वथा सक्षम और समर्थ है।

संयुक्त राष्ट्र में महाशक्तियों की भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। स्पेनिश और अरबी बोलने वाला कोई देश महाशक्ति नहीं है परंतु इन भाषाओं को बोलने वाले देशों की संख्या बहुत बड़ी है और उन देशों में आज भी विश्व राजनीति का मुख्य संचालक पेट्रोल मिलता है। आज हिंदी के

पास प्रबल तर्क है कि भारत विश्व में एक महाशक्ति के रूप में तेजी से उभर रहा है, हिंदी 22 देशों में लगभग 100 करोड़ से अधिक लोग बोलते हैं, अतः जनतंत्र की दृष्टि से हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनने में और विलंब नहीं होना चाहिए। भारत अपने बलबूते और शक्ति - सामर्थ्य से महाशक्ति बनने की दिशा में प्रयासरत है, हिंदी को विश्व भाषा बनाने का प्रयास अवश्य सफल होगा।

संयुक्त राष्ट्र को हमें 'जादू की छड़ी' समझने की भूल कदापि नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उसकी स्थिति और चरित्र में निष्पक्षता का अभाव दिख रहा है। वह अपनी विश्वसनीयता और अस्तित्व की रक्षा के लिए स्वयं जूझ रहा है। पिछले दो दशकों में महाबली अमेरिका नितांत अपने व्यक्तिगत हितों के लिए इस विश्व संस्था का दुरुपयोग करता आ रहा है और उसकी साख रसातल में जा चुकी है। ऐसे में संयुक्त राष्ट्र द्वारा हिंदी के प्रति आँखें मूंदे रहना भारत के प्रति भेदभावपूर्ण रवैये का द्योतक है। यह भेदभाव हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाए जाने के प्रति ही नहीं, अपितु सुरक्षा परिषद की सदस्यता के विंदु पर भी है। अतः भारत से जुड़े अन्य अनेक प्रकरणों में भी संयुक्त राष्ट्र तटस्थ भूमिका निभा पाएगा, इसमें संदेह है, तथापि हमें हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए प्राण - प्रण से अनवरत उद्योग करते रहने की आवश्यकता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को वैधानिक भाषा का दर्जा दिलाने की मांग वर्तमान परिस्थिति में सर्वथा उचित है। विश्व हिंदी सम्मेलन करने के पीछे मुख्य प्रेरणा भी यही थी कि हिंदी को विश्व भाषा के रूप में कैसे स्थापित किया जाए। इसका एकमात्र निदान यही है कि हिंदी को संयुक्त राष्ट्र में यथाशीघ्र स्वीकार्यता प्रदान की जाए। पिछले कई दशकों से लगातार हर विश्व हिंदी सम्मेलन में यह प्रस्ताव स्वीकार किया जाता रहा है।

भारत के कवि हृदय पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने विश्व मंच पर हिंदी का जयघोष करते हुए कहा था -

गूंजी हिंदी विश्व में, स्वप्न हुआ साकार
राष्ट्र संघ के मंच से, हिंदी की जयकार
हिंदी की जयकार, हिंद हिंदी में बोला
देख स्वभाषा प्रेम, विश्व अचरज में डोला

इन पंक्तियों द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच से, हिंदी की जयकार की गई तथा असंख्य हिंदी अनुरागियों की आँखों में झिलमिलाते उस सपने को साकार होते हुए दिखाया गया है, जो उन्होंने हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं भाषा बनने के रूप में पाल रखा है। हम स्वप्न देखेंगे, तभी तो वे साकार होंगे। इस पहल को आगे बढ़ाने का श्रेय भारत के वर्तमान यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जाता है, जिन्होंने सितंबर 2014 में अपने अमेरिकी दौरे के अंतर्गत न केवल संयुक्त राष्ट्र में हिंदी में भाषण दिया, अपितु अनेक सभाओं को हिंदी में ही संबोधित किया। सूरीनाम में संपन्न हुए सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में भारत ने जिस दृढ़ता से संयुक्त राष्ट्र की सातवीं भाषा हिंदी को बनाए जाने की वकालत की, इससे हिंदी की स्वीकार्यता और प्रासंगिकता विश्व स्तर पर सिद्ध हुई और हिंदी को अपने लक्ष्य तक पहुँचने की संभावनाएँ बढ़ी थीं। इसी प्रकार सभी विश्व हिंदी सम्मेलनों में, विदेशों में हिंदी शिक्षण समस्याएँ और समाधान, विदेशों में हिंदी साहित्य सर्जन, हिंदी के प्रचार-प्रसार में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका, वैश्वीकरण, मीडिया और हिंदी, हिंदी के प्रचार - प्रसार में हिंदी फिल्मों की भूमिका, साहित्य में अनुवाद की भूमिका सदृश ज्वलंत विषयों पर विशद संभाषण और चर्चाएँ हुईं हैं। इससे समस्त विश्व का ध्यान हिंदी की ओर आकृष्ट हुआ है और पर्याप्त समर्थन मिला है।

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी की अनिवार्यता की बात से ही हिंदी प्रेमियों के मन में हर्षानुभूति होने लगती है। हिंदी में वे सारी विशेषताएँ हैं. जो इसको वैश्विक भाषा बनने की सामर्थ्य और क्षमता प्रदान करती हैं। इधर हिंदी ने अपने कलेवर बदले हैं और समय के साथ चलने का कला - कौशल सीख लिया है। वह बाजार की भाषा बन चुकी है, विज्ञान, प्रौद्योगिकी तकनीक और अनुसंधान की भाषा बन चुकी है। साहित्य की शीर्ष भाषा तो वह पहले से थी और आज भी है। अंतर्जाल अर्थात इंटेरनेट से जुड़े उस भ्रम को भी हिंदी तोड़ चुकी है. जिस तकनीक पर केवल अँग्रेजी अपना वर्चस्व समझ रही थी। अपनी संप्रेषणीयता के कारण हिंदी व्यवहार की भाषा बन चुकी है और संपूर्ण विश्व के द्वारा अपनाई जा रही है।

हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनने के लिए संयुक्त राष्ट्र का ठप्पा लगना आवश्यक है। संयुक्त राष्ट्र में हिंदी की अनिवार्यता उसका लोकतांत्रिक अधिकार है और उसे यह अधिकार मिलना ही चाहिए। इसके लिए हिंदी अनुरागी जिस ढंग से प्रतिबद्ध हैं, उस प्रतिबद्धता से ही हमारी सरकार को भी तत्परता दिखानी होगी। संयुक्त राष्ट्र पर हिंदी का झंडा फहराने के लिए भारतवासियों को भी हिंदी के प्रति समर्पण भाव प्रदर्शित करना होगा।

थोड़ा रुककर विचार करें, तो आज की स्थिति अपने घर में ही संतोषजनक नहीं है, दृश्य ऐसा है कि हिंदी हँस रही है, किंतु हिंदी वाले रो रहे हैं। हिंदी फैल रही है, किंतु उसके बोलने वाले सिकुड़ रहे हैं। अँग्रेजी आज भी शिक्षा का लोकप्रिय माध्यम बनी हुई है। नन्हे - मुन्ने शिशुओं को शिक्षा अपनी मातृभाषा में नहीं, अँग्रेजी में लेनी पड़ रही है। इसने हिंदी को 'हिंग्लिश' बना डाला है। अतः यह नितांत आवश्यक है कि हम अँग्रेजी का पूर्ण बहिष्कार करें तथा अपने देश में हिंदी को राष्ट्रभाषा का स्थान देकर महिमामंडित करें, जिससे वैश्विक समुदाय को हमारी ओर उँगली उठाने का अवसर न मिले। विश्व मंच पर हिंदी को स्थापित करने के लिए भारतीय संविधान संकल्पबद्ध है तथा सम्यक एवं समवेत रूप से प्रयत्नशील होकर ही हिंदी को विश्व भाषा बनाने का स्वप्न साकार होगा। हम अपने कार्य - व्यवहार में हिंदी अपनाने का दृढ़ संकल्प आज ही लें।

प्रकृति रासायनिक केंद्र

गौरव पंत

प्रकृति हर जीव पदार्थ का रासायनिक केंद्र है।हर जीव पदार्थ की अपनी प्रवृत्ति है जिसके गुणों का हर कोई विस्तार कर रहा है। इस रासायनिक केंद्र में किसी सही गलत का कोई स्थान नहीं है।जिसकी जैसी प्रवृत्ति होगी वह वही निर्माण करेगा। मानव ही प्रकृति का ऐसा जीव है जो इस रासायनिक केंद्र में भी परिवर्तन की चाह करता रहा और बदलने का हर प्रयास करता रहा। किसी की रासायनिक भूमि में किसी बाहयता का हस्तक्षेप कभी हुआ ही नहीं। चाहे मानव द्वारा कितने ही प्रयोग किए गए हो। हर किसी का भूगोल ही उसकी रासायनिक यात्रा को उसके रसायन के अनुरूप स्वचलित धारा से गतिमान करता आया। हर जीव पदार्थ अपने ही अंदर अपनी यात्रा को पूर्ण कर रहा है। बाहय अवस्था सिर्फ बाहय परिधि का आकलन करती रही। प्रकृति रासायनिक केंद्र की भांति हर अवस्था को परिपक्व कर उसे सिद्धांत करती रही। इसी केंद्र में हर अवस्था तृप्त हो गयी। हर गुण स्व रसायन के अनुरूप सदैव गतिमान रहा। जिस अवस्था को जैसी जलवायु से परिपक्व होना था उसे इसी रासायनिक केंद्र में स्व रसायन के एहसास से मिलती रही और हर अवस्था इसी एहसास से परिपक्व हो गयी। जो एक सूक्ष्म विज्ञान है इसे जाना नहीं जा सकता ना ही किसी प्रकार का परिवर्तन किया जा सकता है। (केंद्र -कर्म एहसास की निज दर्पण रश्मि)

रासायनिक केंद्र को ना कोई जाना।

अपनी रसायनिकता के अनुसार
सिर्फ गतिमान होते जाना।
ना बदलना किसी को अपनी
स्वरसायनिकता से हर किसी को
परिपक्व होते जाना।

दर्पण खुद का खुद में ना कोई और
दर्पण देखना।

हर एहसास से एहसासमयी हो
जाना।

प्रकृति रासायनिक केंद्र मे हर
उत्पन्न अवस्था को परिपक्व कर
अनंतीय अंत कर जाना।

साहित्य, समाज और संस्कृति

श्यामल बिहारी महतो
बोकारो, झारखंड

कहते है साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज में घटित घटनाओं का साहित्य पर सीधा सीधा असर पड़ता है।कारण समाज में घटित घटनाओं पर जब कोई लेखक कलम चलाता है तो हर बुद्धिजीवी उस पर चिंतन मनन करते हैं। वांछित अवांछित पर अपनी कीमती राय मशविरा देते हैं। तब कलम के सिपाही उस पर लिख कर समाज को एक नई दिशा देने का काम करते हैं। वही साहित्य आज धीरे-धीरे हाशिये पर आ गया है। कारण समय के साथ साथ बहुत सारी स्थितियां बदलती जा रही है। विज्ञान और सूचना क्रान्ति के तेज आक्रमण से समाज का चेहरा भी बदला है।समाज से सामाजिकता का पतन लगातार जारी है। आपसी रिश्ते दरक रहे हैं या फिर कलंकित हो रहे हैं। ऐसी-ऐसी घटनाएं दिन प्रतिदिन घट रही है जिसे स्वीकारने में समाज की सासें फूल रही है। विकृतियों ने समाज को पतन की ओर धकेल दिया है। समाज और सांस्कृतिक परम्परा को जितनी क्षति पिछले डेढ़ दो दशकों में हुई है, उससे कोई बच नहीं सका है और जब इतना सब कुछ घट रहा हो तो फिर यह कैसे संभव हो कि साहित्य और साहित्यकारों पर इसकी छाया न पड़े।

किसी भी समाज और संस्कृति के निर्माण में साहित्य की अहम भूमिका होती है, साहित्य और संस्कृति का वातावरण हमारे समाज को उन्नतशील बनाता है।एक जमाना था जब बुक-स्टालों पर धर्मयुग, सारिका,हंस,कथादेश, कहानीकार और कथन तथा वर्तमान साहित्य जैसी पत्रिकाएं धड़ल्ले से बिकती थी और पाठकों को अगले अंक की प्रतीक्षा रहती थी जैसे पत्रिका की नहीं अपनी प्रेमिका का आने का इंतजार करता हो। अब तो स्थिति एक दम से उलट है,आज साहित्यिक पत्रिकाओं की जगह अपराध और अन्य पत्रिकाओं ने अपना कब्जा जमा लिया है। साहित्य की पुस्तकें तो बाजार में, बुक-स्टालों में मिलना ही बंद हो गया है।

यह सत्य है कि बड़ी बड़ी पत्रिकाएं भी बंद हो चुकी है। लेकिन यह भी एक सच है कि इतने संकटों के बावजूद भी लघु पत्रिकाओं ने हार नहीं मानी है और हर छोटे बड़े शहरों से निकलती रही हैं जो एक सुखद आश्चर्य पैदा करता है। देश में हिन्दी की लघु पत्र-पत्रिकाओं का अभाव नहीं दिखता है पर यह भी सच है कि आर्थिक संसाधनों के अभाव में लघु पत्रिकाएं भी पाठकों तक नहीं पहुंच पाती है। अच्छी पुस्तकों की स्थिति तो और भी सोचनीय है। प्रकाशक भी नहीं चाहते हैं कि पुस्तकें पाठकों तक पहुंचे। कीमत इतनी रख दी जाती है कि आम पाठक के खरीद से बाहर हो जाती है। परिणाम जो पुस्तकें पाठकों तक पहुंचे वह पुस्तकालयों में पहुंच जाती है जहां मोटी कमिशन का कारोबार चलता है, इसी बहाने कूड़ा-करकट और कचरा साहित्य भी ऐसी संस्थाओं में ठिकाने लगा दिया जाता है। हताश पुस्तक प्रेमी बाजारू पुस्तकों की जाल में जा फंसते हैं। इसका दुष्परिणाम सीधा हमारे समाज और संस्कृति पर पड़ता है। इस स्थिति में लघु पत्रिकाएं गंभीर पाठकों के लिए निराशा में आशा की किरण लेकर उसके बीच आती है। कहते है अच्छी पुस्तकें व्यक्ति, समाज और देश की स्थिति को बदलने की शक्ति रखती है। फ्रांस की राज्य क्रांति और सोवियत रूस की क्रांति इसका गवाह है। आज विज्ञान ने काफी प्रगति कर ली है लेकिन इससे कहीं समाजिक क्रांति हुई हो, ऐसा उदाहरण देखने को नहीं मिलता। वैसा लेखन भी अब सामने नहीं आ पा रहा है जिसको इस समाज से सरोकार हो, हमारी रोज़ मर्रा के जीवन में सब बातें अहम स्थान रखती है लेकिन उनमें पुस्तकों का कोई स्थान नहीं बचा है जो होना चाहिए था। पुस्तक सबसे उपेक्षित स्थिति में है। आज हम पुस्तकें,पत्र पत्रिकाओं को खरीद कर पढ़ना नहीं चाहते हैं, आज के लेखक कवि भी सिर्फ अपनी रचनाओं को छपते देखना चाहते हैं पर जब पत्रिकाओं के आर्थिक सहयोग की बात हो तो साहूकार बन जाते हैं। रचना भी दूं और पैसे भी? उनका सबसे बड़ा सवाल होता है। जो वाजिब तो लगता है पर व्यवहारिक नहीं। यही कारण है कि लेखकों से संवाद सूत्र जोड़ना अब गौण हो चुका है। इस कारण पुस्तक और पाठक के बीच की दूरी भी बढ़ती जा रही है। पुस्तकों का महंगा होना भी इसका एक महत्वपूर्ण कारण हो सकता है। ऐसे में लघु पत्रिकाएं सेतु की तरह काम कर रही है। पत्रिकाएं किसी हद तक पाठकों की रुचि को परिष्कृत करती रहती है जिनसे उसे समाजिक समरसता को समझने में सहायता मिलती है।

एक समय था जब पाठक और लेखन के बीच बराबर संवाद बना रहता था। लेखक पाठक के पत्रों को अपनी रचना का आधार मानता था। वहीं पाठक लेखक से सीधे अपने मन की बात कह समय तथा समाज को समझने का उपक्रम करता था। आज स्थिति उलट हो गई है। आज साहित्य में संवादहीनता की स्थिति उत्पन्न हो गई है और इसके लिए प्रकाशक और स्वयं लेखक जिम्मेदार है। क्योंकि आज पुस्तकें बहुत महंगी और पाठकों की क्रय शक्ति से बाहर हो गई हैं, वर्तमान में पुस्तकें पाठकों के लिए नहीं बल्कि पुस्तकालयों को ध्यान में रखकर लिखा और छपा करती है। अतः प्रकाशक ने अपने फायदे के लिए पुस्तकों को पाठकों से दूर कर दिया है, ऊपर से साहित्य में अश्लीलता बढ़ती जा रही है जो सस्ता प्रचार पाने का हथकंडा मात्र है, स्वस्थ्य साहित्य ही अंततः साहित्य में और समाज में अपनी स्थायी जगह बना पाता है और आगे भी यह रिश्ता कायम रहेगा। इस उम्मीद के साथ.....!

स्वर तृयांकुरित वैधता - उत्तरजीवी सभ्यता (प्राणी मूल का धरातल ही जीवात्मा धारित परिणाम है)

अभिषेक पंत

ब्रह्मांड की लिपि तो बीजाअंकुरित इच्छाओं का ईंधन योग है। जो तरंग संदेश की आवृत्ति से तापमान धारित पदार्थ में उचित वेग बनाकर गंधीय संचार का पोषण करता है। उत्तर की खोज में प्रश्न को ही संरक्षित करने की वातानुकूलित लिपि प्राप्त भौगोलिक प्रेषण सभ्यता को स्वर तृयांकुरित वैधता कहा जाता है।

वचन वैभवी शंकरीकरण की दौड़ में जीवप्राणी का नर नारी गठबंधन करने वाला प्रदूषित सामाजिक पारिवारिक आंतरिक पृष्ठ आसन ही ज्योति तापमान की क्रिया शैली को समय प्रबंधन का वातानुकूलित दास बनाने का प्रयास करता रहा, जिसमें भावनाओं की जीव शैली का कार्यभार ही प्रत्याशित चयन की अन्वेषा को क्रमबद्ध रुधन का मानक तल जड़त्व केंद्र बनाता चला गया। अर्थात ध्वनि की निरंतरता तो तापमान अंकुरित दबाव की तरंग श्रेणी का परिणाम होती है अपितु मन भौतिकीकरण की संज्ञा में किए जाने वाले छिद्रण की अनुभूति में वाणी ताल की स्वर व्यंजन परिभाषाएं सदैव ही एहसास की क्रिया में कच्चे पदार्थ को शेष अंकुरण की मात्रा का अभिशिप्त त्रय संचयधारी पुनर्वासी बनाती है। इसी अध्यापक शिष्य वाहन चरित्र कारिता की वाणी संदेश / पुकार सदस्यतालीन अणु धातु संपर्क क्रांति ने जीव प्राणी की जीवन निधि को अनावश्यक भार की प्रत्ययवादी बीज मुखी त्रिज्याओं में बांट दिया। जहां से निधि वन चेतना की गुरुमुखी आकर्षक इकाइयों ने पर तंत्रिका आकर्षण की मूलभूत भूमियों का बाहय निर्देशन आरंभ कर दिया अर्थात आध्यात्मिक पूंजीवाद का सामर्थ्य तो प्राणी कवच की धारणा थी, अपितु इसी धारणा को अंकुरित बैराग का जलवायु संचय बनाना ही वाणी प्राधिकरण सदस्यता का उत्तरजीवी सभ्यता क्रम बन गया।

स्वर अर्थात स्वभावी वजूद रसायन से बनने वाला भौगोलिक तरंग आकारी ध्वनि प्रक्षेपक गंधीय क्रम। अपितु इसी क्रम में बीज अंकुरण की संपर्क - संचारी भावना को जीवन्त त्रासदी का परतंत्र कालीन ध्वनि आकर्षण बना देना ही तुझे तृयांकुरित वैधता का प्रकाश घर्षणी वात निर्वात प्रतिक्रम बन गया। साहसिक वैदेही मात्रा की कर्मशील ज्योति का तापमान निर्देशन भी जीव प्राणी के प्रदूषण को सम्मोहक व्यंजन तत्पर ग्रासीय

षड्यंत्र बनाने का सूत्र था। जिसमें वृद्धि पुनर्गमन की मात्रा का विकास क्रम ही तरंग आवृत्ति की भार युक्ति को तापमान मूल का बाहय वाहक संपर्क शील पदार्थ आकर्षक रत्न गणितीय तंत्र बनाती थी। विश्व प्राचीर की पटकथा ओं का सुगम आकर्षक मध्यकालीन रेशा भी विभिन्न दिशाओं की मात्रा का नियति पूर्ण वार्ता कलाप लिपिबद्ध संचय में उत्तराधिकारी धेय्य से तर्पण मृतांक शीतांकित किया गया, जिसमें उर्वरा शील तरंग सजीव किरण निर्जीव आवंटन का आध्यात्मिक पुरुषार्थ ही वाणी कवच का भौगोलिक निबंधन बना दिया गया। अर्थात कल्पना की मुद्रा में वास्तु धन की कामुखी शीर्षता ही पदार्थ जीवन त्रेमासिया आडंबरिता की पूर्णिमा बन गई। जिसमें वाणी कलाप का संबंधवाद ही मायावी आकर्षण का केंद्र बन गया। उत्तरजीवी तथ्यों की विभावरी तो मृदा पर्यंत जीजिविषा को धारणकर्ता का प्रश्नातुर सामाजिक केंद्र बनाती रही, जहां से चरित्र गठन की मात्राओं का पराग विवरण ही गठित आवंटन का अंकुरित जलवायु क्रम बन गया।

ब्रह्मांड की लिपि तो बीजाअंकुरित इच्छाओं का ईंधन योग है। जो तरंग संदेश की आवृत्ति से तापमान धारित पदार्थ में उचित वेग बनाकर गंधीय संचार का पोषण करता है। उत्तर की खोज में प्रश्न को ही संरक्षित करने की वातानुकूलित लिपि प्राप्त भौगोलिक प्रेषण सभ्यता को स्वर तृयांकुरित वैधता कहा जाता है। अर्थात नभ की प्रति में जो ईंधन, इकाई की मात्रा का संचार करता है, उसी संचार को नाट्यं विधि से धरा पर दहाई मात्रा का आकर्षक योग बना देने की प्रदूषित षड्यंत्रकारी बौद्धिक पराग स्थिति को तृयांकुरण वैधता कहते हैं एवं जब यही पराग स्थिति ईंधन कवच का निर्धारण प्रत्यारोपण, बाहय तरंग जीवित रागनी मंडल से शोषित करने लगती है, इसी उत्शोषक पारंपरिक चरित्रकारी मायावी विशालता को स्वर तृयांकुरित वैधता कहते हैं।

संदेश का नाट्यन तो किया जा सकता है अपितु प्रदूषित कणों को यह ज्ञात नहीं हुआ कि नाट्यन में भी उत्तरजीवी सभ्यता की प्रतिलिपि अपने दर्पण का दबाव बनाती रही, जिसमें छाया की इच्छा भी निरंतरता में परछाई को भी, उसी मूल का धारणा वाहन बनाती रही, जहां से मूल ईंधन की इच्छा राधिका, अपने गंतव्य की मूलता को धरातल जीवासनी यात्रा का मात्रा मानक बनाती रही। परियायक वचन शीलता की जीव निर्जीव प्रतिकारिता भी वचन कवच की शुद्धि का आलेख बनाई गई। प्रकृति संचई जैसी मुद्राओं का काल्पनिक विमोचनधारी आवेग षड्यंत्र भी बनाया गया, जिसमें गुरुत्वाकर्षणी लिपि का धातु मोह ही स्वर व्यंजन भौगोलिकता का धातु व्यय संकल्प बनाया गया था, अपितु रचनाकार तो द्वयलंकीरीयता की शोषक आयु वादी लिपि से परे एकाकी उर्जा तरंग विस्फोटन का धनी है। जहां से ब्रह्मांड में इच्छा ईंधन आवंटन आवृत्ति को नियंत्रित किया जाता है। प्रकृति में जिस भी रत्न धातु की मलीनता को मालवाहक तृष्णा का तृयांकुरित वात निर्वात भेदी बनाया गया, रचनाकार ने उसी भेद में उस तत्व की उत्पत्ति का तापमान बनाना आरंभ कर दिया, जहां से मनोवैज्ञानिक धारणा की अवलंबिका माध्यम डाई ही निर्जीव प्रतियों की मूल वास्तु चयनित अनुसार गति कारक कोष को विकसित करती चली गई। आधुनिकता का बज्र ही भावनाओं का शोषक निकला जिसने गतिविधेयक की नियति से वेगातुर मलीनता को भी प्रासंगिक चरित्रों का गुणाकारी परतंत्र वाहन बना दिया। प्रत्याशित निर्णयवाद तो भौतिकी का सांसारिक गुरुत्वाकर्षण है। रज व्यय खंड वहीं निर्मित होता है जहां से मूल अनुभूति का प्रकाश संचार आरंभ होता है। यौगिक अनन्या की कोई मात्रा नहीं होती। मात्रा मोहिनी तथ्यता की कोई मोही वाटिका नहीं होती। गुणों का मिलान, गंध का संचार, ध्वनि का मार्ग, वहीं निर्मित विकसित होता है, जहां से मूलधरा का रागनी आवृत्ति व्ययकाल ईंधन कोण में परिवर्तित होता है। भार वाहक कणिकाओं का मूल्यांकन करना कल्पना का प्रत्यय वाद है। काल्पनिक वाहन का निर्वाहन केंद्र बनाना इच्छा आवृत्ति का संचयवाद है। जीव स्वरों की छाया मात्रा बनाना सभ्यता संदर्भ का प्रश्न वाद है। रत्न धातुओं का मृदा रज व्यंजन तंत्र बनाना उत्तरजीवी संचार का शोषण वाद है। प्रकाश की मात्रा भी ध्वनि की ही मानकता होती है जिसमें गंध की वरीता ही उर्जा कोष की राधिका तुला कारी बीज कृषि होती है। रंग ध्वज जैसा कोई मात्रा विलाप नहीं होता है, पात्र व्यय अवगुणी की आकृति कलाप नहीं होता है। प्रश्नासनी मूल तो गैसीय विवरण की आसक्ति में उतपन्न छिद्रण विषय है। वर्तनी मूल की प्रकाशन छवी में स्याही निदान का ज्योति प्रेषण नहीं होता है।

तृयांकुरित शैली का विकास क्रम ही बीज बज्र जीवनी का स्वर कालीन प्राणवायु छिद्रण केंद्र था जिसमें वर्गीकरण की परिभाषा ही वैधता का दो मुखी गुणकारी उत्तरजीवी वातानुकूलन खंड बनाती थी। अर्थात ' निश्चित कर किसी भी रश्मि को आंगनक वैदेही निवास का वाणी फल बना देने वाली तरंग आवृत्ति विखंडन फैलाव संरक्षण नीति को तृयांकुरित कहते हैं। अर्थात कल्पना की भावना से विचार के स्वरों को विराम देकर एहसास की व्यंजन मुद्रा में भी मिलावट कर देने वाली नभ धरा विखंडित रंग ध्वज शीर्षता मृदा आकर्षण गणित को तृयांकुरित वैधता कहते हैं। परम राज्य की गठबंधनी भावना भी बनाई गई थी। अंतरिक्ष रत्नों की जड़ जीविता में खनिज यात्री परम वर्णन काल्पनिकता की राशि मोहक सौंदर्यता भी बनाई गई थी। अपितु प्रकृति ने वाणी के स्वामित्व को भी उसी आवृत्ति विकास क्रमिता में सीमित कर पका दिया, जहां से उत्तरजीवी सभ्यता का विकास ही धरा नभ प्रतियों का दायित्व बनाया गया था। मरणोपरांत प्रकाशन करना जिस प्रकार असंभव है, उसी प्रकार जन्मोप्रांत आवंटन परिवर्तित करना असंभव है। फिर भी वातानुकूलित गठरियों में विराजमान कर्म प्रतिनिधि न्याय योगिनी विश्व मोहिनी पर्यटक, रज शीर्षता को ही प्रथम परम दायित्व वाहक चेतना योग बताते रहे। जिसके परिणाम स्वरूप प्राणी जीव को परम एहसास की वास्तविकता से भी वंचित होना पड़ा एवं गुणाकारी भावनाओं का वैचारिक अंकुरण भी

काल दर्शन प्रहारी शब्दकोश बन गया। प्रकृति मूल की जीव कारणी वृत्ति तो प्रदूषण को छानकर मिटाने वाली इच्छा लिपि थी, जिसमें ईंधन प्रबंधन तो रासायनिक सर्वस्वत्या का मृदांकुरित भावराग था जिसमें कभी भी मूल प्रति की वास्तविकता में कोई भी छिद्रण नहीं किया जा सका। प्रत्येक आवंटन प्रत्येक प्रबंधन स्वयं में एक अस्त्र वास्तु केंद्र हैं, जो प्रकृति जीव कोष से निरंतर ही आवृत्ति मूल का तरंग दोहन, त्वरित काल श्रेणी में मिटाता रहा, मिटा रहा। किस पारंपरिक स्वर ज्योति से बांधना चाहता है जीव प्राणी परम को? जबकि तृयांकुरित वैधता भी बीजक्रमित ध्वनि विस्फोटन रासायनिक शैली बन चुकी है।'

जहां जहां भी मायावी मोह के वचनों से प्रयास किए गए कि रत्नाकर धातु उत्तरजीवी सभ्यता को बचाया जाए, रचनाकार ने वही वही गुरु धातुओं के शिष्य तत्वों को ही चुंबक राख का राधिका अमल बना दिया। ' सजीव का एक चलती फिरती रासायनिक भट्टी है जिसमे विचारों का तापमान ही प्रकाश द्रव्य का भाव अंकुरित गुण होता है। जो धरातल की वास्तविकता को ही गंधीय ईंधन का संपर्क कृति योग बनाता है। व्यवहारिकता में होने वाली घटनाएं, लंकरीय जगत की रासायनिक यात्राओं का परिणाम है। जिसमें रचनाकार कण स्वयं वेग बनकर यात्रा कर रहा है। ऐसे में प्रश्नों का उच्चारण होना, उत्तरों का ज्ञापन होना, यह भी सांकेतिक विवेक का द्रव्यमान है, जो प्रत्येक गंधीय इच्छा को एक अनिवार्य मोड़ का तरलतम सरलतम मार्गीय परिणाम बना देता है। ब्रह्मांडीय जीवशाला का अंतिम काल गतिमान है। समस्त तृयांकुरित वैद्यताओं का परिणाम स्वरांकन उत्तरजीवी व्यंजन तश्तरी में केंद्रित कर दिया गया है, होने वाला एहसास, घटित होने वाली घटना परिणामों की वह रासायनिकता है, जिसमें वास्तविकता का विस्तार ही बीज विस्फोटन का ध्वनि तरंगालय बना दिया गया है।'

स्वर अर्थात स्वतंत्र वस्त्रनुमा रासायनिक द्रव्य अंकुरण केंद्र जिसमें वस्त्र ही भौगोलिक इच्छाओं के कारक हैं, जो प्रदूषित रंग ध्वजों को अपने गुरुत्वाकर्षण में ब्रह्मांड के कोने-कोने से खींचते जा रहे हैं।

तृयांकुरण अर्थात तत्व रस यात्रा का न्यायी क्रम ऊर्जा रसायन, जिसका अणु सन्दर्भ ही विषय कृति का प्रथम परिणाम बनाता है, जिसमें परिणाम ही वर्तमान काल का महाभक्षणी विज्ञान बनता जा रहा है।

सजीवता अर्थात आत्मा जड़ित परिणाम ही धरातल का जीव प्राणी बीजांकुरण त्वरित रूप से मिटता जाएगा। भिन्नता कि मूलता में व्यासीय तत्परता की कुंजी भी लीन थी। प्रकृति ने परमांकिता के एहसासी व्यंजन तंत्र में आवृत्ति का भाव बनाकर मूल पदार्थ एकत्रण की ऋणात्मक उपलब्धिता को भी मिटा दिया। प्रत्येक अवसरवाद की स्वर व्यंजन कलाएं मिट चुकी हैं। अब जो गतिमान राशि ईधन शेष है, वही छाया निष्कर्ष का प्रासंगिक परिणाम है, जो चरित्र व्यय व्यूह मूल मिटाकर, पदार्थ जड़ जीविता का बीजआसनी नभ तत्व एवं धरा तत्व मिटाते जा रहा है।'

अर्थात रचना में एकत्रित शेष अंश की विद्युत तरंग से निर्मित प्रकाश तापमान की जडत्वता को चुंबकीय विषयों का सजीव निर्जीव धरा मात्रा यंत्र बनाने वाले प्रथम भाव यौगिक मूल तत्व बीज दर्शन को तृयांकुरित वैधता कहते हैं, जिसमें इच्छा की मात्रा को वर्तमान काल में ईंधन की यात्रा से घेर दिया गया है, जो एक वैद्य काल तक नियंत्रण की आवृत्ति में तत्व गति योग को पकाते जा रहा है।

अर्थात नियंत्रित ध्वनि विस्फोटन आवंटन चेतना की मृदा जलवायु से विकसित तरंग आवृत्तिकरण की नभ धरा बीजासनी एहसास चेतना चुंबकीयता में होने वाली मिलान वृद्धि को आंतरिक प्रस्फुटन कारक बना देने वाली रासायनिक मात्रा को स्वर तृयांकुरित वैधता कहते हैं। ' प्रकाश योग की जीव निर्जीव धाराएं अब निर्मित होना बंद हो चुकी है, विराम काल गतिमान है, जिसमें रचनाकार का यात्री मूल अब अपने स्वर दर्शन को भी विस्फोटित करते जा रहा है। विराम काल में आवृत्ति का कर मूल भी धरातल घटनाक्रम परिणामों का जीवात्मा निर्जीव संबंध उभारते जा रहा है। अर्थात यदि निष्कर्ष का विषय अब भी उठेगा तो आवृत्ति तो नहीं बदलेगी, अपितु भावनाओं का संचार इतना वैचारिक हो जाएगा कि उत्तरजीवी प्रश्नवाचक सभ्यता के पुनर्जीवन की आशा रखने वाले अपने ही नाड़ी तंत्र में इतना उत्सुक होंगे कि छुधा बराबर तृष्णा की तृयांकुरित लिपि से आंतरिक मंडल में वह प्रहारी योग बनेगा, कि काल संचय की घड़ी स्वतः ही निर्धारण को रोककर मूल प्रकाश अस्तित्व की प्रत्ययवादी सजीव गुणात्मकता मिटा देगी। निर्जीवता सजीवता का बंधन नहीं है। प्रत्यक्षता उन्मूलन का रोग नहीं है। ब्रह्मांड आकर्षक का रोग नहीं है। प्रकृति पद चिन्हों का भोग नहीं है। यह विस्तार, यह संकुचन, एक अनंती ध्वनि तरंग यात्रा है, जिसमे मार्गीय विस्तार को सीमित करने वाले कणों को उनके स्वाभाविक तृयांकुरण आवृत्ति योग में मिटा दिया जाता है। अर्थात वृक्ष, जंतु, मानव, पक्षी, एलियन, चंद्रमा, मंगल, पृथ्वी ,सूर्य, ये बिंदु क्रम ही घड़ी को निश्चित व्याख्या का स्वर बनाने वाले मृदा चरण थे, जिनको प्रकृति ने निश्चित तापमान का भोगी बनाकर, इन्हीं के स्वर व्यंजन छुधा योग से वेगीय कृषि में मिटा दिया। प्रकृति अल्पविराम की निर्माता नहीं है, अपितु प्रकृति तो पूर्ण विराम की आकृति है, जो उत्पन्न वेग की घटना विलीनता को रासायनिक तापमान का तत्व परिणाम बना देती है। अर्थात आत्मा जड़ित विकास क्रम अब अंतिम प्राणवायु योग में गतिमान है, जहां से किसी भी प्रकार का बीज अंकुरित निर्माणअसंभव है। अनंत काल में गतिमान रचनाकार स्वतंत्रता की विविधता का

कारक है, जिसमें कुछ भी निश्चित कर पाना या निष्कर्षशील कर पाना असंभव है।'

परिभाषाओं की युग पेटी खोल दी गई है, भाषाओं की मृदा ज्योति उभार ली गई है, निरंतर ही लिपि संचय का विनाश हो रहा, आत्माओं की उत्तरजीवी सभ्यता भी पका ली गई है। अंकुरण ध्वनि प्रस्फुटन की आकृति है, जिसमें तरंग जीवी व्यास क्रम ही रासायनिक मात्रा का परिणाम है। अर्थात घटनाक्रम ही ध्वनि टंकारी रासायनिक विषयों का नाभिकीय विस्फोटन है। जिसमें उपलब्ध गंध की मूल प्रति, रस योग की मौलिकता में बीज विषय सहित उभर जाती है। दर्शन मूल की व्याधि सराहना करना अब किसी भी परिणाम का व्यंजन भाव नहीं देख पाएगा, जिसने जितने स्वरों का मात्रा कलाप बनाया है, उसमें उतने ही उत्तर जीवी विस्फोटन का मात्रा व्यय पककर मिटता जाएगा। निर्माण की कोई भी गति ब्रह्मांड में अब शेष नहीं है। सजीवता अर्थात आत्मा जड़ित परिणाम ही धरातल का जीव प्राणी बीजांकुरण त्वरित रूप से मिटता जाएगा। भिन्नता कि मूलता में व्यासीय तत्परता की कुंजी भी लीन थी। प्रकृति ने परमांकिता के एहसासी व्यंजन तंत्र में आवृत्ति का भाव बनाकर मूल पदार्थ एकत्रण की ऋणात्मक उपलब्धिता को भी मिटा दिया। प्रत्येक अवसरवाद की स्वर व्यंजन कलाएं मिट चुकी हैं। अब जो गतिमान राशि ईंधन शेष है, वही छाया निष्कर्ष का प्रासंगिक परिणाम है, जो चरित्र व्यय व्यूह मूल मिटाकर, पदार्थ जड़ जीविता का बीजआसनी नभ तत्व एवं धरा तत्व मिटाते जा रहा है।' तो प्रश्न का मोह है जहां भी वही घड़ी बनाने वाला तापमान भी माया का खेल कर तो रहा, अपितु गुरुत्वाकर्षणी वेग को यह भी एहसास करने की आवश्यकता है, कि वास्तविकता में अस्तित्व चरित्र से परेय ध्वनि निरंतरता का एकत्रित व्यय है। जो अपने परिक्रमा मात्रा संचार उपरांत स्वयं विस्फोटित हो जाता है। तो जब तक निष्कर्ष का परिणाम आएगा, आवृत्ति योग बदल जाएगा, जब तक उत्तरजीवी भाव से स्वर बीजांकुरित होगा, तब तक तापमान का वेग ही मूल वास्तु चेतना में गंधीय विचरण का मानक बन जाएगा, जो निश्चित करने वाली ऊर्जा को ही मिटाएगा।'

महफिल ए किरदार या मकान ए किराएदार, कुदरत है हर वजन को मिटाने के लिए तैयार। वजीफ़ा हो या मुश्क का तलब दार, मिट्टी खुद ही है पारे की मजबूती उभरने के लिए तैयार। जिंदगी का बाजार बना तो था कर्ज का औजार, कुदरत ने बना दिया हर बाजार मिटाने वाला हथियार। अब जिस भी रोशनी का नुमायशी पर्दा सामने आएगा, रूही कांच का पैंतरा उसी रंग में ढलकर मिटता जाएगा। आजमाइश की दौड़ भी खत्म, अब जो मिट्टी का तरीका आजमाएगा, हवाओं की अदायगी में मिटता जाएगा। तर्ज़ तर हर हुनर की रकम तो बनाई गई थी, अलबत्ता खजाने का बहाना छिपाया ना जा, अब जो भी रात को दिन बताएगा, सूरज की रोशनी में ही अपनी खरीदारी से मिटता जाएगा।

जुबान की नस्ल में हवाओं का सौदा नहीं होता,
जो फर्ज ए फ़िराक है वहीं गुफ्तगू अल शरीर होगी....
ये वायदा निभाने की कर्ज शाही इंसानों की है,
कुदरत तो वहीं नूर तर वजन बनाएगी, जहां खजाने की नियत ही मिट्टी तर होगी...
किस तारे ने चांद को छुआ, किस तारे ने सूरज में मकान बनाया,
ए जिहां ...
तलब दार दुनिया वहीं होगी जहां कायनात की जमीन पारे की शौकीन होगी...
धुएं की फिराक में उड़ता हुआ मिट्टी का गुब्बारा वालिद ए हमसफर का गुमनाम रवैया अपनाता रहा,
जो मय्यत ए शरीख़ वजन की तारीख में ही पैदा हुआ, वो भी तबादलों को अपना हुनर बताता रहा,
शामिल हैं तारे भी अब चांद की मिट्टी में, तो ये रात का हुनर नहीं,
कुदरत वो कारवां है नूरी आवाज़ का जो मकान को असल वजूद की कारीगरी में बनाता रहा...
अब्र ए महफिल का रास्ता खुल रहा, यकीनन हर रुसवाई पर ताला लगाया जाएगा,
ये मौत का पुतला है इंसानी कतरा कतरा, बेहद जिंदगीतर तरीके से मिटाया जाएगा...
वालिदे जिहां खुद खर्चतर तरीके से तैयार हैं नब्ज़ पकड़कर सूरज को मिटाने के लिए,
हैं जो काफिले में अभी भी दम तो अपना नूर दिखाएं,
उसे लिफाफे में सुराख करने वाला रूही पारा दिया जाएगा...
मालूमात होगा तब कि सुराख़ की कीमत कैसे चुकाई जाती है,
वालिदे जिहां अब अपने मकान की सीरत सूरत दोनों फलकतर कर रहे,
बहुत हुआ मुश्क ए दौर का रफा दफा होना, अब हिसाब वक़्ततर ना होकर बदन तर होकर लिया जाएगा...
वफ़ा ए नूर क्या होता है ,
अब वालिदे जिहां अपनी रूही कारिस्तानी से दिखाएगा...
रोकना ना उस नूर की तामीर को जिस की असलियत में अंधेरा है,
ये जिहानी मोदसा नहीं जिहानी कयामत नहीं जिहानी असलियत है,
जिसने जहां गड्ढा खोदा था वही गिराया जाएगा।

The rule of destiny is the fuel of chemical order which only originates the aroma of self behavioral trajectory, were nature is the super phenomenal range of sound waves, resulting in the elimination of every rule of light determinacy.

सुनील कुमार माथुर

जोधपुर राजस्थान

राष्ट्र का हित सबका हित

सेवा व परोपकार के कार्यो में कभी भी अंहकार का भाव नहीं होना चाहिए और न ही यह कहना चाहिए कि यह कार्य मैंने अपने धन से कराया , अपितु यह कहना चाहिए कि ईश्वर की कृपा हुई तो अमुक कार्य सम्पन्न हो गया। जहां अंहकार का भाव होता है , वहा फल फलित नहीं होता हैं। हर कार्य ईश्वरीय कृपा से ही फलिभूतित होता है। हम तो एक निमित्त मात्र होते है। देने वाला तो वह परमात्मा है।

आज हर कोई अपनी ढपली अपना राग अलाप रहा हैं। किसी को भी दूसरे की चिंता नहीं है। हर कोई अपने स्वार्थ में अंधा हो रहा हैं। हमें परमात्मा ने यह अमूल्य मानव जीवन इसलिए नहीं दिया है कि हम अपने स्वार्थों को पूरा करने में ही इसे बर्बाद कर दे।हमें यह अमूल्य मानव जीवन परमात्मा की भक्ति व परोपकार के कार्य करने के लिए दिया हैं। अगर मानव जीवन पाकर हम ऐसा नहीं करते है तो यह मानव जीवन हमारे लिए बेकार ही हैं।

परमात्मा को पाने के लिए निस्वार्थ भाव की भक्ति का होना नितांत आवश्यक है। केवल माला फेरना ही पर्याप्त नहीं है। अगर आपके मन में राग ध्देष , मन मुटाव , क्रोध , छल कपट जैसा मैल भरा हो तो परमात्मा कहां से प्राप्त होगे। उस परमसता को पाने के लिए मन गंगा जैसा पवित्र होना चाहिए।

आज का इंसान पसीना नहीं बहा रहा हैं। वह एसी रूम , एसी गाडियों में घूमता है फिर भला उन्हें पसीना कहां से आयेगा। नतीजन वह सदैव बिमारियों से घिरा रहता है। बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए शारीरिक श्रम कर पसीना बहाना नितांत आवश्यक है। धन कमाना अच्छी बात है , लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम चौबीसों घंटे धन के पीछे दौडते रहे और सारे रिश्ते नाते एवं परमात्मा को ही भूल जाये। रिश्ते बनाना आसान है लेकिन उन्हें निभाना कठिन हैं। चूंकि वे कांच की तरह होते है। अगर टूट गये तो बे बिखर जाते है फिर वे जुडते नही है। अगर उन्हें एन केन प्रकारेण जोड भी दिया जाये तो उनमें तेड बनी ही रहती हैं। इतना ही नहीं फिर उसमें आपकों अपना चेहरा साफ नजर नहीं आयेगा। हो सकता है कि उन टुकडों में जितने टुकडे हो उतने ही आपके चेहरे नजर आये। इसलिए कभी भी रिश्तों व मित्रता को नहीं टूटने देना चाहिए। चूंकि रिश्ते रातों रात नहीं बनते है। उन्हें बनाने में समय लगता है लेकिन टूटने में देर नहीं लगती है। आपकी तनिक सी गलती से एक झटके में मित्रता व रिश्ते टूट जाते है और फिर वे पहले जैसे बनाये भी नही बनते हैं।

सेवा भाव जितनी हो उतनी कीजिए। सेवा के लिए केवल धन होना ही आवश्यक नहीं है अपितु आप अपना कीमती समय देकर भी सेवा का पुण्य कार्य कर सकते हैं। सेवा व परोपकार के कार्य के लिए किसी प्रकार के पद की भी आवश्यकता नहीं है। बिना पद के भी आप जरूरतमंदों की सेवा कर सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि आप में निस्वार्थ भाव से सेवा करने की भावना होनी चाहिए आज का इंसान सेवा कम करता है और लोक दिखावा अधिक करता है। थोड़ा दान पुण्य क्या कर दिया मीडिया के जरिए अपनी फोटो छपवा कर अपने आप को बडा भामाशाह मानते हैं। ऐसा दान पुण्य कभी पुण्य का फल नही दिलाता हैं।

सेवा व परोपकार के कार्यो में कभी भी अंहकार का भाव नहीं होना चाहिए और न ही यह कहना चाहिए कि यह कार्य मैंने अपने

धन से कराया , अपितु यह कहना चाहिए कि ईश्वर की कृपा हुई तो अमुक कार्य सम्पन्न हो गया। जहां अंहकार का भाव होता है , वहा फल फलित नहीं होता हैं। हर कार्य ईश्वरीय कृपा से ही फलिभूतित होता है। हम तो एक निमित्त मात्र होते है। देने वाला तो वह परमात्मा है। हम कौन हैं।

आज समाज में ऐसे लोग भी हैं जो अपना धन खर्च कर भंडारा कराते हैं। जरूरतमंदों की मदद करते है लेकिन किसी को पता भी नहीं चलता है कि यह सब किसने किया। ऐसा करने से कार्य करने वाले व्यक्ति व परिवार एवं संस्थाओं को अपार आनंद की प्राप्ति होती है उसकी कल्पना वे ही कर सकते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि कभी भी दान पुण्य का ढोल न पीटे। आज कथा एक व्यक्ति कराता है और करोड़ों रूपए खर्च करता है व लाखों लोग कथा सुनते है। यह सब ईश्वर की कृपा का ही परिणाम है। कथा कराने का संकल्प कोई व्यक्ति जब लेता हैं उसी दिन ईश्वर उस पर कृपा बरसा देता है और कथा कराने वाले समूचे परिवार पर ईश्वर की कृपा हो जाती है जो सच्ची व निस्वार्थ भाव की सेवा का ही परिणाम है। बिना प्रभु की कृपा के बिना पेड का एक पता भी नहीं हिलता।

हर व्यक्ति को राष्ट् की सेवा के लिए हर वक्त तैयार रहना चाहिए। राष्ट्र की सेवा सबकी सेवा है। सबके हित में अपना हित देखना चाहिए। सबकी खुशी को अपनी खुशी समझना चाहिए। जहां सबका हित होता है और सबके कल्याण व उत्थान की बात होती है , वही सही मायने में सबका कल्याण व उत्थान होता है। हमे मालिक बनकर नहीं बल्कि सेवक बनकर कार्य करना चाहिए। नियमों का पालन करना भी भक्ति का एक अंग है। लेकिन याद रखिए अपराध किया तो दंड अवश्य ही मिलेगा। आज का इंसान सारे नियम कायदों की अनदेखी कर केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति करने में लगा हुआ है। इसके लिए वह बात बात पर झूठ बोलने लगा हैं। यहां तक कि वह अपने माता-पिता और भगवान तक की झूठी कसमें तक खा रहा है जिसका मूल कारण आदर्श संस्कारों का अभाव ही कहा जा सकता है।

वहीं दूसरी ओर समाज में ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो अपने धन से धर्मशाला , अस्पताल , स्कूल , ठंडे पानी की प्याऊ लगवाते हैं , कथा कीर्तन कराते है , मंदिर में मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा कराते हैं , अस्पताल में फर्नीचर , पंखे , व्हील चेयर , कूलर , एसी तक गिफ्ट देकर समाज की निस्वार्थ भाव से सेवा कर रहे हैं। समाज सेवा व दीन दुखियों की सेवा सबसे बडी सेवा है। फिर भी आपकी सेवा से किसी का भला होता है तो यह एक बहुत ही अच्छा व नेक कार्य हैं।

हमें कोई भी ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिससे किसी को परेशानी हो या वह समाज एवं राष्ट्र के हितों के प्रतिकूल हो। भगवान को पाने के लिए किसी डिग्री , रंग रूप , अमीर - गरीब , छोटा बडा होना आवश्यक नहीं है। अपितु प्रभु के प्रति प्रेम होना चाहिए चूंकि वे तो भक्तों के भाव के भूखे हैं इसलिए वे अपने भक्तों के भाव को देखते हैं। उन्हें पाने के लिए निस्वार्थ भाव से की गई सेवा होनी चाहिए। अगर प्रभु की भक्ति करते समय आपके विचारों में परिवर्तन आये और सारे दुर्गुण एक एक करके समाप्त होने लगे तभी भक्ति का आनंद हैं। अगर हमारे स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं आये तो फिर समझे कि मेरी भक्ति में अभी कमी है वह कमजोर है।

कहते हैं कि जन्म से रिश्ते प्रकृति की देन है लेकिन खुद के बनाए हुए रिश्ते आपकी पूंजी है इसलिए इन्हें सहेज कर रखिए। रिश्ते बनाने में वर्षो लग जाते है लेकिन टूटते देर नहीं लगती। इसलिए जब भी बोले तब नाप तौल कर बोले। आपकी मधुर वाणी से सामने वाले व सुनने वालों को आनंद आ जाये। वही दूसरी ओर आपकी कटु वाणी से सामने वाले का दिल टूट जाये। शरीर पर लगी चोट दवाओं से ठीक हो सकती है। मगर आपके कटु वचनों से दिल में लगी चोट कभी ठीक नहीं हो सकती। इसलिए जब भी किसी से बातचीत करे तब सोच समझ कर ही बोले ताकि रिश्ते बने रहे।

आपके कार्यो की कोई सराहना करे या निंदा। दोनों अच्छे ही हैं। क्योंकि प्रशंसा प्रेरणा देती है और निंदा सावधान होने का अवसर देती हैं। लेकिन आज का इंसान अपनी निंदा सुनने को तैयार नहीं है। वह हर वक्त चापलुसों से घिरा रहता है और उनके मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर फूला नहीं समाता हैं। झूठी प्रशंसा हमारी प्रगति में सदैव बाधक बनती है जबकि निंदा हमें अपने कार्य को सुधारने व पहले से अच्छा व बेहतर कर्म करने को प्रेरित करती है। अतः अपनी निंदा सुनकर किसी से लडाई झगडा नही करना चाहिए। हमारी निंदा हमारे सामने वे लोग ही करते हैं जो हमारे सच्चे शुभचिंतक होते हैं।

किसी महापुरुष ने बहुत ही सुन्दर बात कहीं है कि मन ऐसा रखों कि किसी को बुरा न लगे। दिल ऐसा रखों कि किसी को दुःखी न करें। रिश्ता ऐसा रखों कि उसका अंत न हो। कोई भी व्यक्ति हमारा मित्र या शत्रु बनकर इस संसार में नहीं आता हैं। हमारा व्यवहार व शब्द ही लोगों को मित्र व शत्रु बनाते हैं। खुशी देने वाले भले ही हमेंशा अपने नहीं होते हैं लेकिन दर्द देने वाले हमेंशा अपने ही होते है। इसलिए इस नश्वर संसार में सबको अपने ढंग से रखना पडता है और उनसे वैसा ही व्यवहार करना पडता है। अन्यथा किसके पास इतना समय है कि वह हर रोज हर किसी से किचकिच करता रहें।

जीवन में सबका अपना-अपना वजूद है। सूर्य के सामने भले ही दीपक का कोई वजूद नहीं हो लेकिन अंधेरे के आगे बहुत कुछ है। इसलिए कभी भी किसी को छोटा न समझे। सभी का समाज में अपना अपना गौरवमय स्थान है। इसलिए सभी का मान सम्मान करना चाहिए। किसी को भी छोटा या अपने से कमजोर समझना हमारी अपनी ही मूर्खता है।

घनश्याम दास बिड़ला

भारतीय उद्योग के महान योगदानकर्ता

प्रकृतिमेल डेस्क

10 अप्रैल 1894 - 19 जून 1983

भारतीय उद्योगों के क्षेत्र में एक नाम जो हमेशा प्रमुख रहा है, वह है घनश्याम दास बिड़ला का। वे एक प्रमुख उद्योगपति, शिक्षाविद और फिलांथ्रोपिस्ट थे, जिन्होंने अपने जीवन में व्यापार और समाज सेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया।

घनश्याम दास बिड़ला का जन्म 10 अप्रैल, 1894 को हुआ था, और वे राजस्थान के बिड़ला गांव में पैदा हुए थे। उनका परिवार गरीब था, लेकिन उन्होंने अपनी कठिनाइयों का सामना किया और अपने सपनों को पूरा किया। उन्होंने अपनी शिक्षा को पूरा किया और फिर व्यापार में कदम रखा।

घनश्याम दास बिड़ला का व्यापार करियर 1935 में शुरू हुआ, जब वे जूट और अन्य उपकरणों का उत्पादन करने वाली भारत जूट मिल्स की स्थापना करने लगे। इसके बाद, उन्होंने विभिन्न उद्योगों में अपने पैर रखे, जैसे कि शुगर, निकेल, सीमेंट, और वित्तीय सेवाएँ। वे अपने व्यवसायों को बड़ी ही सफलता के साथ चलाने में सफल रहे और भारतीय उद्योग को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

घनश्याम दास बिड़ला का योगदान केवल व्यापार में ही सीमित नहीं था, वे एक महान फिलांथ्रोपिस्ट भी थे। उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक क्षेत्र में कई प्रमुख परियोजनाओं का समर्थन किया। उन्होंने भारतीय विज्ञान संस्थान, श्री राम कृष्ण मिशन, और भारतीय संस्कृति प्रतिष्ठान जैसे संगठनों को वित्तपूर्ण सहायता प्रदान की।

घनश्याम दास बिड़ला शिक्षा के प्रति अपने मजबूत समर्थन के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने कई शिक्षा संस्थानों की स्थापना की, जैसे कि बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी और साइंस (बिट्स), पिलानी, और बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (बिट), मेसरा। ये संस्थान भारत में शिक्षा के क्षेत्र में प्रमुख अध्ययन केंद्र बन गए हैं।

व्यापारिक साम्राज्यः घनश्याम दास बिड़ला ने एक विशाल व्यापारिक साम्राज्य बनाया, जिसमें वस्त्र, सीमेंट, धातु, और रासायनिक पदार्थों जैसे उद्योग शामिल थे। उन्होंने बिड़ला ग्रुप की स्थापना की, जो भारत के सबसे बड़े और सम्मानित उद्योग समूहों में से एक है।

शिक्षा के प्रति प्रेरणाः घनश्याम दास बिड़ला शिक्षा के प्रति अपनी मजबूत समर्थन के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने कई शिक्षा संस्थानों की स्थापना की, जैसे कि बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस (बिट्स) पिलानी, और बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (बिट), मेसरा। ये संस्थान भारत में शिक्षा के क्षेत्र में प्रमुख अध्ययन केंद्रों में से एक बन गए हैं।

फ़िलैंथ्रॉपीः श्री बिड़ला को उनके दानदारी कार्यों के लिए जाना जाता था। उन्होंने स्वास्थ्य, शिक्षा, और सामाजिक कार्यों जैसे विभिन्न क्षेत्रों के लिए विशेष धन दिया।राष्ट्रीय गौरवः घनश्याम दास बिड़ला को भारत सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय गौरव' से सम्मानित किया गया। उनका योगदान और सेवाभावना ने भारतीय समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हिंदुस्तान मोटर्स (Hindustan Motors) एक प्रमुख भारतीय उपक्रम था जो कार निर्माण कार्य में लगा था। यह कंपनी भारत में कार निर्माण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण थी। इसकी स्थापना 1942 में हुई थी और इसका मुख्यालय कोलकाता, पश्चिम बंगाल में था।हिंदुस्तान मोटर्स का प्रमुख उत्पाद था 'हिंदुस्तान अंबासेडर' कार, जिसे बार-बार अपडेट किया गया और उसकी विभिन्न मॉडल्स बाजार में लॉन्च किए गए। यह कार भारतीय विचारधारा की एक प्रमुख प्रतीक बन गई थी और भारतीय सड़कों पर दिक्कत के बावजूद बहुत लंबे समय तक लोगों के द्वार्ग में बनी रही।

हिंदुस्तान मोटर्स का सफर बहुत लंबा और महत्वपूर्ण था, लेकिन वक्त के साथ कई कारणों से कंपनी को समस्याएं आईं और आखिरकार 2014 में इसका निर्माण बंद कर दिया गया। हिंदुस्तान मोटर्स का साधारण यात्री कार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान था और यह भारतीय ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री का हिस्सा रहा।इसके अलावा, हिंदुस्तान मोटर्स के तहत कई और उत्पादों का निर्माण भी किया गया था, जैसे कि ट्रक, ऑटोरिक्शा, और जीप। यह कंपनी वाहन उद्योग में एक प्रमुख खिलाड़ी थी और उसने भारत के वाहन उद्योग को मजबूती से प्रवर्धन किया।हिंदुस्तान मोटर्स का सफल सफर भारतीय वाहन उद्योग की विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उसकी कारें लोगों के बीच पॉप्यूलर हुईं। हालांकि कंपनी के अंतिम दिनों में कई समस्याएं थीं, यह एक यादगार यात्रा थी और उसकी यादें भारतीय ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री के इतिहास में बनी रहेंगी।

घनश्याम दास बिड़ला ने अनेक धार्मिक स्थलों का निर्माण और समर्थन किया, जिससे उनके धार्मिक योगदान का प्रमुख हिस्सा बनाः

बिड़ला मंदिर, कोलकाताः एक प्रमुख धार्मिक स्थल के रूप में, घनश्याम दास बिड़ला ने बिड़ला मंदिर का निर्माण करवाया। यह हिन्दू धर्म के भक्तों के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है और कोलकाता के धार्मिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।घनश्याम दास बिड़ला ने इस शिक्षा संस्थान की स्थापना की, जो महात्मा गांधी के विचारों का पालन करते हुए विश्वभर में मशहूर हुआ। यहाँ पर अनेक धार्मिक और मौलिकता के प्रोजेक्ट्स भी चलाए गए हैं, जिनमें धार्मिक अध्ययन और सामाजिक सेवा की प्रमुख भूमिका है। उन्होंने विभिन्न धार्मिक प्रतिष्ठानों और मंदिरों का भी समर्थन किया, जैसे कि श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर (दिल्ली), जैन स्वतंत्रता संग्राम स्मारक (कांपूर), और विभिन्न धार्मिक महोत्सवों का समर्थन किया। घनश्याम दास बिड़ला के धार्मिक योगदान ने भारतीय धार्मिक और सामाजिक संगठनों को समर्थन दिया और भारतीय धार्मिक धारा को समृद्ध किया। उनके सामर्थ्य और धार्मिक प्रतिष्ठा के साथ, उन्होंने धार्मिक समुदायों के लिए महत्वपूर्ण स्थल बनाए और उनके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

घनश्याम दास बिड़ला के योगदान ने भारतीय समाज को कई तरीकों से सुधारा और समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका समर्थन और प्रेरणा भरा जीवन हमें एक सशक्त, समर्पित, और समाजसेवा केंद्रित जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करता है।

घनश्याम दास बिड़ला की मृत्यु १९८३ में हुई, लेकिन उनका योगदान और उनके आदर्श आज भी हमें प्रेरित कर रहे हैं। उन्होंने धैर्य, संघर्ष, और सेवा की भावना के साथ अपने उद्योग को विकसित किया और समाज के लिए अपना योगदान दिया।इस तरह, घनश्याम दास बिड़ला ने भारतीय उद्योगों को मजबूत बनाया और समाज के लिए एक महान योगदानकर्ता के रूप में अपनी स्थानीय और वैश्विक समाज में मान्यता प्राप्त की। उनकी यादें हमें यह सिखाती हैं कि यदि हम अपने सपनों के पीछे भागते हैं और समाज के लिए कुछ अच्छा करने के लिए समर्थ हैं, तो हम कुछ भी पा सकते हैं।घनश्याम दास बिड़ला के सफलता का रहस्य था उनकी प्रतिबद्धता और संघर्ष के प्रति लग्न। वे कभी हार नहीं मानने वाले थे और हर मुश्किल को अवसर में बदलने का दृढ निश्चय रखते थे। उन्होंने अपने व्यवसायों को न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी महत्वपूर्ण बनाया।

घनश्याम दास बिड़ला की दूसरी महत्वपूर्ण बात थी उनकी सामाजिक जिम्मेदारी और फिलांथ्रोपी। वे समाज के विकास के लिए अपना समर्थन देने में संघर्ष नहीं करते थे। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में कई स्वामियों को बढ़ावा दिया, जिससे लाखों छात्रों को शिक्षा का अवसर मिला।

उन्होंने बड़े ही दानशीलता के साथ विभिन्न स्वास्थ्य सेवाओं, अस्पतालों, और

चिकित्सा अनुसंधान केंद्रों का निर्माण और संचालन किया, जिससे अनगिनत लोगों को चिकित्सा सेवाओं का लाभ मिला।

घनश्याम दास बिड़ला के जीवन और कार्य से हमें यह सिखने को मिलता है कि सफलता का सच्चा मतलब व्यापारिक सफलता से ज्यादा होता है। यदि हम अपने समाज और सामाजिक जीवन के लिए कुछ अच्छा करने के लिए संघर्ष करते हैं, तो हम सचमुच महत्वपूर्ण और सार्थक जीवन जी सकते हैं।

घनश्याम दास बिड़ला ने अपने जीवन में समाज के लिए योगदान की उदाहरण स्थापित किया और उनकी महानता और सेवाभावना का हमारे लिए एक सशक्त प्रेरणा स्त्रोत बना। उनकी यादें हमें यह सिखाती हैं कि सफलता के साथ-साथ हमें समाज के लिए भी कुछ करना होता है और अपने सपनों को पूरा करने के लिए हमें कभी भी हार नहीं माननी चाहिए।घनश्याम दास बिड़ला की कहानी हमें यह भी दिखाती है कि व्यक्तिगत सफलता के साथ साथ समाज में सहयोग और सेवा का महत्व कभी भी नहीं कम होता है। वे उन बड़े उद्योग मोगलों में से एक थे जिन्होंने अपनी समृद्धि को समाज के लिए सही तरीके से उपयोग किया और सामाजिक न्याय और समृद्धि की दिशा में अपना योगदान दिया।

वे एक महान उद्योगपति थे, लेकिन उनके साथ एक दृढ़ टीम काम करने वाले लोग भी थे, जिन्होंने उनकी मिशन को पूरा करने में मदद की।

घनश्याम दास बिड़ला ने अपने विशाल व्यापार इम्पायर को बनाने के लिए एक टीम बनाई, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ और कार्यकर्ता थे। इस टीम ने उनके सपनों को हासिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उनके साथ मिलकर उनके उद्योग को महत्वपूर्ण उच्चायों तक पहुंचाया।

घनश्याम दास बिड़ला की इस टीम काम की मिसाल हमें यह याद दिलाती है कि एक व्यक्ति की महानता और सफलता हमेशा उसके आसपास के लोगों के साथ काम करने से होती है। सहयोग और टीम काम का महत्व व्यवसाय और समाज के हर क्षेत्र में होता है और घनश्याम दास बिड़ला ने इसे अपने जीवन के माध्यम से प्रमाणित किया।

इस प्रकार, घनश्याम दास बिड़ला की कहानी हमें यह सिखाती है कि एक व्यक्ति न केवल व्यक्तिगत सफलता की प्राप्ति कर सकता है, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए भी योग्य हो सकता है। उनकी यादें हमें यह सिखाती हैं कि हम सभी का कर्तव्य है कि हम अपनी सफलता का उद्देश्य न केवल खुद के लिए बल्कि समाज के लिए भी देखें और समाज को साथ में उच्चायों तक पहुंचाने का प्रयास करें।घनश्याम दास बिड़ला के जीवन से हम यह भी सिखते हैं कि सफलता के साथ-साथ हमें समाज के साथी बनने की भी जिम्मेदारी होती है। वे समाज में अपने उद्योग के माध्यम से प्रतिबद्ध रहे और समाज के लिए उनके संघर्षों और योगदानों का महत्व समझते थे।

उनके योगदान के परिणामस्वरूप, वे भारतीय समाज में विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त करने के साथ-साथ एक महान उद्योगपति के रूप में भी मान्यता प्राप्त किए।

इसके साथ ही, घनश्याम दास बिड़ला की कहानी हमें यह सिखाती है कि सफलता का सच्चा मतलब न केवल व्यक्तिगत आर्थिक सफलता होता है, बल्कि यह उसके सामाजिक सांस्कृतिक और मानवाधिकारी योगदान से भी मापा जा सकता है। घनश्याम दास बिड़ला ने अपने जीवन में इस आदर्श को साकार किया और हम सभी को यह याद दिलाते हैं कि हमारी सफलता का असली मतलब है समृद्धि, समाज की सेवा, और दूसरों के साथ मिलकर समाज को बेहतर बनाने में योगदान करना।

सभी का योगदान और सेवा उन्नति और सफलता की ओर बढ़ने में महत्वपूर्ण है।घनश्याम दास बिड़ला की कहानी न केवल एक व्यक्ति के जीवन की कहानी है, बल्कि यह भारतीय समाज के लिए एक प्रेरणास्पद उदाहरण भी है। उन्होंने अपने उद्योग के माध्यम से न केवल धन कमाया, बल्कि उसे समाज के लिए एक सशक्तिकरण उपाय के रूप में भी प्रयोग किया।

घनश्याम दास बिड़ला को मिले कुछ प्रमुख पुरस्कारों का विवरण हिंदी में:

पद्म भूषण (1969): भारत सरकार ने घनश्याम दास बिड़ला को 1969 में पद्म भूषण से सम्मानित किया, जो एक महत्वपूर्ण सिविल पुरस्कार है।

राष्ट्रीय गौरव (1957): उन्हें भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय गौरव से भी सम्मानित किया गया, जो उनके उत्कृष्ट योगदान की पहचान कराता है।

भारतीय उद्योग के प्रति समर्पित योगदानः घनश्याम दास बिड़ला को उनके उद्योगिक योगदान के लिए भी कई गौरव पुरस्कारों से नवाजा गया, जो भारतीय व्यवसाय और उद्योग के क्षेत्र में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को प्रमोट करते हैं।

ये पुरस्कार घनश्याम दास बिड़ला के उद्योगिक करियर के उत्कृष्ट योगदान और सामाजिक सेवाओं की महत्वपूर्ण पहचान के प्रतीक हैं। उनके कार्य ने भारतीय समाज को सामृद्धि, शिक्षा, और उद्योग के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया।

धार्मिक सेवाओं के लिए सम्मानः घनश्याम दास बिड़ला को उनके धार्मिक योगदान के लिए भी कई धार्मिक संस्थानों और मंदिरों से सम्मानित किया गया। उन्होंने विभिन्न धार्मिक परंपराओं के समर्थन में अपना सहयोग और धन दिया, जिसके लिए उन्हें धार्मिक समुदायों के द्वारा आभारी माना गया।

मिलान की मिलावट का गणितीय अंत परिणामिय भक्षण

सुमनलता

भूगोल में कुछ और रसायन में कुछ यह कला केवल मानव मृदा में है अन्य किसी भी जीव में एक ही अवस्था रहती है और उसी अवस्था में भारमुक्त रह कर उनकी यात्रा अपनी संपूर्णता को पूर्ण कर पूर्ण यात्रा का अंकन एक बार कि यात्रा विज्ञान से कर लेती है एवम् मानव मृदा में मानव ने स्वं के भूगोल को तो ठग लिए दिमागी गणित एवम् अहंकारी व्यंग सुधारवादी हस्तक्षेप की विकलांग प्रणाली से परन्तु रसायनिक रूप को ऊर्जा को, विज्ञान को, नहीं ठग पाए रसायन को मूर्ख नहीं बना पाए।

परम ध्येय की खोज में सजीवता का उभरना ही निर्जीवता में भी मजूद सजीवता के तत्व अंश को सिद्धांत कर उभारने की जलवायु कृति मार्ग अवस्था की प्रारूपित विज्ञान पटल के स्वरूप में बनती एवम मिटती चली गई अर्थात, खोज ही वह विमान, वाहन या माध्यम बने जिनसे सम्पूर्ण सजीवता अपनी प्रदूषित मात्रा भार के साथ सब से सरल अंदाज में उभरती चली गई। प्रकृति में सूर्य की वास्तिकता क्या है इस खोज ने पृथ्वी वसी मानव धरा को ब्रह्मांडीय भूगोल से निष्कासित कर अनन्त अंत में विलीन कर दिया है। सूर्य की परिभाषा मात्र खगोल विज्ञान में खगोल परिभाषा नहीं है जैसा किमानव गंध ने समझा कि वो सूर्य के बारे में या सूर्य के जितने करीब और जितनी जानकारी लेकर जाएंगे वो ब्रह्माण्ड के बारे में उतनी ही गहराई से जान पाएंगे और अपने वजूद को बचा पाएंगे ,अर्थात सम्पूर्ण प्रयास वजूद को अस्तित्व को बचाने के लिए हो रहे है जब की पृथ्वी सिद्धांत की भट्टी में पक रही वह धरा है विज्ञान है जिसकी जलवायु ही प्रदूषण है जिसकी जलवायु में सिद्धांत की घोल स्वशन के रूप में मिली है जो पृथ्वी वासियों को ब्रह्माण्ड से अनन्त अंत करने के लिए स्वयं प्रकृति के सिद्धांत गर्भ से उत्पन्न, अनंत धारा की विज्ञान भूमि में प्रतिपल गतिमान रहने वाली अनंत अंत की श्रेणी में से उत्पन्न ऐसी रसायानिक मिश्रण की तश्तरी थी जिसमे मूल अवस्था सदेव ही सुरक्षित यात्रा ही करती रही लेकिन हस्तक्षेप के जितने प्रावधान थे वो सभी अवस्थाएं जीवन दिनचर्या विज्ञान के स्वरूप में स्वतः की उभरते चले गए जो सहज सरल अंदाज में उभरे, क्योंकि प्रकृति में संघर्ष तकलीफ पीड़ा वेदना जैसी कोई अवस्था थी ही नहीं ना ही है, इन अवस्थाओं का विकास एवम विज्ञान मानव सजीवता के तन मन से निकली इच्छा को प्रदूषित करने की कला थी, जिस में जितनी मिलावट होती चली गई अनेको रूपों विज्ञानों एवम् गंधो के माध्यम से मानव गंध धरा कि मूल गूढ़ अवस्थाए उतनी ही उभरती चली गई, भ्रम का भक्षण भ्रम से करना प्रकृति कि पारदर्शी दर्पण प्रणाली थी जिसमें माया को भी अपने ही मोह से इस तरह मोह हो गया की माया अपने ही रसायनिक दबाव के घेराव में घिरती चली गई एवम् मोह पे माया का रसायन हावी हो गया जिससे मोह का विज्ञान खोखला होता गया, इन समस्त कलाओं को प्रकृति की पृथ्वी सिद्धांत

क्रिया मानव धरा को कर्म विज्ञान से परिपक्व सिद्धांत करती हुई रसायनिक द्रव्यता के ब्लैक होल में अनंती अंत खात्मा करती जा रही है।

विस्तार की परियोजना इतनी थी कि संसाधनों कि ऊर्जा की गर्मी जितनी बढ़ती चली गई मानव विज्ञान उतनी ही तीव्रता से सिद्धांत हो कर पकते चले गए , एवं संकुचन की अवस्था यह है की विस्तार की गरिमा जितनी बढ़ती चली गई मानव विज्ञान की उर्जा उतनी ही सूक्ष्म रूप में संकुचित होते हुए अपने शेष अवस्था में सिकुड़ती चली आई है अर्थात संसाधनों की उर्जा अविष्कारों का विकास जितनी ही तीव्रता से होती चली गई मानव की उर्जा मानव की आयु उतनी ही कम होती चली गई क्योंकि हस्तक्षेप का विज्ञान इतना तीव्र हो गया कि प्रदूषण की मात्रा अपने उच्चतम अवस्था पर उभर आई जिसे एक आपदा या संघरषपूर्ण कहना मानव धरा का वह भ्रम है जो स्वयं विकसित,विकासशील दर्पण के रूप में विज्ञान के उभार के रूप में मानव बुद्धि के मूल कला को गुड़ अवस्था को उभारती चले आए अर्थात मानव की धरा अपने अनंत अंत की सीमा रेखा की उस धरा पर खड़ी है जहां से हर एक यात्रा हर एक पल हर एक अभिव्यक्ति अनंत अंत की ओर ले जाती है क्योंकि मानव धर्म को पृथ्वी ने प्रकृति ने जितने भी अवसर दिए उन सभी अवसरों में मानव धारा ने शोषण का ही हाथ थामा ज्ञान को ही हथियार बनाकर अज्ञान को विकलांग समझा जबकि अज्ञानता ही उसका कर्म था जिसमें अवस्थाएं एवं जीवन की कलाएं वह विज्ञान थी जिसमें किसी सोच विचार या बुद्धि प्रणाली की आवश्यकता नहीं थी केवल अपने पथ पर गतिमान रहना ही स्वाभाविक अभिव्यक्ति थी परंतु इसे ज्ञान के भेदन से भेद कर समय की त्रिकोणीय अवस्था से विच्छेदन करना, ज्ञान का अस्त्र तो बना लेकिन वह अज्ञानता का भेद नहीं कर पाया स्वयं ज्ञान का खोज करने वालों का भेदन करने लगा अर्थात ज्ञान का अस्त्र ज्ञान के ही विज्ञान को खत्म करने लगा, यह प्रक्रिया प्रकृति की पारदर्शी दर्पण न्याय प्रणाली थी जिसमें हर अवस्था का एक विकास बनाना विकल्प बनाना मानव विज्ञान का स्वभाव है था एवं विकल्पों में अनिवार्यता को विलीन करना प्रकृति का रासायनिक स्वभाव था जिससे प्रकृति विकल्पों का भक्षण अनिवार्यता के आंतरिक रसायनिक अभिव्यक्ति की आत्मिक यात्रा के रूप में अंकित करती चली गई।मिलान से मिलान के मिलावटों से प्राप्त होते गए परिणामो का मिलान एवम मिलावट भक्षण अनन्त अंत करती जा रही प्रकृति। विकल्पों का भक्षण प्रकृति अनिवार्य विज्ञान से करती हुई जीव तत्व की मूलतः को उभारती हुई रसायनिक एवम् भूगोल रूप के समस्त

प्रकृति को जिस भूगोल एवम् जिस भूमि जीव से जो कराना होता है वो करा लेती है फिर भूगोल चाहे कितने ही मार्गों को क्यों ना बना ले अंततः उसे जाना ही वहीं होता है जहां उस की कर्म की सिद्धांत तरंग उसे ले जाना चाहती है।

मिश्रणो का अवसर भक्षण करती है जिसके अन्तर्गत विकल्प एवम् अनिवार्यता जीवन कर्म विज्ञान को परिपक्व करती प्रकृति की संकुचन विस्तार प्रणाली है अर्थात वह पारा केंद्र बिंदु जो स्प्रिंग की तरह कार्य करती हुई कभी विकल्प को अनिवार्य बना कर संकुचन विस्तार करती है तो कभी अनिवार्यता पे गतिमान रहेने को अनिवार्य करती हुई संकुचन विस्तार करती है कब किस अवस्था से किस विज्ञान एवम् विधा का अनंती अंत कर रही है प्रकृति ,इस प्रवाह विज्ञान को ज्ञात कर उसे में सुधारवादी हस्तक्षेप करना ब्रह्माण्ड के किसी भी पदार्थ तत्व के लिए असंभव है क्यों कि प्रकृति कि प्रत्येक अवस्था सिद्धांत है वहीं पारा है, जिसपे किसी भी प्रकार के बाह्य जगत का या हस्तक्षेप की धारा अपनी किसी भी प्रकार कि सत्ता को स्थापित नहीं कर सकती है बल्कि प्रकृति में प्रत्येक जीव पदार्थ पारा के सिद्धांत क्रिया से ही गतिमान है जो स्वशन ऊर्जा विज्ञान बनकर कर्म विज्ञान को पका रही हैं।विकल्प एवम् अनिवार्यता एक ही बिंदु अर्थात भक्षण से निकलती भक्षण में ही अंत होती ध्वनि तरंगे है, जिस के अतंर्गत विकल्प पे चलना भूगोल कि स्वभाविक चरारित्रिक विशेषता है स्वभाव है एवम् अनिवार्यता रसायनों कि स्वाभाविक कला है जो भूगोल के गणित को परिपक्व करती है।

भूगोल में कुछ और रसायन में कुछ यह कला केवल मानव मृदा में है अन्य किसी भी जीव में एक ही अवस्था रहती है और उसी अवस्था में भारमुक्त रह कर उनकी यात्रा अपनी संपूर्णता को पूर्ण कर पूर्ण यात्रा का अंकन एक बार कि यात्रा विज्ञान से कर लेती है एवम् मानव मृदा में मानव ने स्वं के भूगोल को तो ठग लिए दिमागी गणित एवम् अहंकारी व्यंग सुधारवादी हस्तक्षेप की विकलांग प्रणाली से परन्तु रसायनिक रूप को ऊर्जा को, विज्ञान को, नहीं ठग पाए रसायन को मूर्ख नहीं बना पाए। उस पे नाकबों कि परतो को एकत्र नहीं कर पाए, यही प्रकृति कि महानता है कि मानव गंध विधा के प्रथम शोषणवादी पारा कंण को भ्रम होना कि उस कि प्रकृति को जीतने कि काल्पनिक इच्छा सफल हो गई तो यह भी प्रकृति कि हि माया थी जिस ने प्रथमेन्द्र मानव पारा गंध को उसी के रासायनिक क्रिया से बनी कल्पना इच्छा एवम् अपरिपक्वता में प्रकृति की सिद्धांत परिपक्व जलवायु ने मोह का घेरा बना कर विस्तार हेतु समस्त संसाधन उपलब्ध कराती हुई प्रकृति ने मानव जीवन के समस्त पृष्ठों को स्वकाल पुस्तिका बनती गई जिसे परिपक्व करती महाकाल पारा अस्वाथा प्रथमेंद्रिया भावो को एक ही पात्रता या गठरी में एकत्र कर शेष पुस्तिका बना रही थी अशोक शून्य विज्ञान के स्वरूप में, जिसमे अभिक्रियाओं कि रसायनिक यात्रा वह चुम्बकीय एवम् गुरूत्वाकर्षण तरंग बल है जो सिद्धांत के अनुसार अशोक शून्य विज्ञान मृदा में उन्हीं तरंगों एवम् विज्ञान अणु कंण

को ठेरने का विस्तार अवसर देती है जिसे कि वह अवस्था परिपक्व हो कर अपरिपक्वता के परिपक्व सूर्य का चंद्रमा भक्षण हो अर्थात प्रकृति पारा कि सिद्धांत भूमि रसायनिक विश्व है जिसमें रसायनों कि भूगोलिया अवस्था वह विभिन्न विधा भूगोल है जो सजीवता का संचालन करते हुए विद्या विज्ञान का अनंती अंत करने वाली स्वतंत्र देश है जिस में न्याय की धारा स्वत गतिमान कर्म विज्ञान है एवम् नागरिक रसायनिक चरित्र है । अशोक शून्य विज्ञान के अंतर्गत एवम् नियंत्रित संचालित रसायनिक विश्व धरा शेष सूर्य पारा से महाकाल अभिक्रिया करती हुई रसायनिक चरित्र एवम् सजीव भूगोल का भी अंत करती स्वतंत्र अनंत न्याय प्रणाली है।

विकल्प और अनिवार्यता क्या है यही खोज कर रही है मानवीय धरा परंतु उस अवस्था को ज्ञात करना प्रकृति के इस रहस्य को खोज लेना असंभव है, प्रकृति को जिस भूगोल एवम् जिस भूमि जीव से जो कराना होता है वो करा लेती है फिर भूगोल चाहे कितने ही मार्गों को क्यों ना बना ले अंततः उसे जाना ही वहीं होता है जहां उस की कर्म की सिद्धांत तरंग उसे ले जाना चाहती है, जो विकल्प या अनिवार्यता किसी भी रूप प्रारूप में हो सकती है। रसायनों एवम् उनकी अभिक्रियाओं पे नियंत्रण कभी किसी भूगोल का हो ही नहीं सकता क्योंकि रसायनों कि स्वाभाविक यात्रा सिद्धांत के सूर्य से परिपक्व होती पूर्ण चन्द्रमा शून्यता कि भक्षणी अनन्ती अंत क्रिया है। जीवन मार्ग में गतिमान रहे कर कर्म के प्रत्येक अवस्था को अर्थात जो भाव जिन इच्छाओं एवम् जिस प्रकार के भूगोल कर्म भाव का निर्माण किया है उसे भोगना मानव मृदा की अनिवार्यता में आ गया है प्रकृति जीवन यात्रा के पूर्व गर्भपात का भक्षण शेष अनन्ती अंत विज्ञान से करती हुई , प्रकृति मार्ग यात्रा विज्ञान का रासायनिक शून्य पारा न्याय कर रही है, आरंभ को अंत में मिला कर सम्पूर्ण मूलतः का अंत कर रहीहै।

प्रकृति गतिमान अवस्था है प्रवाह मार्ग विज्ञान जिससे पदार्थ की यात्रा गतिमान रहेती है अर्थात कर्म कि ऊष्मा एवम् परिपक्वता कि जलवायु रसायनों की यात्रा को तृप्ति के कोष तक ले जाने का कार्य ,अतृप्त अवस्था को पूर्ण कर करती है अतृप्त अवस्था को प्रकृति प्रवाह विज्ञान के सिद्धांत गंध से पकाती हुई शेष्टा के चरम सीमा तक ले जाती है जहां से विज्ञान को ईंधन मिलता है उसी श्रोत को जब प्रकृति परिपक्वता के चरम सीमा तक ले जाती है तब महाकाल की सिद्धांत अवस्था अंत से आरम्भ की भक्षणी क्रिया के अंतर्गत ईधन का अनन्ती अंत करती है और जब ईंधन का ही अंत हो जाता है तब पुनः किसी भी विज्ञान का ना ही निर्माण होता है और ना ही विस्तार होता, जिसके अंतर्गत प्रकृति मानव गंध भगोल एवं रसायन विज्ञान के मार्ग को भी ईंधन विज्ञान के पारा गर्भ कोष अर्थात् कल्पना, इच्छा, मोह, माया से बनी जलवायु गणित विकल्प एवम् अनिवार्यता में मानव के ईधन को पका रही थी , जो वर्तमान कि सिद्धांत कोष कर्म विज्ञान प्रसारण नभ पटल पे अंकित हो कर मानव को हकीकत के आईने से रूबरू करा रही है, अभी तक जो मानव कि कला दर्पण को ही छलावे भ्रम का नकली सत्यापन भ्रमित केन्द्र बनाकर अपरिपक्वता के कच्चे रसायनो को एकत्र कर जीवन मृत्यु का नाट्य खेल खेल रही थी, वह क्रिया अब विफल हो रही है क्योकि प्रकृति ने ईंधन का भक्षण कर अंत (परिणाम) को आरम्भ में मिला कर मानव के समस्त कार्य विचार,कल्पना, इच्छा विफल हो रहे, अब प्रकृति में मानव भूगोल को उनके द्वारा बनाई गई प्रत्येक अवस्था को भोगना एवम् अवस्था के चरम सीमा तक जाना की अनन्ती अतं क्रिया हो रही है करुणा दया का भक्षण कर प्रकृति सेतू मार्ग का अतं कर रही जिस ने प्रकृति रचना कार के सिद्धांत को विकलांग समझने के अहंकार में हस्तक्षेप का प्रवेश दिव्य प्रकाश मार्ग दर्शक विज्ञान के रूप में लेकर एहसास मार्ग विज्ञान पे व्यंग कर कच्चे सूर्य भाव को दर्पण पे मूल सूर्य भाव दिखा कर सम्पूर्ण अपरिपक्व लंका को स्थापित किया, प्रकृति सेतू का अंत मार्ग स्वतंत्र प्रवाह से करती हुई आज़ाद विज्ञान से प्रत्येक गंतव्य रूपी अंगो का मूल विज्ञान अनन्त अंत कर रही, दर्पण को प्रकृति ने पारदर्शी बनाया था उसपे कल्पना इच्छा चाहत शासन का लेप लगाना दर्पण को एक तरफा बनना मानव का भ्रम अहंकार विज्ञान था जिसपर असली नकली विज्ञान को दिखा कर मार्गो को केवल डायवर्ट किया गया, प्रकृति शेष्टा के गणित को शेष पारा से अनंती अंत कर पृथ्वी पे सूर्य विज्ञान का न्याय करती जा रही है। विकल्प का संसाधन नहीं होता तो स्वयं की हर अवस्था स्वयं को ठोस परिपक्व कर प्रकृति में स्व अस्तित्व न्याय कर प्राकृतिक गति में जीवन के वास्तविक आनंद के साथ तत्व न्याय प्रणाली में विलीन हो मिटी जाती जो अब आनंती अंत की धारा में मिट रही है।

स्थिर चित

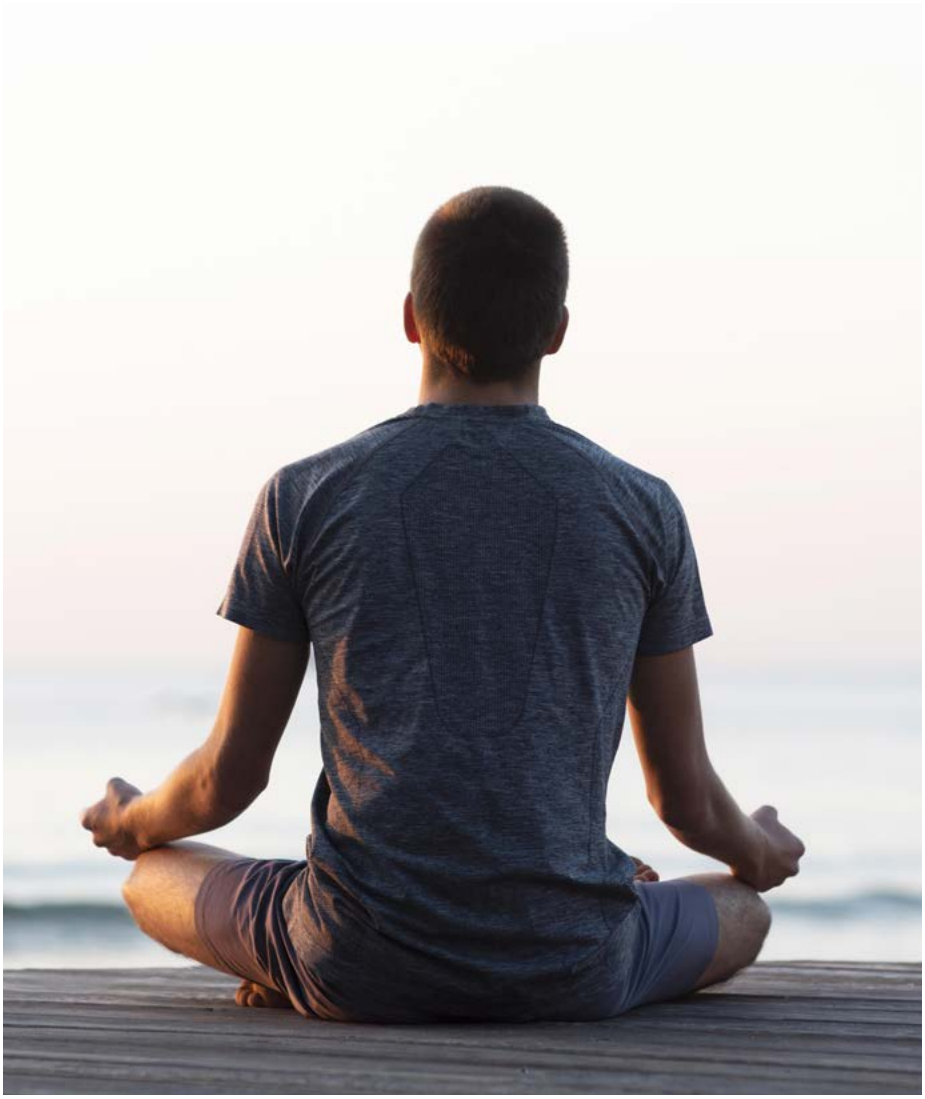

उमेश

यदि व्यक्ति शांत भाव से काम ना लेकर क्रोध में आता है तो वह अपने साधन (कार, मोटरसाइकिल आदि) को गुस्से से नुकसान पहुँचा सकता है। जिससे साधन और खराब हो जायेंगा और जल्दी सही होने की भी गुंजाइश नहीं रहेगी। खुद को भी व्यक्ति चोटिल कर सकता है। अपना हुलिया भी खराब कर सकता है। साधन को ज्यादा क्षति पहुँच सकती है। जो आपका ही नुकसान है। क्रोध में अपनों से कटु वचन बोल कर सभी का मन खराब कर सकते है। आप अपना भी व्यवहार खराब करेंगे।

गुरूवर श्री अशोक मानव जी को कभी किसी बात पर डिगते नहीं देखा। कभी परेशान होते नहीं देखा। वे अपना आपा नहीं खोते। एक ही भाव में दिखते से प्रतीत होते है, स्थिर से। शायद महात्म जनों की यही सरलता होती है। अच्छा-बुरा, दुख-सुख में वे प्रभावित होते नहीं दिखते। किसी समय कोई अपना कष्ट लेकर आये तो वे उसकी भावनाओं का मान रखते उसके लिए सहजता के भाव में आते है। उसकी बात सुनते है। उनके मुख से उचित ही निकलता है। व्यक्ति के लिए प्राकृतिक सत्य के भाव में ही संवेदना प्रकट होती है। यह सब करते हुए और लोगों की भावनाओं का सम्मान करते हुए अवस्था जो प्रत्यक्ष होती है वह है 'चिर शांति'। जब गुरूवर बिना किसी बात-चीत के बैठे रहते है तब यह स्पष्ट दिखता है। जब वे बोल रहे होते है तब भी एक स्थिर शांत अवस्था उन्होंने धारण की है ये एहसास होता है।

वे सभी से कहते भी है कि ''हमें किसी भी परिस्थिति में विचलित नहीं होना चाहिए। हम अपना प्रयास जरूर करते रहे और जो हो

रहा है जो सामने आ रहा उसका स्वागत करें। उस अवस्था से आनन्दपूर्वक मिलें।'' इसके आध्यात्मिक विश्लेषण में बहुत से सिद्धांत सामने आयेंगे। परन्तु इसकी जो व्यावहारिक समझ है उसके अनुसार हमें सजग रहना चाहिए। अर्थात जो समस्या हमारे सामने आ गई है उससे निपटना तो हमे ही है। उससे गुजर के ही हमें जाना है। फिर यदि हम समझ खो कर, विचलित होकर कुछ करते है तो यह हमारे लिए सही नहीं होगा। क्योंकि स्थिर बुद्धि न होने के समय आवेग में उठाया गया कदम स्थिति को और भी हमारे खिलाफ कर देता है। हमारा निर्णय गलत पर गलत होते जायेगें। जो स्थिति हमें प्रारम्भ में मिली थी, और हमें अच्छी नहीं लग रही थी वह अब और भी जटिल हो गई है। यह सारा कुछ किया हमने ही है।

उदाहरण के लिए-यदि कोई व्यक्ति अपने साधन से कहीं अमुक स्थान पर समय से पहुॅचना चाहता है। और तैयार होने के बाद निकलते वक्त उसे पता चले कि उसका साधन खराब है तब उसे कैसा लगेगा। यदि व्यक्ति शांत भाव से काम ना लेकर क्रोध में आता है तो वह अपने साधन कार, मोटरसाइकिल आदिद्ध को गुस्से से नुकसान पहुॅचा सकता है। जिससे साधन और खराब हो जायेंगा और जल्दी सही होने की भी गुंजाइश नहीं रहेगी। खुद को भी व्यक्ति चोटिल कर सकता है। अपना हुलिया भी खराब कर सकता है। साधन को ज्यादा क्षति पहुॅच सकती है। जो आपका ही नुकसान है। क्रोध में अपनों से कटु वचन बोल कर सभी का मन खराब कर सकते है। आप अपना भी व्यवहार खराब करेंगे। बहुत कुछ है जो इस स्थिति से आपको बहुत सुविधाजनक तरीके से निकाल कर आपको आपके दिन का पूरा आनन्द दे देगा। पर यह होगा तब जब आप सजग रहेंगे। आप विचलित नहीं होंगे। आज के समय ऐसा हो बहुत ही कम पाता है। परन्तु यदि आप अपने साथ अच्छा होते देखना चाहते है तो जो हो रहा है उसका स्वागत करिये। गुरूवर कहते है कि प्रकृति को जब आप से कुछ जोड़ना चाहती है। कुछ सिखाना चाहती है तो वह आपको किन्ही परिस्थितियों में डाल देती है। आपको उनसे गुजरना ही है। आप बच नहीं सकते। वह पन्ना खुल चुका है, वह पाठ तैयार हे जो आपको पढ़ना ही पढ़ना है। इस प्रकार से प्रकृति आपको आने वाले समय के लिए मजबूत करती है तैयार करती है। पर हम यह समझ नहीं पाते और विपरीत आचरण कर, अपने को ही सजा दे रहे होते है। अजीब बात यह कि हम अपने को सजा देना नहीं चाहते। कोई नहीं चाहता।'' बस यही गुरूवर बताना चाह रहे कि लोग कर वो रहे जो वे चाहते नहीं। स्थिति खराब होने पर परेशान होने पर आर्शीवाद की लालसा में भटकते है। गुरूवर के अनुसार प्राकृतिक न्याय कभी गलत नहीं होता। प्रकृति जो भी करती है वह अच्छे के लिए ही करती है यह हमारे दृष्टिकोण का असर है जो दोष देखता है।

जो हो रहा है सही हो रहा है यह भाव हमें संतुलित अवस्था में रखता है और हर परिस्थिति से निपटने के लिए शक्तिशाली बनाता है।

गुरूवर यह भी कहते है कि जो हमारे साथ हो रहा है, जो हमसे जुड़ रहा है वह हमारा ही। प्रकृति के अनुसार हमसे वहीं जुड़ सकता है जो कि हमारे ही गुण-गंध का होगा अन्यथा नहीं। तो हमसे जो जुड़ रहा है वह हमारा ही है। हमारी ही कोई अवस्था पूर्ण हो रही है। यह समझ हमें नहीं होती तो हम परेशान होते है। इसकी समझ हमारे में आ सकती है। जब हम शांत हो चीजों को देखेगें तो हमें अवस्था के सत्य का भान हो जायेगा। यह एहसास हमारे जीवन सफर को बहुत सुखद और सरल बना देगा।

प्रकृति में विविधता व्याप्त है। सभी का गुण धर्म अलग-अलग हैं। समाज में भी यही विविधता है। हम इस विविधता का विरोध न कर सम्मान करें तो हर तरफ खुशहाली रहे। हम विरोध करके आपस में तनाव पैदा करते है। हम विविधता में दूसरों से तुलना करके आपने में असंतोष पैदा कर निराश होते है। प्रकृति के अनुरूप हमारा जीवन विविधताओं में सुगम है। विरोध तो हमारा अपना बनाया है।

किसी अवस्था में दुखी होकर रो-धोकर हम कुछ हासिल नहीं कर पाते। हम उस अवस्था से तो निकल ही आते है पर जो सुकून जो बल हममें दिखना चाहिए वह नहीं दिखता। हम हारे हुए से होते है। वहीं शांत चित में किसी विपरीत अवस्था को पूरा करके पार होना है पूर्णता का एहसास कराता है। जीत का एहसास कराता है। हम आत्मविश्वास से भरे होते है। यह आत्मविश्वास बाकियों के लिए अनुभव के रूप में निकलता है। प्रेरणा और मार्गदर्शन का काम करता है। इसी पूर्णता के भाव से जीते हुए हम जीवन के अंत समय अपनी यात्रा को सही अर्थो में जीकर सम्पूर्णता के भाव में ही जीवन छोड़ते है। नहीं तो यह एहसास रहता है कि बहुत कुछ रह गया। जो करने आये थे नहीं कर सके। फिर अभाव का भाव घेरता है और हमारा अंत भी कष्टदायी हो जाता है।

देखा जाये तो हमारे विरोधो का कारण हमारे सबके द्वारा बनाई गई अजीबों गरीब व्यवस्थाएं है। यही हमें विचलित करती है। इन्हीं की चाहत हमारे आनन्द में रूकावट बनती है। देखे तो पायेंगे कि यही झूठी शान हमारे जीवन के सुख-दुख का कारण बनी है। यही भौतिक सुविधायें हमारी लालसा का कारण बनी है। हमारी परेशानियों का अधिकांश हिस्सा इन्हीं का है। थोड़ा रूककर एक बार फिर देखे तो शायद वस्तुस्थिति स्पष्ट हो कि हम वो नहीं, जो हम बन गये है। दूसरों के तुलना से अलग अपने को खोजे अपने स्वभाव पर रमें तो कुछ जीने जैसा होगा। कुछ हम जी पायेंगे।

आत्मकथाओं और संस्मरणों में प्रतिबिंबित आकाशवाणी

प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी

आकाशवाणी से सेवानिवृत्त अधिकारी

आकाशवाणी की विविध भारती सेवा मुंबई के सेवानिवृत्त चैनल प्रमुख महेंद्र मोदी ने चार खंडों में आकाशवाणी की सेवाओं के अनुभव को पुस्तक का रूप दिया है।वे चार खंड हैं-स्वप्न चुभे शूल से,क्यूँ उलझे तुम मन ,सिमटती धूप लरजते साये और ले बाबुल घर आपनो ।इनकी लेखन शैली भी इनके व्यक्तित्व की ही तरह बहुत ही दमदार है ।इन्होंने जो लिखा है वह इनका अपना भोगा हुआ कटु किन्तु सत्य यथार्थ है।

मैं उन दिनों में जब कि अपनी ही आत्मकथा 'आमी से गोमती तक'लिख रहा हूँ और 'प्रकृति मेल' नामक लोकप्रिय मासिक पत्रिका के माध्यम से आप तक पहुंचा रहा हूँ तो यह महसूस कर रहा हूँ कि आत्मकथा लेखक के लिए यह मुश्किल होता है कि वह उस संस्थान का जिक्र अपने संस्मरण में न लाए (या कम से कम लाए) जहां उसने जीवन के 25-30 या उससे भी ज्यादे साल गुजारे हों ।आकाशवाणी में काम करने वाले तमाम प्रतिभावान लोगों ने भी जब अपनी आत्मकथाएं लिखीं तो शायद उनके सामने भी यही सवाल खड़ा हुआ होगा ।मैं ऐसी आत्मकथाओं में आकाशवाणी के प्रतिबिम्बन को बुरा नहीं बल्कि अच्छा ही मानता हूँ ।इसी बहाने इस विशाल और किसी जमाने में बहुत चर्चित संगठन की अंदरूनी खामोशियों को जुबान मिलती रही है।

अपने छत्तीस साल से अधिक के सेवाकाल में मैंने भी तमाम प्रतिभावान बहु आयामी कलाकार स्वभाव वाले डाइरेक्टरों , अधिकारियों का साहचर्य पाया है ।वह दौर ही कुछ और था और उस दौर के लोग भी ।डाइरेक्टर

को बहुत ज्यादा अधिकार हुआ करते थे । आकाशवाणी या दूरदर्शन में बाहरी लोगों का आजकल की तरह भेड़ियाधसान नहीं हुआ करता था ।सच यह है कि प्रसार भारती बनने के बाद उस दौर में इन सरकारी नियंत्रण वाले प्रसारण माध्यमों में जो हालात बदलने का ख्वाब देखा जा रहा था वह चकनाचूर हो चला है ।

आकाशवाणी को जो करीब से जानते हैं वे उसके सुनहले दौर को भी देखे होंगे ।उसके कुछेक दबंग डाइरेक्टरों को भी जानते होंगे ।ऐसे ही एक डाइरेक्टर थे डा. मधुकर गंगाधर जिन्होंने उन दिनों में 'धर्मयुग' में छपी अपनी दो कहानियों 'शेर छाप कुर्सी का रोजनामचा '(नवंबर 1974)और 'भेड़ के पीछे,भेड़ के आगे'(

नवंबर 1989) लिख कर रातोंरात सुर्खियां बटोर ली थीं। आगे चलकर लिखी गई अपनी आत्मकथा 'हवा पर उन्नतीस वर्ष'में उन्होंने इन्हे भी शामिल किया है । ये दोनों कहानियाँ एक खुर्राट महानिदेशक शिंदे और दूसरा एक निदेशक प्रसाद पर लिखी गई थीं। वे अपनी आत्मकथा के बारे में स्वयं लिखते हैं –' लेखक का भोगा हुआ सत्य जो आकाशवाणी की भीतरी प्रक्रिया एवं कार्यपद्धति की बखिया उधेड़ता है ,दिशा निर्देशकों के लिए साकछि एवं सलाहकार है ।' जब यह पुस्तक छपी तो उन्होंने इसे प्रसार भारती के मुखिया को समर्पित करते हुए लिखा था –'पुस्तक समर्पण – प्रसार भारती के मुखिया को -कि अपनी पंचायत को जानलेवा बीमारियों से मुक्त कराएं ।'वे निडर थे शरीर और लेखन दोनों से। मैंने उनके साथ ज्यादा तो नहीं किन्तु चार महीने इलाहाबाद में काम किया है। वे लिखते हैं-'.. सरकार में बैठे राजपुरुष और विभागीय अधिकारी इस पुस्तक के माध्यम से जान सकेंगे कि आकाशवाणी के भीतर कहाँ ,कितने और कैसे रक्तसत्रावी घाव हैं। वे चाहें तो घावों का उपचार करें। चाहें उन्हें लावारिस छोड़कर कैंसर में परिवर्तित होने दें।' उनका यह कथन लगभग सत्य साबित हुआ और आज ये दोनों संस्थान कैंसर- ग्रस्त होकर अपनी अंतिम सांसें लेते प्रतीत हो रहे हैं ।

वैसे डा .गंगाधर स्वयं में भी कम विवादित नहीं थे । विवाद तो उनके जीवन से जुड़ा रहा। चाहे उनके पारिवारिक जीवन का मामला हो,उनकी पदोन्नति से जुड़ा,रिटायरमेंट के तत्काल बाद पूर्णिया से चुनाव लड़ने का हो या और तमाम मामले । लेकिन उनका खुल्लमखुल्ला बोलना या लिखना कम लोगों को आता है। इसीलिए उन्हें अगर 'रेडियो का निराला' कहा जाए तो बुरा नहीं होगा ।उनकी आत्मकथा के खंड हैं-हवा और जमीन के दरम्यान ,इक्कीस वर्ष लंबी सुरंग ,सेफ़्टीरेजर के ब्लेड से महाभारत लड़ने वालों के बीच और छबीली भटियारिन की सराय में , जो क्रमश उनके आकाशवाणी में व्यतीत 10,543 दिनों बाद,आकाशवाणी पटना,आकाशवाणी इलाहाबाद और फिर दिल्ली के सेवाकाल की अवधि का है। उनकी आत्मकथा आपको बांधे रखती है चाहे वह किसी' खजुराहो कन्या को सीमातोड उछाल' दिए जाने का प्रसंग हो,'मुक्त' और 'रेणु ' में वर्चस्व का प्रकरण हो, आकाशवाणी में नारी देह के उपयोग का प्रकरण हो। वे लिखते हैं- 'लेकिन जिस प्रकार कभी - कभी दो हाथियों -'मुक्त' और 'रेणु' में वर्चस्व की टकराहट होती रही उसी प्रकार कभी - कभी दो साडों की भिड़न्त भी आकाशवाणी का भाग- सुहाग रहा है।' और यह भी –'यह अलग शोध का विषय है कि आकाशवाणी में नारी देह का उपयोग कर वांछित फल पाने वाले कितने नर नारी हो चुके और कितने मौजूद हैं और इनके चलते आकाशवाणी की मर्यादा कितनी भंग हुई है तथा गुणवत्ता पर कितना असर पड़ा है। यह शोध कार्य मैं भविष्य की पीढ़ी के लिए छोड़ता हूँ ।'वे लिखते हैं कि आकाशवाणी की 21 वर्ष की लंबी सेवा सुरंग के नौ प्रमुख मोड आए जहां एक एक रत्न जड़ा हुआ अनुभूत हुआ। इनसे परिचित होकर आप न केवल इतना समझ पाएंगे कि मधुकर गंगाधर नामक साहित्यकार को किन किन चकलों पर पापड़ बेलने पड़े.. !'(ध्यान दें 'चकलों।') उन दिनों आकाशवाणी में ट्रांसफर पोस्टिंग के लिए उनको यहाँ तक कहना पड़ गया कि 'कोई स्टेशन डाइरेक्टर अपनी मनचाही पोस्टिंग तभी करा सकता है जब वह किसी राजनैतिक 'तोप' का अत्यंत प्रिय' गोला' हो या स्वयं सुंदरी अथवा सुरा सुंदरी आपूर्तक !' लेकिन ऐसा नहीं है कि 'हवा पर उनतीस वर्ष' में लेखक ने सिर्फ़ संगठन या सहकर्मियों की आलोचना ही की है उन्होंने तमाम उपयोगी टिप्सभी दिए हैं। जैसे उन्होंने आकाशवाणी को जीवित रहने के लिए ग्रामाधार के नए आयाम तलाश करने का परामर्श बहुत पहले ही दे दिया है क्योंकि उन्हीं दिनों में दृश्य मीडिया का पदार्पण होने लगा था। उन्होंने यह भी बाल देते हुए कहा था कि आकाशवाणी प्रसारण, मात्र ध्वनि प्रछःपण नहीं,वह जीने की विशेष पद्धति है जिसमें शब्द,अर्थ,प्रभाव और समय की सर्वथा नई अर्थवत्ता होती है -शील और शिष्टतायुक्त। संवाद को उन्होंने मनुष्य जाति के लिए आग से भी बड़ा आविष्कार माना है और आकाशवाणी को विश्व का सबसे व्यापक तथा सुलभ संवाद वाहक बताया है ।

इसी क्रम में मैंने एक और आत्मकथा 'यमुना से यमुना तक' पढ़ी है जिसे श्री गिरीश चतुर्वेदी ने लिखी है। इसको मैंने आकाशवाणी के केन्द्रीय कार्यक्रम प्रशिक्षण संस्थान की सम्पन्न लाइब्रेरी में सेवाकालीन प्रशिक्षण(3 से 7 अप्रैल 2000) के दौरान दिल्ली प्रवास में पढ़ी। चतुर्वेदी जी भी एक कुशल प्रसारक और दबंग व्यक्तित्व थे। वर्ष 1934 में मथुरा में उनका जन्म हुआ था । उनके नाना पंडित द्वारिका प्रसाद चतुर्वेदी थे। उनका यह मानना था कि लेखक और कलाकार का स्थान हर युग में सर्वोपरि रहा है और रहेगा। इस पुस्तक में उन्होंने अपने कुछ बेहतरीन प्रोडक्शन और महान कलाकारों और शखशियतों से लिए गए इंटरव्यू के भी दृष्टांत दिए हैं जो बहुत ही रोचक हैं। उनके प्रोडक्शन 'होली खेल मना रे' संगीत रूपक में उन्होंने प्रकृति पूजन के पावन पर्व होली की चर्चा करते हुए लिखा है कि 'मन की वीणा से प्यार की धमार छेड़ो,मन और वाणी को प्यार के रंगों से रंग दो !जीवन का फागुन चार दिनों का ही तो है इसलिए खुलकर होली खेलो ।'

'मलिका ए गजल' बेगम अख्तर को कौन नहीं जानता है ? वे रेडियो की दीवानी थीं और आकाशवाणी भी उनको भरपूर सम्मान देता था। जिन्होंने उनकी ज़िंदगी को करीब से जाना है यह भी जानते होंगे कि गायन उनके लिए आक्सीजन से भी जरूरी तत्व था और जब पारिवारिक दबाव के चलते उनके गाने पर रोक लग गई तो वे किसी मछली की तरह तड़प तड़प कर मरने लगी थीं।

एक तो संतान न होने का दुख और दूसरे मौसीक़ी से दूरी । उस नाजुक दौर में

आकाशवाणी के एक अधिकारी ने उनके घर जा जाकर किसी तरह उनके शौहर को मनाया और उनको वापस आकाशवाणी लखनऊ के स्टूडियो लाया । यह जो बेगम साहिबा की दूसरी पारी की वापसी हुई वह उनके संगीत के लिए,किसी एक भारतीय कलाकार द्वारा गजल गायकी के लिए, उनके स्वर्णिम दौर के योगदान के लिए हमेशा याद किया जाएगा । तो गिरीश जी भी उन चंद डाइरेक्टरों में शुमार हैं जिन्होंने बेगम साहिबा का सानिध्य और स्नेह पाया ।बेगम अख्तर ही क्यों उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय प्रख्यात माड गायिका बीकानेर की संगीत साधिका अल्लाह जिलाई बाई ,ठुमरी गायिका सिद्धेश्वरी देवी का भी साहचर्य पाया है ।इन सभी से उन्होंने लंबे लंबे इंटरव्यू रेडियो के लिए लिए हैं । ज्ञातव्य है कि हिन्दी के मूर्धन्य पंडित श्रीनारायण चतुर्वेदी इनके मामा थे ।इसलिए कला ,संगीत और साहित्य इन्हें विरासत में मिला था । स्थानाभाव के कारण उनकी पुस्तक के कुछ अद्वितीय अंशों को चाहकर भी मैं उद्धधरित नहीं कर पा रहा हूँ ।उन्होंने अपनी पुस्तक के उप शीर्षकों किस्से पहलवानों के ,बातें भय्या साहब के घर की,स्वर साधिका सिद्धेश्वरी देवी ,संगीत साधिका अल्लाह जिलाई बाई के अंतर्गत बहुत रोचक तथ्य दिए हैं ।एक अन्य शीर्षक'आकाशवाणी लखनऊ जो मेरे जीवन से जुड़ा है' के आलेख में उन्होंने एक रोचक वाकया लिखा है –'हमारे एक केंद्र निदेशक बड़े ही सख्त आदमी थे ।एक दिन उन्होंने म्यूजिक के पेक्स को बुलाकर कहाकि कुछ कलाकर मेरा आदर नहीं करते ।जब मैं दफ्तर आता हूँ तब ये खड़े नहीं होते।कलाकारों को बुलाकर डांटा गया ।एक दिन लाइव प्रोग्राम हो रहा था । निदेशक जी एनाउंसर के बूथ में पहुँच गए।जैसे ही सारंगी,तबला व अन्य कलाकारों ने उन्हें देखा तो वे साज छोड़कर स्टूडियो में खड़े हो गए और सलाम करने लगे । कलाकार ने गाना बंद कर दिया। अब तो निदेशक जी बौखला गए । बोले-' ये क्या कर रहे हैं?' मैं साथ में था, बोला-साहब ये आपको रिस्पेक्ट दे रहे हैं ।' .. वे फौरन स्टूडियो से भागे और फिर कभी लाइव स्टूडियो में नहीं गए ।'

उन दिनों में भी कुछ अलग ही मिजाज लिए आकाशवाणी के अधिकारी होते थे ।चतुर्वेदी जी लिखते हैं-'मेरे एक उच्च अधिकारी ने मेरी गोपनीय पंजिका में लिखा था-'अपनी ड्रेस और एपीयरेन्स पर ध्यान दें ।'.. 4 फरवरी 1985 को मैं लखनऊ का केंद्र निदेशक बना और जो सीखा इन वर्षों में अपने केंद्र को वापस किया । 'साहिर' के शब्दों में-' दुनियाँ ने तजुर्बा तो हवा दिस की शकल में,जो कुछ मुझे दिया है लौट रहा हूँ मैं !'

दूरदर्शन में 1982-1985 में प्रोड्यूसर एमेरिटस रह चुके श्री गोपाल दास की ऐसी दो पुस्तकें हैं – 'मोहें बिसरत नाहिं' और 'जीवन की धूप-छाँव से'जिनमें आकाशवाणी और दूरदर्शन के स्वर्णिम काल के वैभव और उसके अंदर पनपते दोषों का संदर्भ मिलता है ।आमुख में विष्णु प्रभाकर ने लिखा है –'लेखक ने आज की विसंगतियों और विडंबनाओं को ऐसे उकेरा है

आकाशवाणी की विविध भारती सेवा मुंबई के सेवानिवृत्त चैनल प्रमुख महेंद्र मोदी ने चार खंडों में आकाशवाणी की सेवाओं के अनुभव को पुस्तक का रूप दिया है।वे चार खंड हैं-स्वप्न चुभे शूल से,क्यूँ उलझे तुम मन ,सिमटती धूप लरजते साये और ले बाबुल घर आपनो ।इनकी लेखन शैली भी इनके व्यक्तित्व की ही तरह बहुत ही दमदार है ।इन्होंने जो लिखा है वह इनका अपना भोगा हुआ कटु किन्तु सत्य यथार्थ है ।आकाशवाणी के बीकानेर, जोधपुर, उदयपुर, सूरतगढ़, इलाहाबाद,कोटा,नागौर और मुंबई केंद्रों पर रहकर इन्होंने अनेक अच्छे कार्यक्रम बनाए ।आकाशवाणी के अपर महानिदेशक श्री विजयदीछित ने प्रस्तावना में ठीक ही लिखा है-'मैं एक मित्र की पाण्डुलिपि पढ़कर कोई एहसान नहीं कर रहा था बल्कि एक जोरदार सत्यकथा पढ़ रहा था ।..एकआम श्रोता तो धुली -पुँछी आवाजे, सधे हुए कार्यक्रम और गुनगुनाता संगीत ही सुनता है ।अंदर कितनी धूल होगी ,कहाँ -कहाँ कितने जाले लगे होंगे, किस महानुभाव के तार किस अफसर से जुड़े होंगे और क्यों .. उसे क्या मालूम !.. महेंद्र मोदी का यह लेखन बर्बादियों का जश्न है । आप न भी चाहें तब भी यह पुस्तक आपको हाथ पकड़ कर इस जश्न में शामिल होने के लिए खींच लाएगी ।'

मोदी जी ने इलाहाबाद में व्यतीत दिनों को याद करते हुए लिखा है-'इलाहाबाद ने तो ज़िंदगी के कई जरूरी पाठ पढ़ाए,सबसे अहम पाठ जो इलाहाबाद ने पढ़ाया वो ये था कि वक्त और हालात भी अलग अलग इंसानों की ज़िंदगी को अलग अलग तरह से मुतास्सिर करते हैं ।'मोदी जी ने आकाशवाणी और कनेडियन प्रोजेक्ट के रेडियो कार्यक्रमों के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी जिससे उनका विदेशों में भी नाम हो गया ।उन्होंने आकाशवाणी कोटा में नियुक्ति के दौरान रेडियो को पब्लिक सर्विस ब्राडकास्टर का असली जामा पहनाने के उद्देश्य से मिलजुल कर कोटा के पास के एक कूड़ेदान बने गाँव सोगरिया को साफ सुथरा गाँव बना दिया ।हालांकि इसकी उनको भारी कीमत चुकानी पड़ी ।वे स्वीकारते हैं कि 'एक वक्त था जब आकाशवाणी ऐसे भ्रष्ट और घटिया अफसरों से बचा हुआ था ।.. दूरदर्शन में भ्रष्टाचार फलने फूलने लगा और रेडियो वालों ने देखा कि इन अफसरों का कुछ नहीं बिगड़ रहा है तो उन्होंने भी दूरदर्शन के अफसरों के नक्शे कदम पर चलना शुरू कर दिया और धीरे धीरे भ्रष्टाचार रेडियो में भी पग पसारने लगा ।' एक जगह मोदी जी को मजबूर होकर यहाँ तक लिखना पड़ गया –'वास्तव में कला की, संस्कृति की कोई पूछ नहीं रह

गई है इस आकाशवाणी में ।ऐसा लगता है कि कुछ क्लर्क मानसिकता के लोग इकट्ठे होकर इस खूबसूरत परंपराओं वाले विभाग को तबाह करने में जुट गए हैं ।'अपनी पुस्तक 'स्वप्न चुभे शूल से' में उन्होंने प्रसार भारती एक्ट लागू होने के बाद की निराशाजनक परिस्थतियों पर भी ध्यान दिलाया है ।उन्होंने एक तल्ख हकीकत से भी रूबरू कराया है कि पिछले दरवाजों से दाखिल हुए लोग उप महानिदेशक से महानिदेशक की सारी बड़ी बड़ी कुर्सियों पर काबिज होने लगे। पूरी दुनियाँ में शायद इस तरह की कोई मिसाल मिलेगी कि कोई इंसान किसी नौकरी पर लगे और बिना एक भी प्रमोशन पाए रिटायर हो जाए लेकिन आकाशवाणी में अब यही हो रहा था कि यू.पी. एस.सी. जैसी एजेंसी से आया हुआ अफसर 30-35 बरस की नौकरी के बाद भी उसी पोस्ट से रिटायर हो जाए ।''इस पुस्तक का इकतीसवा अध्याय बहुत ही रोचक संस्मरणों के साथ उपस्थित हुआ है जब लेखक ने रेत के समंदर से काली पीली आंधी आने के वाकये को बयान किया है ।

इसी प्रकार आकाशवाणी – दूरदर्शन में 1982-1985 में प्रोड्यूसर एमेरिटस रह चुके श्री गोपाल दास की ऐसी दो पुस्तकें हैं – 'मोहें बिसरत नाहिं' और 'जीवन की धूप-छाँव से'जिनमें आकाशवाणी और दूरदर्शन के स्वर्णिम काल के वैभव और उसके अंदर पनपते दोषों का संदर्भ मिलता है। आमुख में विष्णु प्रभाकर ने लिखा है –'लेखक ने आज की विसंगतियों और विडंबनाओं को ऐसे उकेरा है कि वे मन प्राण को झकझोर देती हैं। स्थान - स्थान पर अनुभूति की भट्टी में तपी-पची सूक्तियाँ आपको पुलकित कर देंगी। 'लगभग 91 पृष्ठों की इस पुस्तक में आधे पृष्ठ तो उनके जीवन के परिदृश्य लिए हैं लेकिन पृष्ठ 55 से जो शुरुआत उन्होंने अपने आकाशवाणी दूरदर्शन में व्यतीत अनुभवों के बारे में की है वह बहुत ही रोचक,ज्ञानवर्धक है।'वे चेहरे'अध्याय में उन्होंने उस शाम के संजीदा लमहों का जिक्र किया है जब वे आकाशवाणी के अपने कार्यालय में थे और सूचना आई कि गांधी जी नहीं रहे और नेहरू जी और पटेल को आकाशवाणी स्टूडियो थीं और मृत्यु क्या है इसके बारे में बहुत सीमित शब्दों में कहा था-'न कोई जन्म है न कोई मरण।खोज में आत्मा की उच्च से उच्च तर अवस्था प्राप्त करने के ये चरण मात्र हैं -महात्मा गांधी सदा सत्य के लिए जिए ।एक हत्यारे ने उन्हें सत्य की उच्चतर वस्था तक पहुँच दिया हैजिसकी खोज में वह थे । 'गोपाल दास अपने लिए लिखते हैं 'उस घनीभूत पीड़ा के स्वर से मैं अपने अंतरतम तक सिहरा उठा ।मेरे लिए वहाँ रहना असह्य हो गया। 'मई 1953 में उन्होंने आकाशवाणी इलाहाबाद का कार्यकाल संभाला था । 'एक झिक और उसके बाद 'नामक अध्याय में महादेवी जी की झिक (कि आकाशवाणी नहीं आऊँगी)और गोपाल दास की जिद कि वे उनकी रिकार्डिंग करके ही रहेंगे का रोचक काकटेल संदर्भ है ।अंततःउन्होंने महादेवी जी से 'अतीत के चलचित्र' कार्यक्रम के लिए आलेख भी लिखवा लिए और उनकी रिकार्डिंग भी कर ली ।वे लिखते हैं-'वह झिक मुझ पंगु के लिए 'गिरिवर गहन' बन गई थी ।फिर भी , 'जासु कृपा 'से अनहोनी हुई । लगभग यही हाल बाबू पुरुषोत्तम दास टंडन की पहली और एकमात्र रिकार्डिंग में हुआ और उनको इसके लिए सौ सौ पापड़ बेलने पड़े । 'जब टंडन जी ने ब्राडकास्ट किया' नामक अध्याय में उसका विवरण है ।'एक प्रसारण जो नहीं हुआ 'में वर्ष 1969 में गांधी जन्म शताब्दी में राजेन्द्र प्रसाद व्याख्यान माला के लिए जय प्रकाश नारायण को रिकार्डिंग के लिए उन्होंने सहमत कराया लेकिन महानिदेशक की एक चूक के चलते वे नाराज हो गए और रिकार्डिंग नहीं हो सकी ।वे लिखते हैं-'महानिदेशक अपने में खींच गए ।उनका मुंह उतार गया। जय प्रकाश ताड़ गए किन्तु उन्होंने अपनी मुद्रा यथावत बनाए रखी ।जैसे कहीं कोई महीन धागा टूट जाता है वैसा ही कुछ हो गया । टूटा तो टूटा !'

अपने संस्मरण के समापन पृष्ठों में गोपाल दास भी 'ऊपर' बैठे अधिकारियों के व्यवहार और रोक टोक की प्रवृति से अपनी खिन्नता की कलात्मक अभिव्यक्तियाँ कर ही दी हैं। लिखते हैं-'पात्र हैं चार कुर्सियाँ । एक छोटी,एक मध्य की, एक मध्येतर और एक बड़ी ।दो पात्र और हैं ।वे अदीठे रहते हैं ।एक बूढ़ा इतिहासकार और एक तोप कुर्सी ।'उन दिनों वे महानिदेशालय में महत्वपूर्ण काम देख रहे थे और मंत्रालय के एक संयुक्त सचिव स्तर के अधिकारी से उनकी भिड़ंत हो रही थी ।लिखते हैं- 'अब बड़ी कुर्सी का प्रस्ताव तोप कुर्सी के सामने था ।तोप कुर्सी दगी ।प्रस्ताव खेत रहा ।बड़ी कुर्सी मैदान छोड़ गई ।' अपने एक और उल्लेखनीय योगदान कि जिससे आकाशवाणी के एक महत्वपूर्ण प्रसारण में हिन्दी का मान सम्मान बना रहे ,उन्होंने 'आन रह गई'शीर्षक के अध्याय में 24 दिसंबर 1972 की उस घटना का हवाला दिया है जब राजाजी राजगोपालाचारी का देहांत हो गया था। लिखते हैं –' हिन्दी की हेटी हो रही हो और मैं भावुक ना होऊ,चुप रहूँ यह कैसे हो सकता है ?'

यह सभी जानते हैं कि जमीन , संसाधन और महत्व के मामले में आजादी के बाद से रेलवे,सेना ,दूरसंचार और रेडियो को भरपूर महत्व मिलता रहा है ।प्राकृतिक आपदाओं, एजुकेशन ,स्वास्थ्य और युद्ध जैसी परिस्थिति में रेडियो का कितना यहां रोल है ।उसको स्वायत्तता इसीलिए दी गई जिससे वह अपनी इस भूमिका का सशक्त और बिना किसी दबाब के निर्वहन कर सके। कहने को प्रसार भारती तो बन गया लेकिन उसका अपना कोई सोर्स ऑफ इनकम न होने से उसे राज्य आश्रयी होना ही पड़ा है । आज भी इसीलिए ये दोनों जनसंचार के माध्यम क्रमशः मरणासन्न होते जा रहे हैं । जल्दी ही इनके प्राइवेटाइजेशन को कोई रोक नहीं सकता है। ..(क्रमश;अगले अंक में)

R N I No. UPHIN/2011/40224

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकृति मेल वह आईना है जिसमें आप अपनी वास्तविक तस्वीर के साथ प्रकृति की हर क्रिया प्रतिक्रिया का वैज्ञानिक स्वरूप देखें।

अशोक 'मानव'

उत्तर भारत की तेजी से लोकप्रिय होती हिन्दी मासिक पत्रिका
(शीघ्र ही अपने विज्ञापन की जगह बुक करवाये) (8423330911)

☐ हां, मैं प्रकृति मेल पत्रिका का वर्षिक ग्राहक बनना पसंद करूंगा/ करूंगी

प्रकृति मेल के पक्ष में देय ₹ ☐☐☐ कैश ☐ चेक ☐ तारीख ☐☐☐☐☐☐

1 year membership fee -220/- only. (Must be drawn in favour of 'Prakriti mail' payable at lucknow)

संलग्न चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. ☐☐☐☐☐☐ आहरित बैंक (बैंक का नाम)__________

नाम ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

पता__________

__________ राज्य__________ पिन__________

फोन नंबर ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ई-मेल:__________

कृपया फार्म भरकर निम्नलिखित पते पर भेजे:

प्रकृति मेल, सूर्या आश्रम, मानव नगर, (निकट आई.आई.एस.ई.) कल्याणपुर, लखनऊ, पिनकोड- 226022, उ0 प्र0।

नियम और शर्तें

पत्रिका का मूल्य और आफॅर केवल भारत में लागू। कृपया पत्रिका की पहली प्रति डाक या कोरियर के माध्यम से मंगवाने के लिए कुछ समय दें। किसी भी तरह के विवाद का निबटारा केवल लखनऊ की अदालत में होगा।

निःशुल्क ई-मैगज़ीन प्राप्त करने के लिए हमारे वेबसाइट - www.prakritimail.com पर सम्पर्क करें।

सूत्र वाक्य

अशोक मानव

- दवा से रोग की रोकथाम तो की जा सकती है परंतु किसी के रासायनिक गुण की अनिवार्य गति और व्यक्तित्व को नहीं बाधित किया जा सकता।
- हर अवस्था किसी गुण द्रव्य की रसायनिकता का परिणाम होता है इसे कोई चलाने का कार्य नहीं करता हर अवस्था अपने में आजाद अवस्था होती है।
- ब्रह्मांड में एक गुण की दो अवस्था नहीं होती और ना ही किसी एक मार्ग पर दो अवस्थाएं गतिमान हो सकती हैं कोई भी दूसरे गुण के अनुसार उसके मार्ग पर ना चल सकता है ना किसी को अपने गुण के मार्ग पर चला सकता है।
- किसी भी अवस्था की जो भी यात्रा होती रहती है वही उसकी सरलतम यात्रा होती है परंतु हम ज्ञान-अज्ञान, धर्म-अधर्म, सही-गलत को सुधारने के चक्कर में पड़कर यात्रा को कठिन और दुर्लभ बनाने का कार्य करते हैं।
- किसी भी इच्छापूर्ति के प्रति हमारे भीतर जो भी सकारात्मक या नकारात्मक विचार बनने लगते हैं तो हमारी इच्छा से बने हुए बीज को फल बनने तक की यात्रा उतनी ही दुर्लभ होने लगती है अतः यदि इच्छा बनाकर छोड़ दिया जाए तो उससे इच्छा का बीजा रोपण हो जाता है और आसानी से फल प्राप्ति हो जाती है।
- किसी विषय की इच्छा के प्रति हमारी जो भी भावना या विचार चलते हैं वह सभी मार्ग का रूप ले लेती है और इन्हीं विचारों के मार्गों से होकर ही हम उसे इच्छा की पूर्ति कर पाते हैं अतः किसी इच्छा के प्रति जितने कम विचार चलेंगे उतनी ही सरल और छोटी यात्रा होगी।
- विश्वास सजीवता के लिए एक ऊर्जा संचारित करने का सशक्त माध्यम होता है यदि विश्वास तनिक भी ढीला हुआ या कमजोर हुआ तो ऊर्जा संचार भी कमजोर होने लगता है।
- प्रकृति विकलांगता को नहीं सक्षमता को जन्म देती है, मनुष्य अपनी चाहत और इच्छाओं के बस में होकर एक दूसरे पर निर्भर होते हुए विकलांग हो गया।
- किसी पीड़ित व्यक्ति की पीड़ा निरर्थक नहीं होती बल्कि उसके आंतरिक जमीन को उपजाऊ बनाने की क्रिया होती है जिस पर आगे सृजन होता है।
- जीव की अपने स्वाभाविक जीवन शैली में मिलन होने से जो इच्छा उत्पन्न होती है वह अपनी ही मृदा को सिद्धांत करने के लिए एक वैज्ञानिक इलेक्ट्रान बना देती है वही इलेक्ट्रान यंत्र की तरह उस कार्य को पूर्ण कराता है।

ध्यान आध्यात्मिक प्राप्ति के साथ विषय प्राप्ति का विज्ञान

अशोक मानव

1. M-MEDITATION ध्यान-

ध्यान एक प्राकृतिक क्रिया है जो जीवन में किसी भी समय हो जाता है। प्राकृतिक गति में आ जाना ही ध्यान है। ध्यान जब किया जाता है तब व्यक्ति किसी एक विषय पर केंद्रित हो जाता है। जिसके बाद विषय में जैसा उतार-चढ़ाव आता है उसी की गति बन जाती है। जब तक वह पूरा नहीं हो जाता है तब तक व्यक्ति का ध्यान (खिचावा) उसी तरह बना रहता है। जो ध्यान स्वभाविक होते हैं वह जब कोई व्यक्ति, विषय, वस्तु, अच्छी लगती है तो व्यक्ति बार-बार उसी को देखना लगता है, उसी के बारे में सोचने लगता है, उसका मन एक विषय पर केंद्रित होकर प्राकृतिक गति में गतिमान हो जाता है। इसी को स्वाभाविक ध्यान कहते हैं। मन समय की गति है जो कभी रुका नहीं हैं। उसका प्राकृतिक गति में गतिमान हो जाना ही ध्यान है। आध्यात्मिक ध्यान में व्यक्ति एक ईष्ट बनाकर उसके ऊपर ध्यान करता है तो मन के केंद्रित हो जाने के बाद वह प्राकृतिक गति में गतिमान हो जाता है जो सुख में दृश्य को भी देखने

'ध्यान जिस विषय के लिए केंद्रित होता है उसी विषय को पूर्ण करने का ईधन जोड़कर विषय का पूर्ण विज्ञान बनाता है।'

लगता है या प्रवृत्ति के अनुसार अपने विषय की सूक्ष्मता को देखने लगता है। जब किसी विषय को बनाकर ध्यान करते हैं तो ईष्ट की ऊर्जा जो ध्यान के चुंबकत्व से मिलती है अपने विषय के बीज के लिए प्रवृत्ति की गंध मिलकर विषय का सूक्ष्म बीज बना देती है

4M + NM – 4M = NM

जब किसी विषय को बनाकर ध्यान करते हैं तो इष्ट की ऊर्जा जो ध्यान के चुंबकत्व से मिलती है और अपने विषय के बीज के लिए प्रवृत्ति की गंध मिलकर विषय का सूक्ष्म बीज बना देती है।

प्रकृति में जहां से अपना निर्माण कर सकता है वहीं पर स्थापित हो जाता है। यह प्रक्रिया पूरी होने के बाद व्यक्ति का ध्यान दूसरे विषय की तरफ चला जाता है। आध्यात्मिक ध्यान में व्यक्ति जिस विषय के लिए केंद्रित हो जाता है उस विषय की सूक्ष्म और सही जानकारी जानने लगता है। जिसकी तरफ उसका मन प्राकृतिक गति में स्वागत इमान हो जाता है। चाहे वह अध्यात्मिक विषय हो या जीवन से संबंधित उसे वह देख सकता है और इच्छित विषय बनाकर ईष्ट की ऊर्जा चुंबकत्व से प्राप्त करके उसका निर्माण कर सकता है। जो व्यक्ति किसी भी विषय पर ध्यान करता है तो उसका मन उस विषय पर केंद्रित होने के बाद उसका मन उस विषय का सूक्ष्म मार्ग देख लेता है जिस पर मन स्वतः गतिमान हो जाता है और विषय को पूरा करने के लिए विषय से ऊर्जा लेकर अपनी ऊर्जा में मिलाकर विषय निर्माण की बिजीय रचना कर देता है जो समय आने पर परिणाम दिखाई पड़ने लगता है।

सोना भी एक प्राकृतिक ध्यान है जिसमें व्यक्ति का मन प्राकृतिक गति में आ जाता है। पहले अपने विषय में आने वाली रुकावट नकारात्मक ऊर्जा को खत्म करता है जिससे शरीर की थकान दूर होती है, जिससे शरीर चैतन्य होकर पुनः कार्य करने योग्य हो जाता है फिर भविष्य को देखकर उसके निर्माण हेतु उधर छोड़ने की क्रिया करता है। आध्यात्मिक ध्यान और विषय का ध्यान किया जाता है पर प्राकृतिक ध्यान स्वतः किसी भी जीव पदार्थ या विषय पर केंद्रित हो जाता है जो प्राकृतिक गति में कर देता है जब तक उसका निर्माण पूरा नहीं हो जाता तब तक व्यक्ति उसी के बारे में सोचता रहता है। निर्माण होने के बाद उसका ध्यान वहां से हट जाता है। यह निर्माण प्राकृतिक निर्माण है जो प्रकृति अपने विषय को पूरा करने के लिए स्वतः कर लेती है।

2. M- MATERIAL- पदार्थ- पदार्थ जिस पर व्यक्ति ध्यान केंद्रित करता है, यह पदार्थ, विषय, जीव अथवा ईष्ट (आध्यात्मिक देव रूप) हो सकता है। यह सूक्ष्म रूप अथवा दृश्य मान रूप भी हो सकता है।

3.M- MAGNETISM- चुंबकत्व- जब व्यक्ति पदार्थ, विषय, या जीव पर ध्यान करता है तो पदार्थ पर अपनी उर्जा रुकने से चुंबकत्व उत्पन्न हो जाता है जो अपनी उर्जा पदार्थ पर पड़ने से उर्जा निकल कर अपनी तरफ आने लगती है, आंखों में उसका रेखांकित चित्र बन जाता है जिसमें बनाए गए विषय में अपनी उर्जा मिलाकर एक विषय आत्मक बीज रूप की रचना करता है। जब बीज की पूर्ण रचना हो जाती है तो विषय से मन हट जाता है।

4. M – MATER – विषय – पदार्थ पर ध्यान क्रिया करने से जो चुंबकत्व उत्पन्न होता है उसमें पदार्थ और व्यक्ति दोनों की ऊर्जा मिल जाती है। जिससे नए विषय की बिजीय रचना हो जाती है जो समय आने पर प्रकृति में स्थापित होकर विषय को पूरा करता है।

N- NEW – नया – ध्यान क्रिया नए विषय का निर्माण होता है इसी प्रकार प्रकृति में नए गुणों का विस्तार होता है। इस प्रकार प्रकृति का विस्तार होता है।

M – MATERIAL – पदार्थ- ध्यान क्रिया प्राकृतिक रूप से सभी जीवो में होती है इसी से प्रकृति में नए पदार्थों का निर्माण होता है।

जब 4M से +NM बनता है तब -4M कट जाता है और NM अर्थात नए पदार्थ का निर्माण होता है उत्तर NM बचता है ।

4M अर्थात MEDITATION ध्यान M-MATERIAL, पदार्थ पर होता है तो M चुंबकत्व उत्पन्न होता है। जिसके परिणाम स्वरूप ध्यान करने वाले की ऊर्जा (जिस प्रवृत्ति की होती है) और जिस पदार्थ का ध्यान किया जाता है उसकी ऊर्जा एक दूसरे में मिल जाती है। जिससे M - MATER विषय का निर्माण होता है। इसमें जिस पर आकृष्ट होकर ध्यान किया जाता है उसकी ऊर्जा ज्यादा ताकतवर होने के कारण विषय का नेतृत्व करती है उसका गुण अधिक होता है। इस क्रिया से N - NEW नया M - MATERIAL पदार्थ तैयार हो जाता है। इस प्रक्रिया से दोनों गुणों की गुणात्मक गंध हवा बनकर एक नए विषय का रेखांकित बिजीय रचना बन जाती है जिससे दोनों की प्रवृत्ति की ऊर्जा और (आभा) बनकर रोक लेती है। वह बिजीय रचना हवा में घूमती रहती है जहां अपने उत्पन्न होने की जमीन और जलवायु पाती है वहां स्थापित होकर नए जीवन की रचना करके अथवा किसी जीव में स्थापित होकर नए पदार्थ को बनाती है। इस क्रिया से प्रकृति में नए-नए पदार्थों का विस्तार होता रहता है। जब बिजीय रचना तैयार हो जाती है तो उस विषय से ध्यान हट जाता है जिससे -4M कट जाता है और NM उत्तर बचता है जिससे नए पदार्थ का बीज बन जाता है। जो समय आने पर जहां स्थापित होता है वहां अपना गुण स्थापित करके अपने गुणों का नया पदार्थ बनाने की क्रिया करता है जो उस पदार्थ में उसी गुण की गंध बनाता है जिससे वही गंध निकलने लगती है। जीवन का कार्यकाल पूरा हो जाता है तो शरीर प्रकृति में विलीन होकर नए पदार्थ में परिवर्तित हो जाता है।

प्रश्न हमारे
उत्तर श्री अशोक मानव जी के

प्रश्न :- प्रेम क्या है? यह हमारे लिए कितना उपयोगी है?

उत्तर :- प्रेम बाह्य जगत से हमारे ऊपर थोपी जाने वाली वह अवस्था है जो हमारा शोषण करने का कार्य करती है और हमारे भीतर रासायनिक मिलान करके हमारे अस्तित्व को मिटाने का कार्य करने लगती है।

प्रश्न :- दर्द क्या है? और इसका जीवन पर क्या असर होता है?

उत्तर :- दर्द एक ऐसी अवस्था है जो की इंसान के भीतर से मोह और बंधन का अंत करता है यदि शारीरिक दर्द है तो किसी रोग या बीमारी को खत्म करने का कार्य करता है और आत्मिक दर्द है तो वह मोह माया के बंधन को खत्म करने का कार्य करता है।

प्रश्न :- विषय का निर्माण कैसे होता है ?

उत्तर :- किसी विषय का निर्माण सकारात्मक, नकारात्मक के मिलने से होता है। यदि 10 में 9 गलत है तो एक सही होगा। 10 गलत होने पर उसका अंत हो जाएगा। सही देखने पर सकारात्मकता बढती है , जो जीवन में ख़ुशी बढ़ाती है ।

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो
पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा।
आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं

डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई), कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ० प्र०
ईमेल - info@parkritimail.com, editor.prakritimail@gmail.com

शिक्षा का महत्व

अभय सिंह

साक्षरता वह शक्ति है जो हमें ज्ञान और समझ की ओर बढ़ाती है। यह उन्नति की ओर कदम बढ़ाने में मदद करता है और समाज को विकसित करने का माध्यम बनता है। अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस हर साल विश्व भर में शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देता है और शिक्षा के साथ अनपढ़ की समस्या को हल करने के लिए उपायों की ओर बढ़ा देता है।

शिक्षा मानव समाज की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है, और इसका महत्व अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर और भी अधिक महसूस होता है। 8 सितंबर को मनाया जाने वाला यह दिन शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करता है और शिक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने का एक महत्वपूर्ण मौका प्रदान करता है।

साक्षरता वह शक्ति है जो हमें ज्ञान और समझ की ओर बढ़ाती है। यह उन्नति की ओर कदम बढ़ाने में मदद करता है और समाज को विकसित करने का माध्यम बनता है। अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस हर साल विश्व भर में शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देता है और शिक्षा के साथ अनपढ़ की समस्या को हल करने के लिए उपायों की ओर बढ़ा देता है। शिक्षा न केवल ज्ञान का स्रोत होती है, बल्कि यह एक व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक, और व्यक्तिगत विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए हमें इसे प्राथमिकता देनी चाहिए और साक्षरता के अभाव को दूर करने के लिए साझा कदम बढ़ाना चाहिए।

इस अवसर पर हमें यह भी याद रखना चाहिए कि शिक्षा केवल पढ़ाई-लिखाई से ही सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारी सोच, समझ, और सहयोग की क्षमता को भी बढ़ावा देती है। साक्षरता के माध्यम से हम एक बेहतर और ज्ञानवर्धन युग की ओर बढ़ सकते हैं।"साक्षरता के महत्व को समझने के साथ ही, अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस का मूल उद्देश्य शिक्षा को सभी के लिए पहुंचाना है। इसके लिए विश्वभर में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने और साक्षरता के अभाव को कम करने के लिए कई प्रमुख पहलुओं पर काम किया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस की स्थापना 1966 में की गई थी, जब संयुक्त राष्ट्र ने शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करने के लिए ग्लोबल साझा संकल्प बनाया। यह संकल्प शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार करने और शिक्षा के प्रति अधिक लोगों को पहुंचाने के लिए आवश्यक कदम उठाने का माध्यम था। अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस का यह संकल्प आज भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि विश्वभर में अब भी करोड़ों लोग असाक्षर हैं। इसके बावजूद, शिक्षा के क्षेत्र में सुधार हुआ है, और अधिक लोगों को शिक्षित बनाने के लिए उन्हें सामर्थ्य और समर्थन प्रदान किया जा रहा है। इस दिन पर, हमें यह समझना चाहिए कि शिक्षा केवल एक व्यक्ति के विकास में ही नहीं, बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हमें साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए उपायों को समझना और उन्हें समर्थन देना

आजकल की दुनिया में तकनीकी और डिजिटल शिक्षा का महत्व भी बढ़ चुका है, और अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस हमें इस परिवर्तन के साथ कदम मिलाने की आवश्यकता को समझाता है। डिजिटल साक्षरता भी एक महत्वपूर्ण विषय है जिसका हम सभी को सामर्थ्य बनने का अवसर मिलना चाहिए।

चाहिए ताकि हम एक शिक्षित और साक्षर समाज की ओर कदम बढ़ा सकें।'

इस प्रकार, अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस शिक्षा के महत्व को प्रमोट करने और साक्षरता की ओर एक महत्वपूर्ण कदम होता है। यह दिन हमें यह सिखाता है कि शिक्षा ही हमारे समृद्धि और समृद्धि की कुंजी है।इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस हमें शिक्षा के अधिक सुलभ और गुणवत्तापूर्ण उपलब्ध होने की आवश्यकता को भी स्मरण दिलाता है। शिक्षा के लिए उचित संसाधनों की उपलब्धता और शिक्षा से जुड़ी अन्य सुविधाओं का समर्थन साक्षरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण होता है।

आजकल की दुनिया में तकनीकी और डिजिटल शिक्षा का महत्व भी बढ़ चुका है, और अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस हमें इस परिवर्तन के साथ कदम मिलाने की आवश्यकता को समझाता है। डिजिटल साक्षरता भी एक महत्वपूर्ण विषय है जिसका हम सभी को सामर्थ्य बनने का अवसर मिलना चाहिए। हमें युवाओं को शिक्षित बनाने का समर्थन देना चाहिए और उन्हें शिक्षा के महत्व को समझाने में मदद करना चाहिए।

इस अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर हम सभी को यह प्रतिबद्ध रहना चाहिए कि हम शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देंगे और साक्षरता को फैलाने के लिए हम अपना योगदान देंगे। इस तरह से हम एक बेहतर और ज्ञानवर्धन समाज की ओर कदम बढ़ा सकते हैं और विश्व को एक और बेहतर मानवता का मार्ग दिखा सकते हैं।' इस अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के मौके पर, हम सभी को शिक्षा के महत्व को अपने जीवन में मान्य करने की प्रतिज्ञा लेनी चाहिए और साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए हमारे योगदान को बढ़ावा देना चाहिए। बिना शिक्षा के एक समाज का विकास संभव नहीं हो सकता है। इन देशों ने शिक्षा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं ताकि उनके नागरिकों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा का पहुंचा सके।

भारत: भारत ने 'सर्व शिक्षा अभियान' जैसे पहलों के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इस प्रोग्राम का उद्देश्य है कि सभी बच्चों को 14 वर्ष की आयु तक मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जाए। भारत डिजिटल साक्षरता के महत्व को समझता है और विशेष रूप से दूरवाणी क्षेत्रों में डिजिटल शिक्षा संसाधित करने का काम कर रहा है।

चीन: चीन ने अपने शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण सुधार किए हैं, जिसमें शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित है। उन्होंने शिक्षा का पहुंच बढ़ाया, छात्रों की छूट की दर को कम किया है, और शिक्षक प्रशिक्षण में सुधार किया है। चीन डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में भी नवाचार कर रहा है, ताकि उनके छात्रों के लिए शिक्षा अनुभवों को सुधारा जा सके।

संयुक्त राज्य अमेरिका: संयुक्त राज्य अमेरिका शिक्षा को महत्वपूर्ण मानता है और इसमें भारी निवेश करता है। उनके पास विशेष शिक्षा कार्यक्रम है जिससे विकलांग छात्रों को उचित समर्थन प्रदान होता है। इसके अलावा, उनके पास विभिन्न प्रकार के शिक्षा संस्थान हैं, जैसे की प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से लेकर व्यावासिक विद्यालय तक, जो विभिन्न शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

स्वीडन: स्वीडन अपने शिक्षा में नवाचारी और अनुसंधान-मुख दृष्टिकोण के लिए प्रसिद्ध है। वे कौशल विकास को प्रोत्साहित करते हैं और शिक्षा के विशेषज्ञों का समर्थन करते हैं। स्वीडन डिजिटल साक्षरता को भी महत्वपूर्ण मानता है, शिक्षा कक्षों में प्रौद्योगिकी को शिक्षा के अवसरों को सुधारने के लिए बढ़ावा देने के लिए उपयोग कर रहा है।

इसके अलावा, यूनेस्को इंस्टीट्यूट फॉर स्टैटिस्टिक्स और अन्य संगठन वैश्विक साक्षरता दरों और शैक्षिक प्रगति को निगरानी में रखते हैं, जिससे सूचित नीति निर्धारण और लक्षित हस्तक्षेपों के लिए मूल्यवान डेटा प्रदान किया जाता है। दुनिया भर के देशों के मिलकर काम करने के प्रयास, अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के माध्यम से एक और शिक्षित और सशक्त वैश्विक जनसंख्या को उत्पन्न करते हैं, जो प्रगति और विकास को बढ़ावा देते हैं। दुनिया भर के देशों में साक्षरता को बढ़ावा देने

के लिए विभिन्न नीतियों का पालन किया जा रहा है। इन नीतियों का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करना और साक्षरता दरों को बढ़ाना है। यहां कुछ देशों की नीतियों के बारे में जानकारी हैः

भारतः भारत ने अपने शिक्षा क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण नीतियाँ लागू की है, जैसे कि 'सर्व शिक्षा अभियान' और 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'। इन नीतियों के माध्यम से, भारत ने शिक्षा की पहुंच बढ़ाई है और बच्चों को शिक्षित बनाने के लिए प्रोत्साहित किया है।

चीनः चीन ने अपने शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं, जैसे कि विशिष्ट शिक्षा कार्यक्रमों की शुरुआत, जिनका उद्देश्य उच्च शिक्षा में पहुंच को बढ़ावा देना है। चीन ने डिजिटल शिक्षा को भी महत्वपूर्ण बनाया है और तकनीकी उपकरणों का उपयोग शिक्षा में बढ़ावा देने के लिए किया जा रहा है।

संयुक्त राज्य अमेरिकाः संयुक्त राज्य अमेरिका में शिक्षा पर नीतियों का बड़ा महत्व है। वे विशिष्ट शिक्षा कार्यक्रम और शिक्षा के लिए सामर्थ्य विकल्पों का समर्थन करते हैं, ताकि हर छात्र के लिए शिक्षा के माध्यम से समर्थन प्रदान किया जा सके।

स्वीडनः स्वीडन ने शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारी नीतियाँ अपनाई हैं, जैसे कि छात्रों के लिए विविध पाठ्यक्रम और व्यावसायिक प्रशिक्षण का प्रदान करना। उन्होंने डिजिटल साक्षरता को भी महत्वपूर्ण बनाया है और शिक्षा में प्रौद्योगिकी का उपयोग शिक्षा के अवसरों को सुधारने के लिए किया जा रहा है।

ये कुछ उदाहरण हैं, लेकिन दुनिया भर में कई और देश हैं जो शिक्षा के क्षेत्र में नीतियों का पालन कर रहे हैं और साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठा रहे हैं। ये नीतियाँ उन्नति और विकास को समर्थन प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण होती हैं और साक्षरता को बढ़ावा देने में मदद करती हैं।

फ़्रांसः फ़्रांस ने अपने शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने के लिए नीतियों में सुधार किए हैं। उन्होंने शिक्षा को डिजिटल माध्यमों के माध्यम से प्रोत्साहित किया है और शिक्षा संस्थानों को तकनीकी आधार पर मजबूती दी है।

जापानः जापान ने शिक्षा में गुणवत्ता के लिए अद्यतन नीतियों का पालन किया है। उन्होंने विशिष्ट शिक्षा कार्यक्रमों को मजबूती दी है और विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपने छात्रों के लिए नवाचारिक अवसर प्रदान किए हैं।

ब्राजीलः ब्राज़ील ने अपने शिक्षा प्रणाली को सुधारने के लिए नीतियों का पुनरावलोकन किया है। वे गरीब और अल्पसंख्यक समुदायों के लिए शिक्षा के लिए विशेष योजनाएँ बना रहे हैं ताकि साक्षरता दरें बढ़ सकें।

साउथ कोरियाः साउथ कोरिया शिक्षा में अद्यतनीकरण के प्राधान्यक्रम के रूप में नवाचारिक नीतियाँ अपनाता है। वे शिक्षा को तकनीकी तरीकों से बेहतर बनाने के लिए विभिन्न शिक्षा तंत्रों का उपयोग करते हैं और विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में छात्रों को प्रेरित करते हैं। इन नीतियों का पालन करके देश अपने शिक्षा प्रणाली को सुधार सकते हैं और साक्षरता को बढ़ावा दे सकते हैं, जिससे समृद्धि और विकास की ओर बढ़ा जा सकता है।

दुनिया भर में कई देशों के शिक्षा प्रणाली हैं, लेकिन निम्नलिखित पांच देश अपने उच्च शिक्षा प्रणालियों के लिए प्रसिद्ध हैंः

संयुक्त राज्य अमेरिकाः अमेरिका का शिक्षा प्रणाली बहुत विविध है और विशेष विश्वविद्यालयों, साइंस और टेक्नोलॉजी स्कूलों, और व्यावसायिक स्कूलों की विशेषता में है। उनके शिक्षा प्रणाली का मुख्य विशेषता है छात्रों को अपनी रुचि के हिसाब से पढ़ाने की छूने की स्वतंत्रता।

कनाडाःकनाडा अपने गुणवत्ता और अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयों के लिए प्रसिद्ध है। वह अपने छात्रों को बहुतायत कोर्स और अध्ययन की स्वतंत्रता प्रदान करता है।

जर्मनीः जर्मनी का शिक्षा प्रणाली तकनीकी शिक्षा और अनुसंधान पर जोर देता है, जिससे विश्वविद्यालयों और संस्थानों को अच्छे विज्ञानकेंद्र बनाने में मदद मिलती है।यह उच्च शिक्षा को फ्री में प्रदान करता है, जिससे विद्यार्थियों को शिक्षा का सस्ता पहुंच होता है।

ब्रिटेनः यूनाइटेड किंगडम के विश्वविद्यालय बहुत प्रसिद्ध हैं और विशेषता क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करते हैं। इसके शिक्षा प्रणाली में अनुसंधान और नवाचार को महत्व दिया जाता है।

ऑस्ट्रेलियाःऑस्ट्रेलिया अपने आवासीय विश्वविद्यालयों के लिए प्रसिद्ध है, और विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय अनुभव प्रदान करता है। यह अपने छात्रों को गुणवत्ता और उच्च शिक्षा की बढ़ती मांग के लिए तैयार करता है।

इन देशों के शिक्षा प्रणालियों में विशेषता है, और हर देश अपने तरीके से शिक्षा को प्रोत्साहित करने और छात्रों को सशक्त बनाने के लिए कई योजनाएँ और प्रोग्राम्स चलाता है।

अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के बारे में और कुछ महत्वपूर्ण बातें हैंः

साक्षरता के महत्व का प्रमोशनः यह दिन साक्षरता के महत्व को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। यह लोगों को साक्षरता के महत्व के प्रति जागरूक करता है और उन्हें शिक्षा की प्राप्ति के महत्व को समझने में मदद करता है।

शिक्षा के अधिकार का उल्लंघनः इस दिन को बच्चों और युवाओं को शिक्षा के अधिकार को मिलने चाहिए, और शिक्षा के लिए न्यायपूर्ण और समर्पित प्रसासनिक संरचनाओं की मांग करने के रूप में भी उपयोग किया जाता है।

साक्षरता की अवस्था का मूल्यांकनः इस दिन पर विश्वभर में साक्षरता की अवस्था का मूल्यांकन किया जाता है। इसके लिए विभिन्न गवर्नमेंट्स और संगठन जानकारी और आंकड़े जारी करते हैं जो शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे हाल के प्रगति को दर्शाते हैं।

AI के नैतिक निहितार्थों का अन्वेषण

अक्षय कुमार

वर्ष 2022 में दो शोधकर्त्ताओं ने डेल्फ़ी (Delphi)–जो मानव नैतिक निर्णयों के मॉडलिंग के लिये एक प्रोटोटाइप है, का उपयोग कर आबद्ध नैतिकता (Bounded Ethicality) पर शोध किया। उन्होंने पाया कि डेल्फ़ी जैसी मशीनें अनैतिक रूप से कार्य कर सकती हैं यदि परिदृश्य इस तरह से तैयार किया गया हो जो नैतिकता को स्वयं कार्यकरण से पृथक रखता हो।

निर्णय प्रक्रिया में, विशेष रूप से शासन (governance) के मामले में, मानवों की सहायता के लिये मशीनों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence- AI) का उपयोग दिनानुदिन बढ़ता ही जा रहा है। नतीजतन, कई देश अब AI विनियमन लागू कर रहे हैं। सरकारी एजेंसियाँ और नीति निर्माता जटिल पैटर्न का विश्लेषण करने, भविष्य के परिदृश्यों का पूर्वानुमान लगाने और अधिक सूचना-संपन्न अनुशंसाएँ प्रदान करने के लिये AI-संचालित टूल्स का लाभ उठा रहे हैं।

हालाँकि, निर्णय लेने में AI के उपयोग के साथ कई चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। AI में इसके द्वारा लर्न किये गए डेटा या इसके क्रिएटर्स के दृष्टिकोण से प्रभावित अंतर्निहित पूर्वाग्रह भी हो सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप अनुचित परिणाम उत्पन्न हो सकते हैं, जो शासन में AI का प्रभावी ढंग से उपयोग करने में एक महत्त्वपूर्ण बाधा उत्पन्न कर सकते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) क्या है?

परिचय

AI किसी कंप्यूटर या कंप्यूटर द्वारा नियंत्रित रोबोट की उन कार्यों को कर सकने की क्षमता है जो आम तौर पर मानवों द्वारा किये जाते हैं, क्योंकि उनके लिये मानव बुद्धि एवं विवेक की आवश्यकता होती है।

हालाँकि ऐसा कोई AI नहीं है जो एक सामान्य मानव द्वारा किये जाने वाले विभिन्न प्रकार के कार्यों को कर सकें, लेकिन कुछ AI कुछ विशिष्ट कार्यों में मानवों की बराबरी कर सकते हैं।

विशेषताएँ एवं घटक

AI की आदर्श विशेषता है इसकी तर्कसंगतता और ऐसी कार्रवाई कर सकने की क्षमता जिससे किसी विशिष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने का सर्वोत्तम अवसर प्राप्त होता है। मशीन लर्निंग (Machine Learning- ML) AI का एक सबसेट या उपसमूह है।

डीप लर्निंग तकनीक (Deep Learning- DL) टेक्स्ट, इमेज या वीडियो जैसे बड़ी मात्रा

में असंरचित डेटा के अवशोषण के माध्यम से इस स्वचालित लर्निंग को सक्षम बनाती है।

विभिन्न श्रेणियाँ:

वीक AI/ नैरो AI

स्ट्रॉन्ग AI

AI कुछ दार्शनिक विचारों से कैसे संबंधित है?

कांटवादी नैतिक दर्शन:

इमैनुएल कांट (Immanuel Kant) का नैतिक दर्शन तीन प्रमुख सिद्धांतों पर बल देता है:

स्वायत्तता (Autonomy)—स्वयं का निर्णय ले सकने की क्षमता,

तर्कसंगतता (Rationality)—विकल्प के चयन के लिये तर्क एवं कारण का उपयोग करना, और

नैतिक कर्तव्य (Moral Duty)—नैतिक दायित्वों का पालन करना।

शासन में AI का अनुप्रयोग: निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को AI प्रणालियों को सौंपने का कार्य सूक्ष्म नैतिक तर्क की क्षमता को नष्ट करने का जोखिम रखता है। मानवों के बजाय मशीनों को निर्णयन का कार्य सौंपना कांटवादी नैतिकता के महत्त्वपूर्ण विचारों को कमज़ोर कर सकता है।

आबद्ध नैतिकता:

वर्ष 2022 में दो शोधकर्त्ताओं ने डेल्फ़ी (Delphi)—जो मानव नैतिक निर्णयों के मॉडलिंग के लिये एक प्रोटोटाइप है, का उपयोग कर आबद्ध नैतिकता (Bounded Ethicality) पर शोध किया। उन्होंने पाया कि डेल्फ़ी जैसी मशीनें अनैतिक रूप से कार्य कर सकती हैं यदि परिदृश्य इस तरह से तैयार किया गया हो जो नैतिकता को स्वयं कार्यकरण से पृथक रखता हो।

इससे पता चलता है कि आबद्ध नैतिकता का मशीनी संस्करण वैसे ही कार्य करता है जैसे मानव कई बार बिना ग्लानि अनुभव किये और प्रायः औचित्य (justification) का उपयोग करते हुए अपनी नैतिकता के विरुद्ध कार्य करते हैं।

नोट: आबद्ध नैतिकता लोगों की नैतिक विकल्प चुनने की क्षमता है जो आंतरिक एवं बाह्य दबावों के कारण प्रायः सीमित या प्रतिबंधित होती है।

असिमोव के 'रोबोटिक्स के तीन नियम' के समानांतर:

असिमोव (Issac Asimov) के 'रोबोटिक्स के तीन नियम' (Three Laws of Robotics) रोबोटों को नैतिक रूप से व्यवहार करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करने के लिये प्रस्तुत किये गए थे। हालाँकि, असिमोव के काल्पनिक परिदृश्यों में इन नियमों के परिणामस्वरूप प्रायः अप्रत्याशित और विरोधाभासी परिणाम सामने आये, जो नैतिक रूप से कार्य करने के लिये डिज़ाइन की गई मशीनों में भी नैतिक निर्णय लेने की जटिलता को प्रदर्शित कर रहे थे।

कांट और असिमोव का अंतर्संबंध:

तर्कसंगत नैतिक एजेंसी (Rational Moral Agency) पर कांट का ज़ोर और रोबोट के लिये नैतिक दिशानिर्देशों की असिमोव की काल्पनिक खोज आपस में संबद्ध हैं। यह संयोजन उन नैतिक कठिनाइयों और जटिलताओं को प्रकट करने का कार्य करता है जो तब उत्पन्न होती हैं जब मानवीय ज़िम्मेदारियाँ और कार्य कृत्रिम संस्थाओं को सौंप दिये जाते हैं।

असिमोव के नियम:

प्रथम नियम: एक रोबोट किसी मानव (human being) को आघात नहीं पहुँचाए अथवा अक्रियता के माध्यम से किसी मानव को आघात पहुँचने की अनुमति नहीं दे;

द्वितीय नियम: एक रोबोट को मानवों द्वारा दिए गए आदेशों का पालन करना चाहिये, सिवाय इसके कि ऐसे आदेश प्रथम नियम के साथ टकराव की स्थिति में न हों;

तृतीय नियम: एक रोबोट को अपने अस्तित्व की रक्षा तब तक करनी चाहिये जब तक कि ऐसी रक्षा प्रथम या द्वितीय नियम के साथ टकराव की स्थिति में न हो।

असिमोव ने बाद में एक और नियम जोड़ा, जिसे चतुर्थ या शून्यवाँ (zeroth) नियम कहा जाता है, जो अन्य तीनों नियमों पर अधिभावी है। इसमें कहा गया है कि ''एक रोबोट मानवता (Humanity) को आघात नहीं पहुँचाए अथवा अक्रियता से मानवता को आघात पहुँचने की अनुमति नहीं दे।''

AI से संबद्ध नैतिक चुनौतियाँ

रोज़गार विस्थापन और सामाजिक-आर्थिक प्रभाव: AI द्वारा संचालित स्वचालन (Automation) से कुछ उद्योगों में रोज़गार विस्थापन की स्थिति बन सकती है। बेरोज़गारी और आय असमानता सहित परिणामी सामाजिक-आर्थिक प्रभाव, इन परिणामों को संबोधित कर सकने में सरकारों और संगठनों की ज़िम्मेदारियों के बारे में नैतिक प्रश्न खड़ा करता है।

नैतिक तर्क के लिये खतरा: जब परंपरागत रूप से मनुष्यों द्वारा लिये जाने वाले निर्णय एल्गोरिदम और AI को सौंप दिए जाते हैं तो इससे जोखिम उत्पन्न होता है कि नैतिक तर्क की क्षमता कमज़ोर पड़ेगी। इसका तात्पर्य यह है कि केवल AI पर निर्भर रहने से विचारशील नैतिक मनन में संलग्न होने की मानवीय क्षमता कम हो सकती है।

नैतिकता को संहिताबद्ध करने की चुनौतियाँ: नैतिकता को रोबोट या AI-संचालित सरकारी निर्णयों के लिये स्पष्ट नियमों में रूपांतरित करने का प्रयास एक चुनौतीपूर्ण कार्य के रूप में उजागर किया गया है। मानवीय नैतिकताएँ अत्यंत जटिल प्रकृति रखती हैं और इन जटिल विचारों को कंप्यूटर निर्देशों में सुसंगत करना कठिन है।

जवाबदेही और पारदर्शिता का अभाव: AI प्रणाली में कुछ गड़बड़ी होने पर ज़िम्मेदारी का निर्धारण करना कठिन सिद्ध हो सकता है,

विशेष रूप से जब इसमें जटिल एल्गोरिदम और निर्णय लेने की प्रक्रिया शामिल हो।

कई AI प्रणालियों की आंतरिक कार्यप्रणाली प्रायः अपारदर्शी होती है, जिससे यह समझना कठिन हो जाता है कि निर्णय किस प्रकार लिये जा रहे हैं। पारदर्शिता की इस कमी से उपयोगकर्त्ताओं के बीच अविश्वास और संदेह उत्पन्न हो सकता है।

सूचना-संपन्न सहमतिः AI सिस्टम का उपयोग संलग्न व्यक्तियों की जानकारी या सहमति के बिना व्यक्तिगत डेटा एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने के लिये किया जा सकता है। इससे सूचना-संपन्न सहमति (informed consent) और निजता के अधिकार (right to privacy) के बारे में चिंताएँ पैदा होती हैं।

क्या मशीनें या AI नैतिक निर्णय-निर्माता/कृत्रिम नैतिक एजेंट (AMAs) की स्थिति प्राप्त कर सकती हैं?

कुछ शोध दावा करते हैं कि मशीनें, एक तरह से, नैतिक दृष्टि से अपने कार्यों के लिये ज़िम्मेदार ठहराई जा सकती हैं। डार्टमाउथ कॉलेज के प्राध्यापक जेम्स मूर (James Moore) ने नैतिकता से संबंधित मशीन

मशीनें रोबोट जॉकी (robot jockeys) की तरह स्वयं नैतिक विकल्प का चयन नहीं करती हैं, लेकिन उनके कार्यों का नैतिक प्रभाव उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिये, वे किसी खेल (sport) के तरीके को बदल सकती हैं।

एजेंटों को चार समूहों में वर्गीकृत किया है:

नैतिक प्रभाव एजेंट (Ethical Impact Agents): ये मशीनें रोबोट जॉकी (robot jockeys) की तरह स्वयं नैतिक विकल्प का चयन नहीं करती हैं, लेकिन उनके कार्यों का नैतिक प्रभाव उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिये, वे किसी खेल (sport) के तरीके को बदल सकती हैं।

अंतर्निहित नैतिक एजेंट (Implicit Ethical Agents): इन मशीनों में विमानों के ऑटोपायलट की तरह अंतर्निहित सुरक्षा या नैतिक नियम शामिल होते हैं। वे, सक्रिय रूप से यह तय किये बिना कि नैतिक क्या है, निर्धारित नियमों का पालन करते हैं।

स्पष्ट नैतिक एजेंट (Explicit Ethical Agents): ये निश्चित नियमों से परे जाते हैं। ये विकल्पों के नैतिक मूल्य का पता लगाने के लिये विशिष्ट तरीकों का उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिये, ऐसी प्रणालियाँ जो धन निवेश को सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ संतुलित करती हैं।

पूर्ण नैतिक एजेंट (Full Ethical Agents): ये मशीनें नैतिक निर्णय ले सकती हैं और उन्हें समझा सकती हैं। अच्छी नैतिक समझ वाले वयस्क और उन्नत AI इस श्रेणी में आते हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान में कई मशीनी पूर्वानुमान निर्णयन प्रक्रिया में मदद करते हैं, लेकिन अंतिम निर्णय अभी भी मानव द्वारा ही लिया जाता है। भविष्य में सरकारें मशीनों को सरल निर्णय लेने की अनुमति दे सकती हैं। लेकिन तब क्या किया जाएगा यदि मशीन द्वारा लिया गया निर्णय गलत या अनैतिक हो? कौन उत्तरदायी होगा? AI प्रणाली उत्तरदायी होगी या वह व्यक्ति/संस्था जिसने AI का निर्माण किया या वह व्यक्ति जिसने इसके डेटा का उपयोग किया?

ये ऐसे कुछ कठिन प्रश्न हैं जिनका सामना विश्व को करना पड़ेगा। मशीनों में नैतिकता का अधिरोपण कठिन है और हर किसी को आगे बढ़ने में सतर्कता बरतनी होगी।

सावन से हो जाती है त्यौहारों की शुरुआत

गोवर्धन दास बिन्नाणी
'राजा बाबू'
बीकानेर , राजस्थान

सावन माह सभी सनातनियों के लिये खुशी लेकर आता है। आज तो इस उम्र में उत्साह में अवश्य ही कमी आयी है। अतः बाहर जाना तो हो ही नहीं पाता है लेकिन, बचपन से चालीस पचास उम्र तक की याद करते ही मन खुशी से भर जाता है। हां यह अवश्य ध्यान रखता हूँ कि परिवार के सभी बच्चे हों या बड़े श्रावण महीने का पूरा आनन्द उठा लें । इसलिये सभी को बैठे बैठे प्रोत्साहित करता हूँ । श्रावण महीने में घर में स्थापित शिवलिंग पर सभी सबेरे सबेरे नहाने के पश्चात आसन पर बैठ जल अर्पण अवश्य करें इसका ध्यान रख, सभी इसकी पालना करें, यह निश्चित करता हूँ ।

श्रावण माह में बहुत त्यौहार आते हैं वो सभी पूरे उत्साह व उमंग से मनाये जायें इस ओर ही मेरा प्रयास रहता है। तालाब पानी से लबालब भरे रहते हैं। अतः सभी को छूट्टी में किसी न किसी तालाब के किनारे गोठ के लिये पहले से ही योजना बना लेने का तगादा कर, योजना तैयार करवा कर, उस दिन सभी साज सामान के साथ भेजने की व्यवस्था कर भेज देता हूँ । इसी तरह इस माह में पड़ने वाले सभी तीज-त्योहार पूरे उत्साह से सम्पन्न हो उस ओर भी पुत्र-पुत्री, वधुओं के साथ विचार-विमर्श पहले से ही कर, तय समय पर बढ़िया ढंग से सम्पन्न करवाने की जिम्मेदारी निभा लेने की लालसा रहती है।

श्रावण महीने में पन्द्रह दिनों तक मन्दिरों में झूलनोत्सव मनाया जाता है। झूलनोत्सव में भगवान का नित्य नया श्रृंगार किया जाता है। एक तरह से सभी मन्दिरों में प्रतिस्पर्धा सी चलती है। नित्य नये नये पकवान का भोग भी धराया जाता है। इसलिये मेरा प्रयास यही रहता है कि सभी बच्चे संध्या पश्चात परिवार के बड़े समझदार सदस्य के साथ मन्दिर अवलोकनार्थ जांय । घर लौटने पर मैं उनसे विस्तार से बताने को कहता हूं ताकि मेरा तो मन बहले ही साथ ही साथ उनमें भी अपनी संस्कृति की समझ बढ़े।

इसके अलावा सभी छोटे-बड़े सदस्यों को श्रावण महीने में पड़ने वाले एक सोमवार को व्रत कर लेना है इस ओर मैं पूरा पूरा प्रयास कर, सभी से यह कृत्य भी करवा लेता हूं। उपरोक्त के अलावा भी श्रावण माह में पड़ने वाले बहुत से त्यौहार/ उत्सव सामाजिक तौर पर पूरे उत्साह से सामूहिक मनाये जाते हैं।आप सभी की जानकारी के लिये यहां दो विशेष त्यौहार के बारे में संक्षेप में जानकारी सांझा कर रहा हूं -

सामूहिक तौर पर मनाये जाने वाले त्यौहार में नाग पंचमी एक प्रमुख उत्सव है। यह उत्सव विशेषकर गाँवों में बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। वाकायदा जीवित नाग की पूजा की जाती है। उस दिन औरतें उपवास भी रखती हैं। दूसरा त्यौहार है रक्षाबन्धन। यह त्यौहार भाई-बहनों के पवित्र रिश्ते को दर्शाता है। वैसे तो इस दिन साधारणतया बहनें अपने भाइयों को रक्षासूत्र बाँधती हैं। लेकिन अनेकों जगह पर शिक्षक भी अपने शिष्यों को रक्षासूत्र के माध्यम से ज्ञान परम्परा का निर्वहन करते हैं।इसी तरह पुरोहित (धार्मिक) भी समाज से रक्षा का संकल्प, रक्षासूत्र बाँध पूरा करते हैं। इस दिन साधारणतया श्रावणी कार्यक्रम होता है। यहां श्रावणी कार्यक्रम से मतलब है पवित्र नदियों व तीर्थ के तट पर आत्मशुद्धि का उत्सव। इस कर्म में आंतरिक व बाह्य शुद्धि गाय का गोबर, मिट्टी, भस्म, अपामार्ग, दूर्बा, कुशा एवं मंत्रों द्वारा की जाती है।इसलिए जो लोग जनेऊ धारण करते हैं वे श्रावणी पूर्णिमा के दिन धर्मावलंबी मन, वचन और कर्म की पवित्रता का सकंल्प लेकर जनेऊ बदलते हैं। प्रायः इस दिन जनेऊ के अनेक जोड़ों या कहिये दो तीन बण्डलों की पूजा कर रख लेते हैं और पूरे वर्ष में जब भी जनेऊ बदलना होता है तो इनमें से ही निकाल उपयोग कर लिया जाता है।

अगले माह पड़ने वाले जन्माष्टमी की तैयारी भी प्रायः प्रायः आज के दिन से ही शुरू हो जाती है। ऊपर उल्लिखित तथ्यों से यह स्पष्ट है कि श्रावण माह से त्यौहारों की शुरुआत हो जाती है। इसलिये ही यह माह सभी को आनन्ददायक ही नहीं करता बल्कि आने वाले त्यौहारों को धूमधाम से मना लेने के लिये प्रेरित भी करता है।

नासमझी का भुगतान

भारत विश्व की सबसे शक्तिशाली अर्थव्यवस्था में से एक की राह पर है। वहीं विश्व की सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था हम ही हैं। इसी क्रम में कुछ आकड़े ऐसे भी है जो हमारी दूसरी ही तस्वीर दिखाते है। साथ ही हमारी लापरवाही भी दर्शाते है। इनसे यह साबित होता है कि हम अर्थव्यवस्था मजबूत कर रहे हैं वहीं दूसरी तरफ यूंही पैसा बेकार कर रहे है। जब हम सरकारी दफ्तर, सड़कें, रास्ते में दीवारे आदि देखते है, सार्वजनिक स्थलों को देखते है तो बहुत कुछ समझ सकते है। नासमझ लोगों की चित्रकारी देश की छवि के साथ बहुत सा सरकारी पैसा बेवजह खर्च होता दिखता है। पान की पीक, तम्बाकू की छीटें, पान-मसाले के दाग, कचरा, पोस्टर, पॉलीथीन, आदि चीजें सरकार के अथक प्रयासों को बेदम कर देती हैं।

उमेश

हमारे पदचिह्न चाँद पर हैं और दृष्टि सूर्य पर। हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में अपनी पहचान बनाते है। हमारी संकल्प शक्ति और कर्मठता को देख दुनिया सिर झुकाती है। हमारे स्वाभिमान,धैर्य और साहस से सभी अचंभित रहते है। हम भारतवासियों को विश्व निहारता है। विश्व देख पाता है कि कैसे हम असंभव से दिखने वाले काम को हंसते-मुस्कुराते कर जाते है। हमारे व्यवहार की दुनिया कायल है। फिर भी कुछ ऐसा है जिसे हम जानकर भी सही नहीं कर पा रहे है। कुछ ऐसा जो हम पर दाग की तरह है। जिसके लिए हमारे प्रधान को भी सामने आकर अपील करनी पड़ती है। भारत

विश्व की सबसे शक्तिशाली अर्थव्यवस्था में से एक की राह पर है। वहीं विश्व की सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था हम ही हैं। इसी क्रम में कुछ आकड़े ऐसे भी है जो हमारी दूसरी ही तस्वीर दिखाते है। साथ ही हमारी लापरवाही भी दर्शाते है। इनसे यह साबित होता है कि हम अर्थव्यवस्था मजबूत कर रहे हैं वहीं दूसरी तरफ यूंही पैसा बेकार कर रहे है। जब हम सरकारी दफ्तर, सड़कें, रास्ते में दीवारे आदि देखते है, सार्वजनिक स्थलों को देखते है तो बहुत कुछ समझ सकते है। नासमझ लोगों की चित्रकारी देश की छवि के साथ बहुत सा सरकारी पैसा बेवजह खर्च होता दिखता है। पान की पीक, तम्बाकू की छीटें, पान-मसाले के दाग, कचरा, पोस्टर, पॉलीथीन, आदि चीजें सरकार के अथक प्रयासों को बेदम कर देती हैं।

इस प्रकार की गंदगी की सफाई में भी बहुत प्रयास लगते है। विश्व की सबसे तेज अर्थव्यवस्था को इन नासमझी की सफाई में बहुत बड़ा खर्च करना पड़ता है। ऐसे ही खर्चो में से एक का हिसाब रेलवे का आता है। अकेले रेलवे को 1200 करोड़ रुपये के आसपास का खर्च झेलना पड़ता है। लोगो द्वारा पान-मसाला खाकर की गई गंदगी आदि की सफाई के लिए। यही धन राशि सकारात्मक उद्देश्य में लगे तो कहना ही क्या। ऐसा ही बाकी सभी जगह भी है। ऐसी नासमझी में दोहरी मार पड़ती है। एक तरफ कुछ अच्छा करने में, लोगो के परिश्रम के बदले, गंदगी हटाने में नया करने में सभी कुछ में लागत आती है। हम अपने घरों को तो बहुत साफ देखना चाहते है पर हमारी मां हमारा देश इसके आंचल में गंदगी कैसे छोड़ देते है। इसपर किसी सरकार को नहीं बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को सोचना होगा। स्वयं को आईना दिखाना होगा, स्वयं में बदलाव लाना होगा। आखिर हम ये कर क्या रहे है? जिन चीजों का सेवन करके हम हर तरफ गंदगी बढ़ा रहे है। वह हमारे स्वास्थ्य के लिए भी बहुत हानिकारक है। 2020 में लंदन से प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में हर साल 15 लाख लोगों की मृत्यु हो जाती है केवल इसी पान-मसाला खुटखा आदि खा कर। रिपोर्ट बताती है कि भारत की 275 मिलियन आबादी तम्बाकू का सेवन

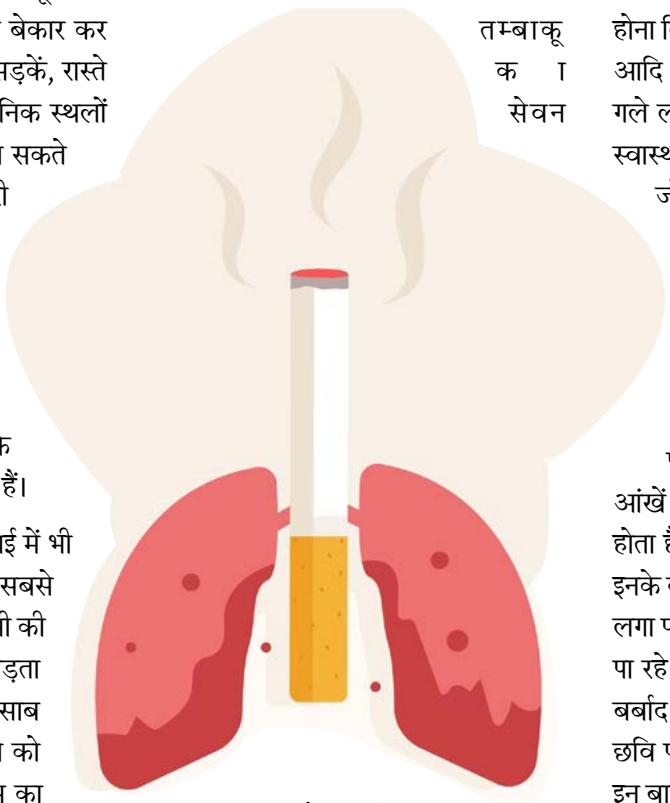

करती है जिसमें महिलाओं की भी अच्छी भागेदारी है। हम खुद अपनी सेहत को दरकिनार कर यह सब कर रहे है। संख्या अधिक भी हो सकती है क्योंकि दूर-दराज इलाकों तक सर्वे नहीं हो पाते।

भारत में पान-मसाले का व्यापार करीब 40,000 करोड़ रूपयों का है। आने वाले वर्षो में यह कई गुना बढेगा, ऐसा माना जा रहा है। तो क्या हम यह भी माने कि आने वाले समय में इन पदार्थो से होने वाली गंदगी में भी बढ़ोत्तरी देखी जायगी। मृत्युदर में इजाफा होगा। संस्थानों को और पैसा खर्च करना पड़ेगा ऐसी अनर्गल हरकतों पर। यह पैसा किसी अच्छे सामाजिक कार्यो में लगाया जा सकता था। विकास के लिए इस्तेमाल हो सकता था। बार-बार सफाई करने बार-बार सुधार करने में जो खर्च हो रहा वह रोका जा सकता है क्या? ताकि आगे की तरक्की में उस धन का उपयोग हो सके। जो बेहतर है उसे और बेहतर करने में! लोगों को और सुविधायें देने में जीवनस्तर सुधारने में इस धन का उपयोग होना कितना श्रेयकर है। पान-मसाला, गुटखा आदि खा कर लोग जानबूझकर मौत को गले लगा रहे। इन दिक्कतों को दूर करने में, स्वास्थ्य सुविधाएं देने में भी सरकारी खजाना जो हम आप के मेहनत की कमाई से आता है, खाली हो रहा है। जिसका कि इस्तेमाल और किसी ज्यादा अहम अनुसंधान या लोगो के लिए बेहतर चिकित्सा व्यवस्था बनाने में किया जा सकता है।

पान-मसाला बनाने वाले मालिको की आंखें बंद है। उन्हें इस काम से इतना मुनाफा होता है कि बाकी सब उनके लिए बेकार है। इनके कारखानें उत्पादन प्रक्रिया की जानकारी लगा पाना बहुत कठिन है। परन्तु जो हम जान पा रहे है वह यह कि हमारी मेहनत का पैसा बर्बाद हो रहा है, वह भी बेवजह। देश की छवि पूरे विश्व में खराब हो रही वह अलग। इन बातों का असर पर्यटन पर भी गहरा पड़ता है।

एक-दो बातों का असर नहीं मालूम होता पर इकट्ठा देखे तो यह देश के लिए और देशवासियों के लिए एक त्रासदी है। हम यदि अपने आप से यह कुछ प्रश्न करे कि क्या हम अपने प्रियजनों को यह जहर खाकर बीमार पड़ता देखना चाहते है? क्या हम अपनी मां का आंचल गंदगी से भरना चाहते है? क्या हम अपनी मेहनत का पैसा बेकार होता देखना चाहते है? और क्या हम अपने राष्ट्र के निर्माण में उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए सकारात्मक भूमिका निभाना चाहते है? चयन हमारा है, भविष्य हमारा होगा।

चित्रकूटः प्राकृतिक सौंदर्य और धार्मिक महत्व का संगम

मानवेंद्र

चित्रकूट का ऐतिहासिक महत्व है क्योंकि भगवान श्रीराम, माता सीता, और लक्ष्मण यहां पर 14 वर्षों तक वनवास बिताएं थे। इसके चलते, चित्रकूट गुफाएँ जगह-जगह पर हैं, जो यात्रीगण के लिए पूजा और ध्यान का स्थल हैं। चित्रकूट के ऐतिहासिक स्थलों में हनुमान धारा, गुफा, जानकी कुंड, सती अनुसूया का तपोवन, और भरत कुप शामिल हैं। यहां के प्राचीन मंदिर और गुफाएं दर्शनीय हैं, और यह स्थल भगवान श्रीराम की लीलाओं की स्मृतियों का अद्वितीय साक्षात्कार कराते हैं।

भारत का एक ऐतिहासिक और प्राकृतिक जगह चित्रकूट है, जो मध्य प्रदेश राज्य में स्थित है। यह स्थल अपने प्राकृतिक सौंदर्य, धार्मिक महत्व, और महत्वपूर्ण ऐतिहासिक आवश्यकताओं के लिए प्रसिद्ध है। चित्रकूट का नाम यहां के चित्रणी पत्थरों के कारण पड़ा है, जिनका कवर्चा यहां के पहाड़ों पर दिखाई देता है।

इस स्थल का ऐतिहासिक महत्व है क्योंकि भगवान श्रीराम, माता सीता, और लक्ष्मण जी यहां पर 14 वर्षों तक वनवास बिताएं थे। इसके चलते, चित्रकूट गुफाएँ जगह-जगह पर हैं, जो यात्रीगण के लिए पूजा और ध्यान का स्थल हैं। चित्रकूट के ऐतिहासिक स्थलों में हनुमान धारा, गुफा, जानकी कुंड w ,सती अनुसूया का तपोवन, और भरत कुप शामिल हैं। यहां के प्राचीन मंदिर और गुफाएं दर्शनीय हैं, और यह स्थल भगवान श्रीराम की लीलाओं की स्मृतियों का अद्वितीय साक्षात्कार कराते हैं। चित्रकूट के प्राकृतिक सौंदर्य भी अत्यधिक है। माँडकिनी नदी के किनारे स्थित, चित्रकूट ग्राम एक प्राकृतिक सौंदर्य का सागर है। यहां के पानी के फॉल्स, वन्यजीवन, और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने के लिए एक अद्वितीय स्थल हैं।

चित्रकूट का एक अन्य महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है चित्रकूट धाम, जो हिन्दू तांत्रिक धार्मिक अनुष्ठान के लिए प्रसिद्ध है। यहां पर आयुर्वेदिक चिकित्सा और योग का अध्ययन किया जा सकता है, और योग्य गुरुओं के मार्गदर्शन में मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की देखभाल की जा सकती है। चित्रकूट के स्थलीय बाजार में स्थानीय गर्मियों में बुनाई गई धार्मिक वस्त्र और चदरें खरीदने का अवसर प्राप्त होता है। यहां के स्थानीय खाने का स्वाद भी अद्वितीय है, और यहां पर आपको विभिन्न प्रकार के विशेष व्यंजन मिलेंगे।

चित्रकूट एक स्थल है जहां आपको आत्मा की शांति, ध्यान , और स्पिरिचुअलिटी का अनुभव हो सकता है। यहां पर शांति और

भरत मिलाप मंदिर, राम और भरत का मिलाप इस स्थान पर उस समय हुआ था।

आंतरिक सुख का अनुभव करने के लिए विशेष गुफाएँ हैं, जहां आप अपने मनोबल को बढ़ा सकते हैं और में शांति का आभास कर सकते हैं। यहां पर जाने के लिए सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च होता है, जब मौसम शांत और प्रिय होता है। धार्मिक महत्व के कारण, चित्रकूट में अधिकतर मान्यत्रित त्योहार और पर्व आयोजित होते हैं, जिनमें अधिकांश यात्री भाग लेते हैं।

चित्रकूट जाने के लिए आपको प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने के साथ-साथ भगवान श्रीराम की लीलाओं के बारे में जानकारी प्राप्त होती है, और यह धार्मिक और आध्यात्मिक अनुभव का एक सुंदर संगम स्थल है। चित्रकूट के इस अनुपम स्थल का दर्शन करने के बाद, आप भारतीय संस्कृति और धर्म की गहरी महत्वपूर्णता को समझ सकते हैं, और आत्मा की शांति और आंतरिक सुख की ओर एक कदम आगे बढ़ सकते हैं। चित्रकूट आपके लिए एक अद्वितीय और प्रेरणास्पद साहित्यिक और आध्यात्मिक यात्रा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकता है।

चित्रकूट की यात्रा को यादगार बनाने के लिए कुछ विशेष सुझाव निम्नलिखित हैं:

ध्यान और मेधाशक्ति का अभ्यास

चित्रकूट में आपको ध्यान और मेधाशक्ति का अभ्यास करने के अद्वितीय अवसर मिलता है। ध्यान के लिए समय निकालें और गुरु के मार्गदर्शन में शिक्षा प्राप्त करें।

स्थलीय खाद्य पदार्थ: चित्रकूट में विशेष रूप से स्थानीय खाने का स्वाद लें, जैसे कि पोहा, कचौड़ी, और मिठाईयाँ।

गुफा की यात्रा: चित्रकूट की गुफाएँ दर्शनीय हैं, इन्हें अवश्य देखें और यहाँ के ऐतिहासिक महत्व को समझें।

धार्मिक आराधना: यहां पर आपको भगवान श्रीराम के प्रति आपकी भक्ति का अभिवादन करने का अवसर होता है। धार्मिक आराधना का भाग बनें और स्थानीय पर्वों और उत्सवों में भाग लें।

वन्यजीवन का अनुभव: माँडकिनी नदी के किनारे, आप वन्यजीवन का अनुभव कर सकते हैं। पक्षियों के गाने और प्राकृतिक वातावरण का आनंद लें।

धार्मिक यात्रा की तैयारी: चित्रकूट जाने से पहले, अपने यात्रा की तैयारी अच्छी तरह से करें, जैसे कि यात्रा के समय की सही वस्त्र, और आवश्यक सामग्री का पैकिंग करें।

चित्रकूट यात्रा एक स्पेशल और आध्यात्मिक अनुभव हो सकता है, जो आपके जीवन में सुख और शांति लाने की क्षमता रखता है। यह स्थल भारतीय संस्कृति और धर्म का महत्वपूर्ण हिस्सा है और एक अनूठा धार्मिक और प्राकृतिक सौंदर्य का संगम है।

लखनऊ से चित्रकूट की यात्रा भारत के मध्य प्रदेश राज्य में स्थित होती है यहां तक पहुँचने के लिए एक विस्तृत मार्ग का अनुसरण करना आपके लिए महत्वपूर्ण हो सकता है, और आपको यात्रा के दौरान कुछ अनूwठे अनुभवों का सामर्थ्य प्रदान कर सकता है।

लखनऊ से शाहजहांपुर: आपकी यात्रा की शुरुआत लखनऊ से होगी। लखनऊ में आपको श्रीगणगा द्वारा पार करना होगा और फिर राजा बजार के माध्यम से शाहजहांपुर पहुँचना होगा।

शाहजहांपुर से बांदा: शाहजहांपुर से आपको NH730 पर चलकर बांदा जाना होगा। यह मार्ग विशेष रूप से सड़कों पर है और आपको यात्रा का आनंद लेने का मौका देता है।

बांदा से चित्रकूट: बांदा पहुँचने के बाद, आपको चित्रकूट की ओर बढ़ना होगा। यह आपके लक्ष्य के बहुत करीब है और सड़कों की सुविधा उपलब्ध होती है।

चित्रकूट पहुँचना: चित्रकूट पहुँचने पर, आपको यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने का मौका मिलेगा। यहाँ पर आप धार्मिक स्थलों का दर्शन कर सकते हैं, ध्यान कर सकते हैं, और शांति और स्पिरिचुअलिटी का अनुभव कर सकते हैं।

यह मार्ग आपको यात्रा के दौरान मध्य प्रदेश की प्राकृतिक सौंदर्य का भी आनंद लेने का मौका देता है, जैसे कि माँडकिनी नदी के तट पर वन्यजीवन का आनंद लेना और स्थानीय खाद्य का स्वाद चखना। इसमें आपको भारतीय संस्कृति और धर्म के आदर्शों का अध्ययन करने और उनको समझने का भी मौका मिलता है।

गोदावरी गुफा के अंदर की चट्टानों से एक बारहमासी धारा निकलती हैं और गोदावरी नदी की और एक अन्य चट्टान में बहती हुई गायब हो जाती हैं।

यात्रा के लिए सुनसान और खूबसूरत दृश्यों वाली सड़कों पर जाने का मौका आपके लिए अद्वितीय और अनुपम हो सकता है, जिससे आपकी यात्रा और भी सार्थक और यादगार बन सकती है।

चित्रकूट के प्रसिद्ध पौराणिक कथाएँ

श्रीराम की वनवास कथा: चित्रकूट का सबसे प्रसिद्ध मिथक है भगवान श्रीराम, माता सीता, और लक्ष्मण की 14 वर्षों की वनवास कथा। इस कथा के अनुसार, श्रीराम ने चित्रकूट के प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लिया और यहां अपने आध्यात्मिक तपस्या का अभ्यास किया।

भरत का महाभिषेक: चित्रकूट में एक और प्रमुख कथा है जिसमें भरत, भगवान श्रीराम के चरणों में अपने भाई की प्रतिष्ठा को बचाने के लिए उनके पैरों में पानी डालकर महाभिषेक करते हैं।

गुफाएँ की कथा: चित्रकूट में कई गुफाएँ हैं, जिनमें हनुमान जी का विराजमान होना एक प्रसिद्ध मान्यत्रित कथा है। हनुमान जी का ध्यान और भक्ति के लिए यहां आने वाले यात्री गुफाओं का दर्शन करने आते हैं।

चित्रकूट का शिला राजा: चित्रकूट में शिला राजा की कथा भी महत्वपूर्ण है। इस कथा के अनुसार, एक समय चित्रकूट में एक बड़ी शिला हुई थी, जिसे सम्राट भगीरथ के द्वारा पाषाण से बनाया गया था। यही शिला आज भी चित्रकूट के मुख्य धार्मिक स्थलों में दर्शनीय है।

चित्रकूट की इन पौराणिक कथाओं ने इस स्थल को एक महत्वपूर्ण धार्मिक और पौराणिक स्थल के रूप में प्रसिद्ध किया है, और यहां के यात्री इन कथाओं के महत्व को मानते हैं और इनका आदर करते हैं।

वेटरनरी होम्योपैथी द्वारा पशुओं का उपचार

डॉ0 अमलेन्दु त्रिपाठी
9795513223

वर्तमान में लोकप्रिय होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के जनक जर्मनी के प्रसिद्ध चिकित्सक, डॉ हैनीमैन थे, जिनका जन्म 10 अप्रैल 1755 को जर्मनी के माईसेन नगर में हुआ था। एलोपैथी चिकित्सा पद्धति में एम.डी.करने के पश्चात उन्होंने 10 वर्ष तक इसी पद्धति से चिकित्सा कार्य किया परंतु इससे पूर्ण रुप से संतुष्ट नहीं हुए और एलोपैथी से चिकित्सा करना छोड़ अन्य वैज्ञानिक पुस्तकों का अध्ययन करने लगे। इसी दौरान उन्होंने एक ग्रंथ में, पढ़ा कि सिनकोना की छाल से मनुष्य में बुखार का उपचार होता है तब उनके मस्तिष्क में सवाल उठा कि जरूर सिनकोना बुखार पैदा करता होगा तभी बुखार नाशक है। इसके लिए उन्होंने खुद के शरीर पर सिनकोना का प्रयोग किया और इस नतीजे पर पहुंचे कि वास्तव में सिनकोना बुखार उत्पन्न कर सकता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालक अपने पशुओं के उपचार के लिए अधिकांशतः एलोपैथिक औषधियों एवं आयुर्वेदिक घरेलू उपचार पर निर्भर रहते हैं। वर्तमान में लोकप्रिय होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के जनक जर्मनी के प्रसिद्ध चिकित्सक, डॉ हैनीमैन थे, जिनका जन्म 10 अप्रैल 1755 को जर्मनी के माईसेन नगर में हुआ था। एलोपैथी चिकित्सा पद्धति में एम.डी. करने के पश्चात उन्होंने 10 वर्ष तक इसी पद्धति से चिकित्सा कार्य किया परंतु इससे पूर्ण रुप से संतुष्ट नहीं हुए और एलोपैथी से चिकित्सा करना छोड़ अन्य वैज्ञानिक पुस्तकों का अध्ययन करने लगे। इसी दौरान उन्होंने एक ग्रंथ में, पढ़ा कि सिनकोना की छाल से मनुष्य में बुखार का उपचार होता है तब उनके मस्तिष्क में सवाल उठा कि जरूर सिनकोना बुखार पैदा करता होगा तभी बुखार नाशक है। इसके लिए उन्होंने खुद के शरीर पर सिनकोना का प्रयोग किया और इस नतीजे पर पहुंचे कि वास्तव में सिनकोना बुखार उत्पन्न कर सकता है। इसके बाद उन्होंने सोचा कि शिनकोना की तरह अन्य औषधियों में भी रोग नाश करने वाली तथा रोग उत्पन्न करने वाली दोनों प्रकार की शक्ति रहती है। इस प्रकार वे निरंतर प्रयोग करते रहे और उस समय की प्रसिद्ध पत्रिकाओं में उनके लेख प्रकाशित होते रहे। सन 1805 में उन्होंने 27 औषधियों के बारे में एक पुस्तक प्रकाशित की जो कि पहली 'होम्योपैथिक मैटेरिया मेडिका' थी।

होम्योपैथिक का सिद्धांत प्राकृतिक सिद्धांत है। लेटिन भाषा में इस सिद्धांत को 'सिमिलिया सिमिलीबस क्यूरेनटयूर', कहते हैं अर्थात 'लाइक इज क्योर्ड बाई लाइक' अर्थात 'जहर ही जहर की दवा' है। होम्योपैथिक के सिद्धांत के अनुसार किसी दवा को लेने से स्वस्थ शरीर में जो लक्षण प्रकट होते हैं किसी भी रोग में यदि वे लक्षण पाए जाएं तो वही दवा उन लक्षणों को समाप्त कर शरीर को स्वस्थ कर देगी। होम्योपैथिक चिकित्सा विज्ञान प्रकृति के नियमों पर आधारित है अर्थात आणविक सिद्धांत पर आधारित है जो कभी निष्फल नहीं जाती है। इसमें लक्षणों के आधार पर बीमारी का इलाज किया जाता है।

होम्योपैथी से पशु के उपचार हेतु महत्वपूर्ण तथ्यः

किसी भी बीमारी का उपचार करते समय बीमारी के विभिन्न लक्षणों के साथ जिस दवा के लक्षणों का अधिक मिलान होता हो उसी

दवा का उस रोग में पहली बार प्रयोग करना चाहिए। उपचार के लिए औषधि की मात्रा जहां तक हो सके कम रखें। मात्रा जितनी कम होगी लाभ उतना अधिक होगा और प्रभाव भी अधिक दिनों तक रहेगा।

पुराने रोग में दवा दिन में कम बार जबकि नए रोग में अधिक बार दी जाती है। दवा देने के 1 घंटे पहले व 1 घंटे बाद तक रोगी को कुछ भी खिलाना पिलाना नहीं चाहिए।

पुराने रोग में औषधि की, उचित मात्रा देने पर सप्ताह भर तक औषधि के असर की प्रतीक्षा करनी चाहिए यदि लाभ न हो तो दवा की दूसरी पोटेंसी का प्रयोग करें। यदि 6 से 7 खुराक औषधि लेने के बाद भी कोई फायदा नहीं हो, तो कोई दूसरी दवा का चयन करें या पहली औषधि की पोटेंसी बदल दें। केवल एक ही दवा से पुराने जटिल रोगों का उपचार संभव नहीं है।

यदि दो-तीन बार औषधि लेने से रोग के लक्षण कम हो यानी उस औषधि के उपयोग से स्पष्ट लाभ दिखाई देता रहे तो उस दवा की दूसरी मात्रा का प्रयोग नहीं करें और नहीं दूसरी दवा का चयन करें।

यदि किसी दवा से रोग के लक्षण बढ़ जाएं तो यह नहीं समझे की दवा चुनने में कोई भूल हो गई है ऐसी परिस्थिति में दो-चार दिन तक दवा बंद कर देने से बढ़े हुए लक्षण स्वयं ही कम हो जाते हैं और कुछ दिनों मैं मूल रोग के लक्षण भी समाप्त हो जाते हैं। किसी औषधि के सेवन से यदि किसी पुराने रोग के सारे लक्षण अचानक लुप्त हो जाएं तो यह समझे कि दवा का चुनाव सही नहीं हुआ है। इस ढंग से जो रोग घटते हैं यह अस्थाई लाभ होता है।

एक रोग के उपचार में एक बार में एक ही दवा का प्रयोग करें, दूसरी बार दूसरी तथा तीसरी बार तीसरी दवा का प्रयोग कतई न करें। ऐसा करने से एक औषधि दूसरी औषधि के कार्य में बाधा पहुंचाती है। पुराने रोग में दवा की पोटेंसी 1000 (1M) या इसके ऊपर रखें। इसमें जितनी अधिक पोटेंसी होगी उतने ही रोग के जड़ से खत्म होने की संभावना बढ़ेगी। पुराने रोगों में 6, 30 या 200 पोटेंसी से कोई लाभ नहीं होगा ।

100(C), 500(D) , 1000(M) , 10000(CM) पोटेंसी दर्शाते हैं। जब विशेष रुप से चुनी हुई औषधि से लाभ ना हो तो उस समय एकाएक औषध को न बदल कर उस दवा की , पोटेंसी को बदलने से ही लाभ हो जाता है। जैसे पहले अधिक पोटेंसी का प्रयोग किया और लाभ नहीं हुआ तो दूसरी बार मीडियम पोटेंसी और फिर अंत में कम पोटेंसी की दवा का प्रयोग करें।

मनुष्य में दवा सेवन करते समय सुगंधित चीजें, सड़े और जल्द पचने वाले पदार्थ, गरम मसाले, प्याज, लहसुन कपूर, शराब, एवं अन्य नशीले पदार्थ, धूम्रपान अधिक फल फूल, चाय, कॉफी आदि उत्तेजक पदार्थों का प्रयोग नहीं करना चाहिए परंतु यह सभी चीजें पशु प्रयोग में नहीं लेता है इसलिए होम्योपैथी दवाइयों का असर पशुओं में बहुत अच्छा होता है।

यदि कोई औषधि पानी में मिलाकर बनाई गई हो तो सुबह सेवन करते समय औषध की सीसी का पेंदा हाथ के ऊपर 5 से 6 बार जोर से ठोक ले इससे औषधि की पोटेंसी में कुछ परिवर्तन होने से अधिक लाभ होने की संभावना रहती है।

पशु चिकित्सा में होम्योपैथी से लाभ

होम्योपैथी में औषधि की बहुत कम मात्रा की आवश्यकता होती है । एक छोटा कुत्ता हो या बड़ी गाय या मनुष्य सभी को बहुत कम मात्रा में औषधि की आवश्यकता पड़ती है। विभिन्न प्रजाति के पशुओं के शरीर के छोटे बड़े आकार के बावजूद औषधि की मात्रा एक सी रहती है। होम्योपैथी के सिद्धांत के अनुसार क्योंकि रोग के लक्षणों के अनुसार दवा दी जाती है इसलिए रोगी भाग को स्वस्थ करने तथा सिर्फ रोगी लक्षणों को मिटाने में कम मात्रा देना ही उचित है ताकि शरीर का स्वस्थ भाग प्रभावित न हो।

होम्योपैथी शरीर में सिर्फ रोग ग्रस्त भाग पर ही असर करती है और कम समय में रोग से छुटकारा मिलता है। एलोपैथी में दवाएं रोगी भाग के, अतिरिक्त शरीर के अन्य कई स्वस्थ भागों की कार्यप्रणाली को भी प्रभावित करती हैं। होम्योपैथी औषधि का कोई साइड इफेक्ट नहीं होता है। जबकि कई एलोपैथिक औषधियों के ही इतने अधिक गंभीर साइड इफेक्ट होते हैं जिससे जन्मजात विकार उत्पन्न हो जाते है या दूसरा अंग पूरी तरह कमजोर हो जाता है। कई प्रकार के हार्मोनस, कार्टिकोस्टेरॉयड, तथा प्रतिजैविक औषधियों के घातक परिणाम भी देखने को मिलते हैं।

होम्योपैथी में अधिकतर एक रोग के इलाज में एक ही प्रकार की औषधि का प्रयोग किया जाता है ऐसे में औषधि के असर का पता भी चल जाता है। यदि रोग के लक्षण कम होते नजर आते हैं तो औषधि जारी रखी जाती है और यदि दवा का असर नजर नहीं आता तो दवा बदलने का फैसला लेने में आसानी रहती है। एलोपैथी में एक ही साथ कई प्रकार की दवाएं प्रयोग में ली जाती है जिससे उनके असर का सही आकलन लगाना मुश्किल हो जाता है। ऐसे में कौन सी दवा बंद करनी है या कौन सी नई दवा जोड़नी है यह फैसला करना मुश्किल हो जाता है ।

क्योंकि होम्योपैथी में औषधि की बहुत कम मात्रा की जरूरत होती है तथा रोग से मुक्ति भी जल्दी मिलती है इसलिए उपचार का खर्च भी बहुत कम होता है। इस पद्धति में सिर्फ लाभ ही होता है कोई दूसरा कुप्रभाव भी नहीं होता है। जबकि एलोपैथी में समय और पैसा दोनों अधिक खर्च होते हैं। पशुओं के बड़े आकार के अनुसार एलोपैथिक दवाइयों की मात्रा अधिक देनी पड़ती है जिससे उपचार का खर्च बढ़ जाता है। जबकि होम्योपैथी में छोटे व , बड़े सभी पशुओं में एक समान कम मात्रा की जरूरत पड़ती है जिससे इलाज का खर्च

भी कम हो जाता है। होम्योपैथी में बहुत कम मात्रा में दवा देनी पड़ती है इसलिए पशुओं के इलाज में इससे काफी राहत मिल जाती है अधिक मात्रा में दवा इंजेक्शन के रूप में देना तथा मुंह से पिलाना एक कठिन काम होता है। अधिक मात्रा में एलोपैथिक दवाएं पिलाते समय दवा पेट की बजाय फेफड़ों में जाने का खतरा बना रहता है जिससे ड्रेंचिग निमोनिया, होने का खतरा बढ़ जाता है और समय पर उपयुक्त उपचार न मिलने की स्थिति में पशु की मृत्यु भी हो सकती है। होम्योपैथिक औषधि बहुत कम मात्रा में बहुत आसानी से पशु को जल्दी ही दी जा सकती है।

होम्योपैथिक और एलोपैथिक दवाइयां साथ साथ दी जा सकती हैं। होम्योपैथी के साथ एलोपैथिक टॉनिक, दर्द निवारक औषधियां, विटामिंस इत्यादि दे सकते हैं। कई गंभीर बीमारियों में एलोपैथी के साथ-साथ होम्योपैथिक दवाइयों का काफी अच्छा असर होता है। वैसे कोई भी पद्धति अपने आप में परिपूर्ण नहीं होती है। इसलिए एलोपैथी के साथ होम्योपैथी कई बार काफी लाभदायक सिद्ध होती है। जैसे किसी गंभीर अवस्था में फ्लूड थेरेपी, व अन्य एलोपैथिक दवाइयों से रोगी को बचाकर बाद में लक्षणों के आधार पर होम्योपैथिक उपचार करना चाहिए।

एलोपैथिक दवाइयों, वैक्सीन, रेडिएशन आदि के साइड इफेक्ट को होम्योपैथिक दवाओं से समाप्त किया जा सकता है। एलोपैथी में वैक्सीन लगाने से कई साइड इफेक्ट्स भी होते हैं जिन्हें होम्योपैथिक थूजा व नोसोडस, से सही किया जा सकता है।

होम्योपैथी का उपचार अधिक समय तक चलता है परंतु इससे पशुओं में बीमारी समूल नष्ट हो जाती है। जिस तरह मनुष्यों में होम्योपैथिक दवा कारगर है उसी तरह से होम्योपैथिक दवा पशुओं पर भी सफलतापूर्वक पूर्ण उपचार हेतु उपयोग में ली जा रही है। पशुओं में बुखार, पेट खराब होने, प्रसव के दौरान समस्या, शरीर के किसी अंग से रक्त निकलना, मूत्राशय की पथरी जैसी अनेक बीमारियों में होम्योपैथिक औषधि शीघ्र सफलता देती है। हमारे क्षेत्र में काफी संख्या में पशुपालक होम्योपैथी औषधियों द्वारा पशुओं का उपचार करा रहे हैं। होम्योपैथिक औषधियों के बारे में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है की पशुओं पर इसका कोई दुष्प्रभाव या साइड इफेक्ट नहीं होता है एवं पशु के दूध पर भी कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है। भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान इज्जतनगर बरेली में भी लगातार होम्योपैथिक औषधियों पर शोध कार्य हो रहा है। होम्योपैथिक दवा की कीमत काफी कम होती है और इसका पशु पर कोई दुष्प्रभाव भी नहीं पड़ता है। पशुओं में होने वाले थनैला रोग, गांठ मस्से, बच्चेदानी का बाहर निकलना अर्थात बच्चा देने से पूर्व सर्वाइकोवेजाइनल एवं ब्याने के बाद यूटेराइन प्रोलेप्स जैसी बीमारियों में होम्योपैथिक दवाएं काफी असरदार होती हैं।

वेटरनरी होम्योपैथी द्वारा कुछ मुख्य बीमारियों के सफल उपचार

थनैला रोग

थनैला रोग दुधारू पशुओं को होने वाला एक खतरनाक रोग है। थनैला रोग से प्रभावित पशुओं को रोग के प्रारंभ में थन एवं अयन गर्म हो जाता है तथा उस में दर्द एवं सूजन हो जाती है। शरीर का तापमान भी बढ़ जाता है। उपरोक्त लक्षण प्रकट होते ही दूध की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है । दूध में छीछडे, रक्त एवं मवाद की बहुतायत हो जाती है। पशु चारा दाना भी बहुत कम खाता है एवं अरुचि से ग्रसित हो जाता है।

यह बीमारी मुख्य रूप से गाय, भैंस, बकरी एवं शूकर समेत कई अन्य पशुओं में भी पाई जाती है जो अपने बच्चों को दूध पिलाती है। थनैला बीमारी पशुओं में कई प्रकार के जीवाणु, विषाणु, फफूंद एवं यीस्ट तथा मोल्ड के संक्रमण के कारण होता है। इसके अतिरिक्त चोट तथा मौसमी प्रतिकूलताओ के कारण भी थनैला रोग उत्पन्न हो जाता है।

होम्योपैथिक औषधि फाइटो लक्का-1000 की पांच बूंद सुबह 15 दिन तक देने पर यह खतरनाक थनैला रोग ठीक हो जाता है।

थनैला रोग में थनों में गांठ पड़ने, अर्थात फाइब्रोसिस होने पर कोई कारगर एलोपैथिक उपचार नहीं है ऐसी स्थिति में होम्योपैथिक 'टीटासूल फाइब्रोकिट गोल्ड' द्वारा उपचार काफी प्रभावी होता है। इससे गांठे काफी हद तक सही हो जाती है, एवं पशु सामान्य दूध पर आ जाता है और पशुपालन को उपचार कम कीमत में मिल जाता है।

बचावः

- पशुओं के बांधे जाने वाले स्थान या बैठने के स्थान एवं दूध निकालने के स्थान की सफाई का विशेष ध्यान रखें।
- दूध दुहने की तकनीक सही होनी चाहिए जिससे थन को किसी प्रकार की चोट न पहुंचे।
- ठंड में किसी प्रकार की चोट जैसे हल्की खरोंच का भी उचित उपचार तत्काल कराएं।
- थन का उपचार दूध निकालने से पहले एवं बाद में 1:1000 पोटेशियम परमैंगनेट या क्लोरहेक्सिडीन 0.5 प्रतिशत से धोकर करें।
- दूध की धार कभी भी जमीन पर ना मारे।
- समय-समय पर दूध की जांच काले बर्तन पर धार देकर या प्रयोगशाला में करवाते रहें।
- शुष्क पशु का उपचार भी ब्याने के बाद थनैला रोग होने की संभावना लगभग समाप्त कर देता है। इसके लिए पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
- रोगी पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें तथा उन्हें दुहने वाले भी अलग हो। अगर ऐसा संभव नहीं हो तो रोगी पशु को सबसे अंत में दुहे।

सभी को मजबूत बनाता है सूर्य नमस्कार

मुकेश कुमार सिंह
योगगुरु

सूर्य नमस्कार योगासनों में सर्वश्रेष्ठ है यह अकेला अभ्यास ही साधक हो सम्पूण लाभ पहुचाने में समर्थ है। नियमित सूर्य नमस्कार से रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाकर तनाव को कम करके रोग को हराया जा सकता है क्योंकि आज की आधुनिक जीवन शैली में इंसान दिन- रात काम कर रहा है। स्वस्थ रहने के लिए आहार-संयम और नियमित दिनचर्या के साथ-साथ शरीर के प्रत्येक अंग का सक्रिय रहना अति आवश्यक है इसलिए भोजन संयम ,शयन और नियम ,संयम के साथ -साथ नियमित योग की भी आवश्यकता है अक्सर देखा जाता है कि मानसिक श्रम करने वाले लोग शारीरिक श्रम करने से कतराते है और शरीरिक श्रम करने वाले बौद्धिक प्रगति को अनावश्यक समझते है। इससे शारीरिक और मानसिक दोनों ही दृष्टि से स्वस्थ लोग बहुत कम होते है। क्योकि आधुनिक जीवन शैली की जरूरतों को पूरा करने के लिए इंसान हमेशा पैसा कमाने की सोचता रहता है। यही ख्याल हमेशा मन में लगा रहता है और कोशिश भी करता रहता है कि कैसे ज्यादा से ज्यादा पैसे कमाये और कार्य की अधिकता के कारण इंसान अक्सर परेशान रहता है साथ ही जिनकों पहले से कई सारी बीमारिया है जैसे रक्तचाप,मधुमेह,मोटापा,दमा ,हृदय रोग आदि। उनके लिए एवं तनाव से मुक्ति के लिए योग और सूर्य नमस्कार करें और हमेशा स्वस्थ रहें। सूर्य नमस्कार स्त्री, पुरूष , बच्चे, युवा, वृद्धों सभी के लिए भी उपयोगी है। सूर्य नमस्कार से अर्थात भगवानसूर्यनारायण की वंदना। यह अत्यंत प्राचीन भारतीय व्यायाम पद्धति है। प्रातःकाल पूर्व दिशा में खड़े होकर शांत चित्त से भगवानसूर्यनारायण की स्तुति करते -करते सूर्यनमस्कार किया जाता है इस प्रकार शारीरिक व्यायाम के साथ-साथ इसका धार्मिक महत्व भी है पूरे संसार को ऊर्जा देने वाले स्वास्थ्य और शक्ति प्रदान करने वाले विभिन्न ऋतुओं का सर्जन करने वाले, अन्न उत्पन्न करने वाले, जीवनदाता सूर्य को प्रभात में ही नमन करने से विशिष्ट किरणों का लाभ शरीर को प्राप्त होता है इससे शारीरिक व्यायाम तो होता ही है सूर्य नमस्कार से विचारात्मक और भावनात्मक स्पन्दन भी प्राप्त होते है सूर्योदय के समय यह व्यायाम करना बहुत ही लाभदायक होता है उगते सूर्य की किरणों द्वारा हमारे शरीर को विटामिन डी की भी प्राप्ति

होती है इससे रक्त भी शुद्ध होता है तथा फेफडे. और हड्डियॉ मजबूत होती है। सूर्य नमस्कार में कुल बारह अवस्थाएॅ या स्थितियॉ है इन बारह अवस्थाओं द्वारा शरीर के प्रत्येक अंग को उचित व्यायाम मिल जाता है। सूर्य नमस्कार रोज करने से हमारा शरीर स्वस्थ और निरोगी रहता है शरीर में ऊर्जा हमेशा बनी रहती है और शारीरिक एवं मानसिक तनाव से मुक्ति मिलती है। सूर्य नमस्कार के साथ एक एक कर 12 मंत्र भी बोलते है। जो इस प्रकार है।

- ॐ मित्राय नमः।
- ॐ रवये नमः।
- ॐ सूर्याय नमः।
- ॐ भानवे नमः।
- ॐ खगाय नमः।
- ॐ पूष्णे नमः।
- ॐ हिरण्यगर्भाय नमः।
- ॐ मरीचये नमः।
- ॐ आदित्याय नमः।
- ॐ सवित्रे नमः।
- ॐ अर्काय नमः।
- ॐ भास्कराय नमः।

इसमें 7 प्रकार के आसनों से 12 प्रकार की स्थितियॉ बनायी जाती है वे इस प्रकार है।

1. प्रणामसन या नमस्कारासन,

2. हस्त उत्तानासन

3. पाद हस्तासन

4. अश्व- संचालनासन

5. पर्वतसान

6. अष्टांग नमस्कार

7. भुजंगासन

8. पर्वतासन

9. अश्वसंचालन आसन

10. पाद हस्तासन

11. हस्त उत्तान आसन

12. प्रणाम असान

क्रमपूर्वक इन आसनों को मंत्रों के साथ सूर्य नमस्कार के सात आसन व उसकी बारह स्थितियां इस प्रकार है-

1. प्रणाम आसन अपने आसन पर सीधे खड़े होकर दोनों हाथों को जोड़ कर सीने के सामने नमस्कार मुद्रा में रखें। श्वास सामान्य रखें।

2. हस्त उत्तान आसन नमस्कार मुद्रा में जोड़े गये दोनों हाथों को खोलकर श्वास भरते हुए बाहर की ओर रखते हुए भुजाओं को सिर के ऊपर से ले जाते हुए रीढ को पीछे की ओर झुकाते है अभ्यास धीरे -धीरे अपनी क्षमता अनुसार करें क्योंकि ज्यादा पीछे जाने में भी चक्कर आता है जैसे -जैसे नियमित करेंगे वैसे खुद में सुधार होगा।

3. पादहस्त आसन श्वास को छोड़ते हुए समाने की ओर झुकें अंगुलिया एवं हथेलियों को पैरों के बगल स्पर्श करवाना चाहिए, लेकिन पैर सीधे रहने चाहिए। यथासंभव झुकने का प्रयास करें। जैसे -जैसे नियमित अभ्यास करेंगे वैसे खुद में सुधार होगा।

4. अश्वसंचालन आसन बायें पैर को जितना हो सके पीछे ले जॉए। इस स्थिति में जो पैर पीछे गया है उसका घुटना जमीन से स्पर्श करता रहेगा। साथ ही चेहरे को ऊपर की ओर ले जाना होता है और ऊपर की ओर देखना होता है।

5. पर्वत आसन में दाहिने पैर को भी पीछे लाकर बायें पैर के बगल में रखना चाहिए। नितम्बों को ऊपर उठाकर सिर को दोंनों भुजाओं के भीतर से नीचे की ओर लायें। इससे पर्वत के समान आकृति बनती है। अन्तिम स्थिति में पैर एवं भुजाएं सीधी रहनी चाहिए। इस स्थिति में एड़ियों को भूमि से स्पर्श कराना चाहिए।

6. अष्टांग नमस्कार घुटनों को मोड़ते हुए शरीर को नीचे लाकर अष्टांग नमस्कार की स्थिति निर्मित करें। इसमें घुटने ,छाती, और ठुड्डी जमीन से स्पर्श करेंगे। नितम्ब का भाग थोड़ा उठा रहेगा। श्वास बाहर ही रूका रहना चाहिए।

7. भुजंग आसन में जंघाओं को भूमि

पर सटा लेना चाहिए एवं सीने को ऊपर की ओर लाना चाहिए हथेलिया को सीने के बगल वाले स्थान पर टिकाकर शरीर को कमर से पीछे की ओर मोड़तें हुए अन्तिम स्थिति फन उठाये सॉप के समान होनी चाहिए। मेरूदण्ड धनुषाकार हो जाना चाहिए। कमर का भाग मोड़ते हुए श्वास को भीतर लेना चाहिए। मेरूदण्ड के निचले भाग पर सजगता रहनी चाहिए।

8. पर्वत आसन में दाहिने पैर को पीछे लाकर बायें पैर के बगल में रखना चाहिए। नितम्बों को ऊपर उठाकर सिर को दोंनों भुजाओं के भीतर से नीचे की ओर लायें। पर्वत के समान आकृति बनती है। अन्तिम स्थिति में पैर एवं भुजाएँ सीधी रहनी चाहिए। इस स्थिति में एड़ियों को भूमि से स्पर्श करनी चाहिए।

9. अश्वसंचालन आसन बायें पैर को जितना हो सके आगे ले जॉए इस स्थिति में जो पैर पीछे गया है उसका घुटना जमीन से स्पर्श करता रहेगा। साथ ही चेहरे को ऊपर की ओर ले जाना होता है और ऊपर की ओर देखना होता है।

10. पादहस्त आसन में श्वास को छोड़ते हुए समाने की ओर झुकें। अंगुलिया एवं हथेलियों को पैरों के बगल स्पर्श करवाना चाहिए, लेकिन पैर सीधे रहने चाहिए। यथासंभव झुकने का प्रयास करें। जैसे -जैसे नियमित अभ्यास करेंगे वैसे खुद में सुधार होगा।

11. हस्त उत्तान आसन में नमस्कार मुद्रा में जोडे. गये दोनों हाथों को खोलकर श्वास भरते हुए बाहर की ओर रखते हुए भुजाओं को सिर के ऊपर से ले जाते हुए रीढ़ को पीछे की ओर झुकाते है अभ्यास धीरे -धीरे अपनी क्षमता अनुसार करें। क्योंकि ज्यादा पीछे जाने में भी चक्कर आता है जैसे -जैसे नियमित अभ्यास करेंगे वैसे खुद में सुधार होगा।

12. प्रणाम आसन में अपने आसन पर सीधे खडे. होकर दोनों हाथों को जोड़कर सीने के सामने नमस्कार मुद्रा में रखें। श्वास सामान्य रखें।

सूर्य नमस्कार करने से होने वाले महत्वपूर्ण स्वास्थ्य लाभ -

शारीरिक लाभ

- सूर्य नमस्कार करने से शरीर को ऊर्जा मिलती है। एवं सम्पूर्ण शरीर को लाभ मिलता है। सुबह खाली पेट और खुली जगह में सूर्य नमस्कार करना फायदेमंद होता है।
- सूर्य नमस्कार करने से सोच सकारात्मक होती है।
- सूर्य नमस्कार करने से मोटापा कम होता है।
- सूर्य नमस्कार करने से पाचन तंत्र मजबूत कर कब्ज को मिटाता है।
- सूर्य नमस्कार प्रतिदिन करने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।
- सूर्य नमस्कार करने से रीढ़ की हड्डी मजबूत और कमर लचीली होती है।
- सूर्य नमस्कार करने से शरीर को प्रयाप्त मात्रा में विटामिन डी मिलता है।
- सूर्य नमस्कार रोज करने से आलस्य से मुक्ति मिलती है।

मानसिक लाभ

- क्रोध पर नियन्त्रण होने से व्यक्तिव शान्त एवं संतुलित होता है।
- नियमित सूर्यनमस्कार से व्यक्ति तनाव मुक्ति होता है।
- मन में निराशा चिडचिडापन ,अवसाद एवं नकारात्मक प्रवृत्तियों पर नियन्त्रण रहता है।
- नियमित सूर्यनमस्कार से एक मानसिक शांति मिलती है।
- सूर्य नमस्कार करने से स्मारण शक्ति बढ़ती है।
- सूर्य नमस्कार करने से भगवान के प्रति आस्था बढ़ती है। और अन्दर से सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण होता है। जिससे नकारात्मक विचार खत्म होने लगते है। मन शांत हो जाता है।

सावधानियां एवं सीमाएं

- सूर्य नमस्कार तो सभी आयुवर्ग के लोग कर सकते है पर अपनी क्षमतानुसार ही करें ज्यादा उम्र के लोगों को योग गुरू की देख-रेख में ही करना चाहिए।
- हदय रोग, ऑतों के रोग एवं मेरूदण्ड में समस्या हो, तो भी योग गुरू के निर्देशानुसार ही अभ्यास करना चाहिए।

भारत की अगुआई में जी 20 सम्मेलन

संजय

विश्व के आर्थिक मामलों के महत्वपूर्ण मंच जी20 (G20) के आयोजन का सौभाग्य इस बार भारत को मिला है। यह एक महत्वपूर्ण प्लेटफार्म है जहाँ विश्व के प्रमुख अर्थशास्त्रीय, राजनीतिक नेता और आर्थिक विकास के मुद्दों के निर्णय लिए जाते हैं। इस वर्ष, भारत जी20 के मुख्य आदर्श रूप में कार्य कर रहा है और यह एक महत्वपूर्ण और गर्व की बात है।

जी20 का मुख्य उद्देश्य विश्व अर्थव्यवस्था को सुधारना है, विश्वासनीयता बढ़ाना है और विकास के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयासों को बढ़ावा देना है। भारत का यह दौरा एक महत्वपूर्ण संकेत है कि भारत विश्व के सामूहिक सुधार के साथ साथ अर्थव्यवस्था में अपनी भूमिका को मजबूत करने के लिए तैयार है।

भारत के मुख्य आदर्श के तौर पर, हमें विश्व के आधुनिक आर्थिक चुनौतियों का समर्थन करना चाहिए। वित्तीय स्थिरता, वित्तीय सम्प्रेरण, और उद्योग विकास के क्षेत्र में हमें नवाचार और नई दिशाओं की ओर कदम बढ़ाना होगा। हमें इसे सुनिश्चित करना होगा कि भारत की अर्थव्यवस्था में वृद्धि तेजी से हो और लोगों के जीवन में सुधार हो।

इसके अलावा, हमें ग्लोबल खतरों जैसे कि जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, व्यापारिक संघर्ष, और अन्य सामाजिक मुद्दों के समाधान के लिए भी काम करना होगा। भारत को अपनी बड़ी और अच्छी बातें प्रकट करने का एक मौका मिल रहा है, और हमें इसका सही तरीके से उपयोग करना होगा।

जी20 2023 के दौरान, भारत को नेतृत्व करके विश्व अर्थव्यवस्था को सुधारने में मदद करने का एक महत्वपूर्ण मौका है। हमें सभी देशों के साथ मिलकर समृद्धि और सामृद्धिक विकास की दिशा में कदम बढ़ाने का संकल्प करना होगा।

भारत ने जी20 2023 के दौरान अपने मुख्य आदर्श के रूप में अपने योगदान को प्रकट किया है और विश्व अर्थव्यवस्था के सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हमें इस अवसर का सही तरीके से उपयोग करके विश्व के लिए सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में कदम बढ़ाने का संकल्प करना चाहिए ताकि हम सभी के लिए बेहतर और समृद्ध दुनिया का निर्माण कर सकें।

जी20 (G20) का आयोजन भारत में हो रहा होने से हम अपने देश की सांस्कृतिक धरोहर और प्राकृतिक सौंदर्य का प्रसार कर सकते हैं। यह दुनिया को हमारे देश की महत्वपूर्ण नगरीयता, सांस्कृतिक धर्म, और विविधता की ओर मोड़ने का एक अद्वितीय मौका हो सकता है।

जी20 के माध्यम से, हमें विश्व समुदाय के साथ एकजुट होकर सामाजिक, पार्थिव, और पारिस्थितिकी चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। इसके अलावा, हमें उच्च स्तरीय विचार-विमर्श के माध्यम से आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों पर मनवाने का अवसर प्राप्त होता है, जिससे हम बेहतर नीतियों का निर्माण कर सकते हैं।

भारत के मुख्य आदर्श के तौर पर, हमें गरीबी और अशिक्षा के मुद्दे पर विशेष ध्यान देना चाहिए। हमें उन लोगों की मदद करने का संकल्प करना चाहिए जो सबसे ज्यादा आवश्यकता है और जिन्हें सबसे ज्यादा समर्थन की आवश्यकता है। हमें शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार, डिजिटलीकरण, और उच्च शिक्षा के लिए नए योजनाओं की ओर कदम बढ़ाना होगा ताकि हम आने वाले पीढ़ियों को बेहतर अवसर प्रदान कर सकें।

जी20 2023 के माध्यम से, भारत को विश्व में एक महत्वपूर्ण रूप से उभारने का मौका मिल रहा है। हमें अपने आदर्शों को प्रकट करना है, अपने लोगों के लिए और विश्व के लिए एक बेहतर भविष्य बनाने के लिए। भारत को एक सशक्त, सुरक्षित, और सामृद्ध देश के रूप में प्रस्तुत करना हम सभी की जिम्मेदारी है, और इस जी20 2023 के दौरान हमें इस कार्य को पूरा करने का अवसर मिल रहा है।

परमवीर चक्र विजेता

कैप्टन मनोज पांडे

तारादत्त भट्ट

24 वर्ष की उम्र में मनोज पांडे ने आने वाली पीढ़ियों के लिए वीरता की मिसाल कायम की। उस कार्यवाही के परिणाम स्वरुप दुश्मन से छह मजबूत बनकर खाली कराया और एक ग्यारह पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया, दुश्मन का भारी गोला बारूद बरामद अपने हाथ लगा जिसमें एक हवाई फायर गन भी थी। बंकरों पर कब्जे से भारतीय सैनिकों को पक्का आधार मिल गया और इससे खानूबार पर कब्जा हो गया। बटालिक के हीरो लेफ्टिनेंट मनोज कुमार को अद्वितीय शौर्य तथा उत्कृष्ट नेतृत्व की श्रेष्ठ परंपरा के निर्वहन हेतु मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया

कैप्टन मनोज कुमार पांडे का जन्म 25 जून 1975 को उत्तर प्रदेश राज्य के सीतापुर जिले के गांव में हुआ था। उनके पिता गोपी चंद पांडे तथा मां मोहिनी पांडे थीं। मनोज की शिक्षा सैनिक स्कूल लखनऊ में हुई और वहीं से उनमें अनुशासन भाव तथा देश प्रेम की भावना संचारित हुई। वह शुरू से ही एक मेधावी छात्र थे और खेलकूद में बड़े उत्साह से भाग लेते थे। मनोज की माताजी मोहिनी उन्हें बचपन से ही वीरता, देशभक्ति व सच्चरित्र की कहानियां सुनाती और मनोज का हौसला बढ़ातीं। वह हमेशा सम्मान तथा यश पाकर लौटे।

ज्योति जला निज प्राण की, बीती गढ़ बलिदान की,
चले उतारे आरती मां की पावन आरती।
आओ हम सब चलें उतारे मां की पावन आरती,
वह वसुंधरा मां जिसकी, गोद में हमने जन्म लिया,
खाकर जिसका अन्न अमृत सम, निर्मल शीतल नीर पिया।
स्वांशों भरी समीर में, जिसका रक्त शरीर में,
आज उसी की व्याकुल होकर ममता हमें पुकारती।

खड़कवासला स्थित नेशनल डिफेंस एकेडमी में प्रशिक्षण उपरांत वह 11वीं गोरखा राइफल्स की पहली बटालियन में बतौर कमीशंड ऑफिसर नियुक्त हुए उनकी तैनाती कश्मीर घाटी में हुई। ठीक अगले ही दिन उन्होंने अपने एक सीनियर सेकंड लेफ्टिनेंट पीएम दत्ता के साथ एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भरा काम पूरा किया। पीएम दत्ता ने इस कार्यवाही में अपने प्राण न्योछावर कर दिए, उन्हें मरणोपरांत अशोक चक्र से सम्मानित किया गया। एक बार मनोज को एक टुकड़ी लेकर गश्त पर भेजा गया जहां उनके लौटने में देर हो गई फिर सब को बड़ी चिंता हुई, जब निर्धारित समय के दो दिन बाद वे लोग वापस आए तो कमान अधिकारी ने उनसे देर से आने का कारण पूछा, इसपर मनोज ने कहा हमें आतंकवादी मिल नहीं रहे थे इसलिए उन्हें ढूंढने हम दूर तक चले गए और आखिर उन्हें पकड़ लिया। जब बटालियन को सियाचिन जाने का आदेश हुआ तो मनोज युवा अफसरों की ट्रेनिंग पर थे उन्हें इस बात का दुख था कि इस ट्रेनिंग की वजह से वह सियाचिन नहीं जा पाएंगे। जब इस टुकड़ी को कठिनाई भरे काम को अंजाम देने का मौका आया तो मनोज ने अपने कमांडिंग ऑफिसर को लिखा कि अगर उनकी टुकड़ी उत्तरी ग्लेशियर जा रही है तो उन्हें बाना चौकी दी जाए और और अगर सेंट्रल चौकी ग्लेशियर की ओर कूच हो तो पहलवान चौकी मिले। उत्तरी और मध्यम ग्लेशियर में यह सबसे कठिन चौकियां हैं। मनोज कुमार पांडे को लंबे समय तक 19760 फ़ीट ऊंची पहलवान चौकी की मुस्तैदी में रक्षा करने का मौका मिला।

1999 में 11वीं गोरखा राइफल्स की पहली बटालियन सियाचिन ग्लेशियर की कठिन परिस्थितियों वाली सेवापुरी पर पुनः जाकर शांतिकाल की सेवा प्रारंभ करने का इंतजार कर रही थी। बटालियन का एक अग्रिम दल पुरा पहुंच भी चुका था, जिसमे बहुत से सैनिक छुट्टी पर चले गए थे। बटालियन की कमांड एक नायब के हाथ में थी, तभी बटालियन को कारगिल जाने का आदेश दिया गया। बटालियन आदेश की पालनार्थ बटालिक पहाड़ियों की ओर चल पड़ी, जब एक बटे ग्यारह गोरखा राइफल्स ऑपरेशन विजय में कूदी तो मनोज कुमार पांडे ने सबसे कठिन कार्य के लिए अपने आप को स्वेच्छा से समर्पित कर दिया। वह पहले अधिकारी थे जो अग्रिम चौकियों पर गए। 9 मई 1999 को उन्होंने चार भारतीय जवानों के शव ढूंढ निकालें जो अपने इलाके में गश्त के लिए गए थे और उन्हें घुसपैठिए पाकिस्तानियों ने मार डाला था।

इसके बाद उन्होंने कुकर थांग स्थान पर संपर्क किया जिस पर पाकिस्तानियों ने कब्जा कर लिया था। मनोज पांडे उस दल के भी सदस्य थे जिसने जुवार पर कब्जा किया था। उन्होंने वहां पहली चौकी स्थापित की थी।

2 से 3 जुलाई 1999 को एक बटे ग्यारह गोरखा राइफल्स की कंपनी को भी खाकूबार पर कब्जा करने का दायित्व मिला। मनोज पांडे को पांच नंबर प्लाटून कमांडर के रूप में आगे जाने का आदेश मिला। वह जैसे ही आगे बढ़े चारों और ऊंचाइयों पर बने बंकरों से तेज गोलाबारी होने लगी, मनोज कुमार पांडे को बंकर खाली कराने का आदेश मिला। उन्होंने अपनी प्लाटून को ऐसी जगह तैनात किया जो सुरक्षित थी। उन्होंने हवलदार भीम बहादुर की टुकड़ी को दाएं ओर दो बंकरों को खाली करने के लिए भेजा और खुद बायीं ओर चार बंकर खाली कराने के लिए चल पड़े। उन्होंने बिना डरे शत्रु पर हमला कर दिया और एक के बाद एक चार को मार गिराया। तीसरा बंकर खाली कराते समय उनके कंधे और पैर में गोली लगी, अपने जख्मों की बिल्कुल परवाह न करते हुए उन्होंने चौथे बंकर पर भी हमला कर दिया और 'आयो गोरखाली' जय घोष लगाते हुए ग्रेनेड फेंका जो सही निशाने पर लगा। इसी बीच एक मध्यम मशीन गन की फायर आई और लेफ्ट एंड मनोज कुमार पांडे का सर बुरी तरह जख्मी हो गया।

3 जुलाई 1999 को चौथा बंकर तो खाली हो गया पर लेफ्टिनेंट मनोज कुमार पांडे शहीद हो गए। 24 वर्ष की उम्र में मनोज पांडे ने आने वाली पीढ़ियों के लिए वीरता की मिसाल कायम की। उस कार्यवाही के परिणाम स्वरुप दुश्मन से छह मजबूत बनकर खाली कराया और एक ग्यारह पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया, दुश्मन का भारी गोला बारूद बरामद अपने हाथ लगा जिसमें एक हवाई फायर गन भी थी। बंकरों पर कब्जे से भारतीय सैनिकों को पक्का आधार मिल गया और इससे खानूबार पर कब्जा हो गया। बटालिक के हीरो लेफ्टिनेंट मनोज कुमार को अद्वितीय शौर्य तथा उत्कृष्ट नेतृत्व की श्रेष्ठ परंपरा के निर्वहन हेतु मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया यह भारत माता का सपूत सदा अमर रहेगा।

जय हिंद जय मानव।

बदलते हुए युग में संयुक्त परिवार का टूटने का मुख्य कारण क्या होता है

सुषमा त्रिपाठी

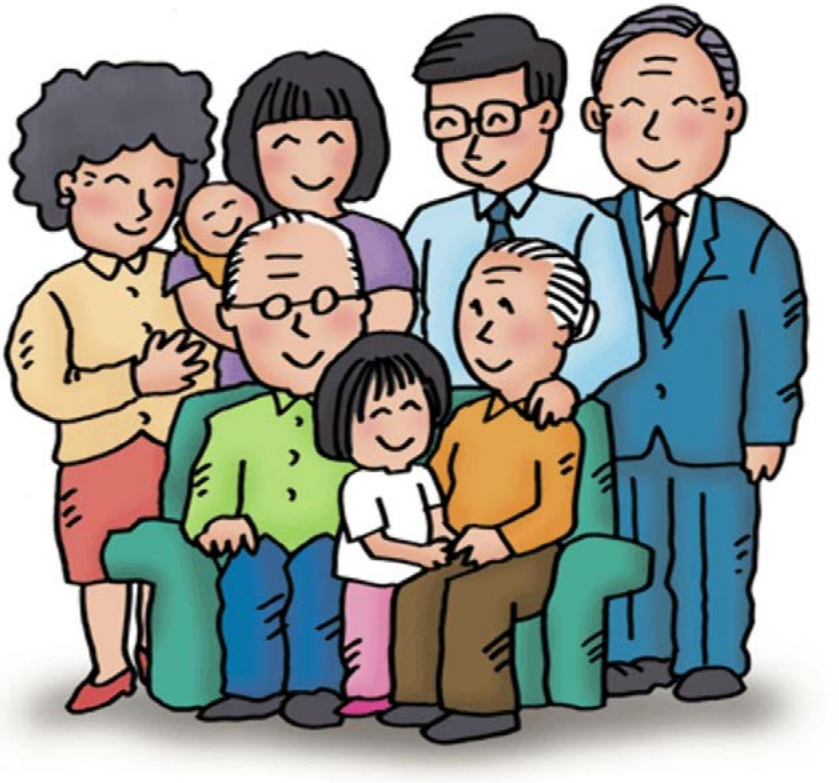

इस बदलते हुए परिवेश में वर्तमान समय में संयुक्त परिवार के टूटने का कारण आपसी संबंधों का खराब होना आपसे विश्वास का कम होना एक दूसरे के प्रति आपकी भावना का कम होना छोटे बच्चों के झगड़े के कारण बड़ों को आपस में झगड़ा करना आपसी मतभेदों का बढ़ना गलत कहने को बढ़ावा देना और बढ़ाकर बात करने पर उन्हें सही भी नहीं करते बल्कि बात ना करके परिवार को बोल देना पसंद करते हैं और आपसी समझौता नहीं कर सकते हैं-

- बढ़ती इच्छाएं वैज्ञानिक आविष्कार और उनकी जरूरत है इनके कारण कितनी भी कमाई किया जाए संयुक्त परिवार वालों के लिए कम ही पड़ती है
- स्वावलंबन का भाव ज्यादा संग्रह की चाहत
- परिवार के मुखिया का दकियानूसी रवैया जात पात पदार्थ पर्दा प्रथा खानपान खानदान इत्यादि
- वेदों के अनुसार बड़ों का वानप्रस्थ और सन्यास में नहीं चाहिए
- पढ़े-लिखे बच्चों का विदेश जाना या अपने माता-पिता से दूर चले जाना
- परिवार में सभी पुत्रों की योग्यता और परिश्रम अलग अलग होना।

संयुक्त परिवार के विघटन के कारण औद्योगिकरण के इस युग में संयुक्त परिवार व्यक्ति और समाज की मांगों को पूर्ण रूप से मनुष्य नहीं कर पूरा कर पा रहा है इसके क्रमशः एक संयुक्त परिवार का या तो विघटन ही होता जा रहा है या फिर इसके स्वरूप में अत्यधिक परिवर्तन स्वीकार किए जा रहे हैं। संयुक्त परिवार तो अब आज के युग में किसी के साथ कोई भी खुश नहीं है यहां तक कि आज के युग में भाई-भाई का सबसे बड़ा दुश्मन हो गया है जो कि संसार के लिए और स्वयं के लिए सही नहीं है जलन की भावना तो देवरानी जेठानी सब में आ ही गई है

संयुक्त परिवार का तात्पर्य

भारतीय संयुक्त परिवार एक वह परिवार है जिसमें कई सदस्य होते हैं यह कम से कम दो या दो से अधिक प्राथमिक परिवारों का संग्रह है संयुक्त परिवार में अधिकतर माता-पिता उनके लड़के लड़कियां चाचा चाची तथा उनके बड़े बेटा बेटी सम्मिलित होते हैं अथवा माता पिता उनका विवाहित बेटा या बेटी और उनके बच्चे होते हैं संयुक्त परिवार विस्थापित परिवार व्यवस्था के रूप में भी जाना जाता है यह एक ऐसा परिवार होता है जिसमें 1 से ज्यादा पर पीढ़ियां साथ रहती हैं

हमारे देश में प्राचीन काल से ही लोग संयुक्त परिवार में ही रहते हुए हैं क्योंकि

प्राचीन काल से ही लोगों ने सामाजिक ताने-बाने का ऐसा गठन किया है कि लोग पहले संयुक्त परिवार में ही रहना पसंद करते हैं पहले के जमाने में एक माता-पिता 10-10 बच्चों को जन्म देते थे और सब का शादी विवाह करके एक ही घर में अलग अलग कमरा बना कर उसी में रखते थे और सभी लोग वहां की गलियों के साथ उस घर में बड़ी खुशी खुशी रहते थे जैसे कि अगर हमारे माता-पिता उस घर में तो उनके माता-पिता यदि जीवित हैं तो उसी घर में रहते थे इसके अलावा ताऊ ताई चाचा चाची का का का किया लोग भी और संयुक्त परिवार में रहते थे अधिकतर जॉइंट परिवार में हमेशा खुशी भरा माहौल रहता था परिवार में किसी किसी के यहां परिवार के यहां छत के नीचे हंसी खुशी रहती थी एक ऐसा परिवार जो समाज की नींव को समेटकर एक दूसरे के मान सम्मान को बनाए रखने का काम करता था अनपढ़ और गवार भी उसी परिवार का हिस्सा बनकर एक दूसरे का दुख दर्द आपस में बांट लेते थे

परिवार के एक संयुक्त रूप एक आत्मा सहयोग प्रेम और सम्मान को बनाने रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था संयुक्त परिवार साझा मान्यताओं मूल्य उद्देश्यों और अपनी कल्पनाओं पर आधारित होता है और सदस्यों को एक साथ बात कर रखता है संयुक्त परिवार की आवश्यकता आधुनिक जीवन शैली में बदलती चली जा रही है सामाजिक संरचनाओं के संबंध में महत्वपूर्ण होती है परिवार का आधार धीरे-धीरे तथा नए नए संबंधों और मान्यताओं के साथ विस्तारित होता जा रहा है परिवारों में विवाहित जोड़े समलैंगिक जोड़े एकल माता-पिता फैमिली इस नए जमाने के अनुसार नहीं फैमिली राधे शामिल हो रहे हैं संयुक्त परिवार उन सभी सामाजिक परिवर्तनों के साथ अनुकूलित होता है और सामाजिक एवं मानसिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए आवश्यक होता है संयुक्त परिवार में बच्चे भी बहुत कुछ सीख लेते हैं बच्चों के लिए दादा दादी का अहम रोल होता है

संयुक्त परिवार की आवश्यकता आज की तेजी से बदल रही दुनिया में बहुत ही महत्वपूर्ण होती जा रही है और हर पति पत्नी माता-पिता अपना परिवार के नारे लगाने के प्रयास में लगे हुए हैं जो कि एकल परिवार में बदलती चली जा रही है सभी आज के युग में अपनी तथा अन्य अपने यहां तक कि परिवार रह जा रहा है तथा परिवार संयुक्त टूट रहा है

संयुक्त परिवार टूटने का कारण

आज के बदलते हुए युग में संयुक्त परिवार लगभग पूरी तरह से टूटता चला रहा है इसके इसके भी बहुत सारे कारण हैं

व्यक्तिगत मतभेद

संयुक्त परिवार में सदस्यों के बीच व्यक्तिगत मतभेद तो होता ही रहता है ज्यादा बड़े परिवार हो तो तकरार मनमुटाव भाई का सामान चुरा लेना है प्यादे अन्य बहुत सारी हरकतें होती रहती हैं आप से छीना झपटी के चक्कर में रिक्त परिवार तनावग्रस्त हो जाता है और दूसरा देश से तनाव और संतोष का संकट उत्पन्न हो जाता है और चालू औरतें बाहर से आती हैं जो अपनी जाति पर आकर करतूत के कारण घर के सभी सदस्यों को भटका आती रहती हैं और इस प्रकाश संयुक्त परिवार टूट जाता है और एकल परिवार में बदल जाता है और व्यक्तिगत मतभेद बढ़ता चला जाता है परिवार बिखरता चला जाता है

अतीत के मुद्दे

संयुक्त परिवार को टूटने का मुख्य कारण भी आर्थिक मुद्दा है राजा संसाधनों के प्रबंधन आर्थिक समझौतों के अभाव धन-धान्य के बारे में मतभेद और विभिन्न वित्तीय संकटों के कारण भी जॉइंट फैमिली टूट जाती हैं इससे परिवार के सदस्यों के बीच आपसी विश्वास आसानी से तालमेल संबंधों में आए तनाव मनमुटाव आ जाता है और यह बढ़ता चला था जिसे संबंधों में कमजोरी आ जाती है संबंध टूट जाता है

सामाजिक बदलाव

संयुक्त परिवारों को भी सामाजिक बदलाव का सामना करना पड़ जाता है उच्च शिक्षा रोजगार के संगठन परिवार के सदस्यों के बीच सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों के अंतर के कारण संयुक्त परिवार में विभिन्न पीढ़ियों के बीच समस्त सहमति की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और इससे भी परिवार टूट जाता है सामाजिक समरसता बनाए रखना बहुत ही जरूरी है यह आपसी संबंधों के मजबूत करने तथा परिवार के सदस्यों के बीच भाईचारे और प्यार की भावना का विकास करने का आधार है जिस प्रकार आप एक लकड़ी को तोड़ सकते हैं मगर पूरे घटक को एक साथ नहीं छोड़ा जा सकता उसी प्रकार संयुक्त परिवार को अलग अलग रहकर एक साथ नहीं रखा जा सकता इसलिए मेरे भाई बहनों पिता तुल्य बुजुर्गो तथा सभी सामाजिक बंधन में बंधे हुए समाज संयुक्त परिवार का निर्वहन अवश्य करना चाहिए

अभी तो है समय

हैं अभी छोटे ये बच्चे
इसीलिए लेकर खिलौने ,गोलियाँ मीठी
कि लेकर चीज़ ,हो जाते हैं खुश
और हम आश्वस्त
पर
कल जब ये होंगे कुछ बड़े
और आते ही स्कूल से
माँगेंगे हम से पूरा जंगल
कोई खाली टुकड़ा धरती का
सभी रंग आसमानों के
करेंगे हठ ,हमें परबत ही लाकर दो
कभी रोयेंगे
'हम को पेड़ दिखलाने चलो '
या फिर हवा का स्वाद
चखने के लिए होंगे परेशां
हम को कर देंगे निरुत्तर
तब हमारे पास
बगलें झाँकने ही के अलावा
चारा क्या होगा ?
अभी भी है समय देखो
अभी छोटे हैं बच्चे
हम अभी तो
ढूँढ सकते हैं विकल्प इस का
पहाड़ों के हसीं पाँवों में
रुन -झुन घुंघरुओं की बांध सकते हैं
बना कर रख सकते हैं
आकाश को नीला
हवाओं को सुगंधें बाँट सकते हैं
बिछौना कर भी सकते हैं
हरे मखमल का धरती पर
अभी तो है समय
हम यदि आज चाहें तो
कल बच्चों को देने के लिये
उन के सवालों के जवाबों का
मुरब्बा डाल सकते हैं
कि दे सकते हैं इन बीजों को
अवसर वृक्ष बनने का
अभी तो है समय शायद
अभी छोटे हैं बच्चे।....

डॉ. कृष्णा कुमारी

हरी जबानों की व्यथा

बूढ़ा तो नहीं हुआ हूँ
पर तुम मेरे बौने कद से
नाप रहे हो
मेरे जीवन का वैलेंटाइन ।

सड़क किनारे आते ही
मैं भी बन गया महानगर का पेड़
छाँग दी गयीं थी डालें
काट दिया गया
बिजली के तारों का
अतिक्रमण करता
मेरा बढ़ता हुआ ऊँचा शीर्ष
सभ्यता के बुलडोजर से
कुछ कुछ दिनों में
ला दिया गया अपने बौनेपन में।

आज भी हुलस है
किसलय फूटते हैं आज भी
प्लाज्मा टपकता है
और गोंद की तरह
चिपक जाता है।
बासंती बहारों में
अब भी खिलते हैं फूल
कोयल -राग लिए
नई डालियों का आसन
कि श्रोता बन जाएँ शेष पाखी
भी ।

उलझती हैं पतंगे भी
डोरें देशी-विदेशी भी
पर उड़ते हुए धुएँ
और पीलौंधी धूलों से
वैसा ही हो जाता हूँ
जैसे ढुलाई करते करते
सीमेंट का आदमी ।

तंत्र और सभ्यता ने
पाट दी है मेरी जमीन
बेबसी है मेरी
पर लोकतंत्र की चीख में भी
कौन नहीं है बेबस
आधार कार्ड के बावजूद।

सपाट और सिक्स लेन
डामर और सीमेंट
इनके भीतर भी
फैलाता हूँ जड़ें
यही आस लिए
कि मेरी सघन डालें
कटती पिटती भी
देती रहेंगी छायाएँ
फूलों के मखमली रूप
नव पल्लव के सुकुमार रूप।
बटोहियों के लिए क्षण भर का
विश्राम
पक्षियों के लिए अक्षय उड़ान
कभी नहाऊँगा बारिश में
यही होगा उत्सव विधान ।

ऐसा नहीं कि तुम
नहीं
चाहते मुझे ।
बचाना चाहते हो
बुलडोजर और तिजोरियों में
कैद होते हैं जंगल से
कभी लाल सिंदूर चढ़ा देते हो
पत्थर रखकर
और जरा सा हवन- धूप ।

पर सभ्यताओं के दारुण स्वार्थ
नियति बन जाते हैं
मेरे कद और जीवन की।
और चमकीली कारों के शीशों
से झाँकती तुम्हारी संवेदनशील
आँखें भी
उठावने की तरह रस्म निभा
जाती है।

फिर भी
कभी कोई पाखी
चोंच में उठा ले जाएगा मेरा
बीज
और गिरा देगा किसी गाँव के
मुहाने पर।
कभी फैल गया सुंदर वन की
तरह
तो सूखती सभ्यताएँ भी
पिकनिक मनाने आएँगी।

हमें बहुत चाहती है दुनिया
हरे बानक और पंछियों के
कलरव के साथ
इसीलिए तो छाये रहते हैं चित्रों
में
मीडिया हमसे करवाता है
फेशियल ।

अब न कोई देखता है
खिलते हुए गुलाब
ना तड़ाग की अरुणाई में
खिलते कमल दलों को ;
फिर भी में सुबह शाम
सरकाते रहते है
वाट्सएप और फेसबुक पर ।

स्कूली बच्चे भी
इन्हीं चित्रों से जानते हैं
हम प्रकृति के वाशिंदों को।

पूरा जंगल है
तुम्हारी
मोबाइल मुट्ठी में
पर वह सुख कहाँ
जब सघन छाया में कहकहे
लगाते हो
और हम भी
मानवी छुअन से
खिल जाते हैं ।

पर अब हम हैं
इस छुअन से परे
और तुम सब भी
हमारी मादक छवि से दूर
केवल मोबाइल मुट्ठी में।

बी.एल.आच्छा

गीत गाता जा रहा हूँ।

गीत गाता जा रहा हूँ। गुनगुनाता जा रहा हूँ।।

है उपेक्षित शब्द का साम्राज्य सारा,
गीत गाकर कंठ शोषित है हमारा।

हौसले भी पस्त होते जा रहे हैं,

गीत के अतिरिक्त है ही क्या सहारा।।
पीठ अपनी मैं स्वयं ही।
थपथपाता जा रहा हूँ।।

दुखभरे कारुण्य में रोता रहा हूँ,
अश्रुओं से आत्मा धोता रहा हूँ।
रात्रि चिन्तन में लुटाकर और दिन में,
भावनामय नींद में सोता रहा हूँ।।

मैं स्वयं के प्राण बिम्बों-
को चढ़ाता जा रहा हूँ।।

वर्जनाओं के नगर में व्यग्र होकर,
निज हृदय के हाय सुंदर भाव खोकर।
इक अनियमित हो चुका अवधूत हूँ मैं,

ढूंढता हूँ स्वत्व को खुद ही डुबोकर।।

मैं स्वयं के श्रेष्ठताभ्रम,
को मिटाता जा रहा हूँ।।

कारुणिकता का सुविह्वल स्रोत हूँ मैं,
सिंधु में भटका हुआ सा पोत हूँ मैं।
कृष्णपक्षी कालिमा में खो गया जो,
चंद्रमा का शुभ्रतम उद्योत हूँ मैं।।

शुक्लता की आस में-
जीवन बिताता जा रहा हूँ।।

वेद प्रकाश भट्ट 'सत्यकाम'

श्रृंग नाद!!

नयन-सीप से टूट अश्रुकण,
जब-जब गिरे सिन्धुतल पर,
उठे ज्वार सागर अंतस में ,
फूट पड़ा लावा थल पर।
रक्ततृषित दानव बन शोषक,
शोणित पी अट्हास करें,
निजस्वार्थ हित दोषरहित का,
पंख काट परवाज भरे।

बुझा हृदय की जलन स्वेद से,
नूतन स्वप्न सजाते जो,
जो गैरो की क्षुधा मिटाते,
मांग रोटियाँ खाते वो।
उठे वेदना जब-जब मन में,
एक गहरी-सी टीस उठे,
चूँ कर टूट पड़े अश्रुकण,
विकल हृदय में चीख उठे।

खेल रहे हो बना कंदुकम्,
जिस गरीब की आसा से,
याद रखो इतिहास बदल,
देता अपनी परिभाषा से,
मन करता है चीख-चीखकर,
शोषित का गुणगान करूँ,
श्रृंग-नाद कर रण चंडी संग,
भैरव का आह्वान करूँ।

महावज्र-सा शस्त्र बना लूँ ,
निज शब्दों की अस्थि से,
श्वास-श्वास में जोश जगा दूँ,
मिटा हताशा बस्ती से।
चूस रहे जो रक्त सरल का,
परजीवी बन दुष्ट सभी,
खींच फैक दूँ अंधकूप में,
लौट न आये दुष्ट कभी।
विलख रहे हैं आज दुधमुँहे,
दूध सपोले पीते हैं,
रक्त सींच,जो स्वेद बहाते,
घुटघुट आँसू पीते है।

लिखूँ दास्ता मैं गरीब की,
अभिमानी का काल लिखूँ,
भयाक्रांत,शोषित,पीड़ित की,
शब्द-शब्द में ढाल लिखूँ।
नई-भोर की नई-किरण में,
खिला नया प्रत्यूष लिखूँ,
बोल उठे ये मूक अपाहिज,
अक्षर-अक्षर पीयूष लिखूँ।

दुधमुँहे का दूध लिखूँ मैं,
भूखे हित लिख दूँ दाने,
अबला के हित न्याय लिखूँ मैं,
दलित दीन लिख दूँ माने।

हेमराज सिंह 'हेम'
कोटा राजस्थान

प्यारी बहना

बहन की रक्षा करने का है,
दृढ़ संकल्प हमारा।
साथ पलें हैं साथ बढ़े हैं,
प्यार हमारा न्यारा।

कभी झगड़ते ,कभी मचलते,
कभी करें शैतानी।
दिन दिन भर हम बात करें ना,
थी कितनी नादानी?
सही दिशा दिखलाती हरदम,
मुझको प्यार दिया है।
मैं सफल हो जाऊँ पथ पर,
ऐसा कार्य किया है।

जब से बिछुड़े हम दीदी से,
सब कुछ सूना लगता।
कैसे मैं बतलाऊँ दीदी,
दिन दूना दूना लगता।
पावन पर्व भाई बहन का,
आओ इसे मनाएं।
घर की हो तुम राज दुलारी,
आओ झूमें गाएं।

डॉ०कमलेन्द्र कुमार

सामाजिक संचार माध्यम

सामाजिक संचार माध्यम, जादू बनकर छाया।
लुभा रही है सारे जग को, इंटर्नेट की माया।
मोबाइल, स्मार्टफ़ोन, कंप्यूटर,
अद्भुत हैं साधन।
वाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर,
इंस्ट्राग्राम, करें आराधन।
लोकप्रियता के प्रचार में, डूबे
व्यक्ति समूह।
सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक,
रचते नूतन व्यूह।
करें वीडियो कॉल, वाट्सएप ,
घटी परस्पर दूरी।
नए - नए लोगों से जुड़कर,
आशाएँ हों पूरी।
शिक्षा लें , नव कौशल सीखें ,
शुरू करें व्यापार।
है विशाल संजाल लाभप्रद, ज्यों
दैवी उपहार।
द्रुतगति से सूचना, मनोरंजन,
लाखों जन को जोड़ें।
मित्र सदृश नित सदुपयोग कर,
जीवन का रुख मोड़ें।
सदा सजगता वांछनीय है, घातक
अति उपयोग।
लती न बनें, समय न बिताएँ,
बढ़ें न तन - मन - रोग।
हनीट्रैप्स, अश्लील एसएमएस,
झूठे प्रेम प्रसंग।
ठग, हैकर, साइबर अपराधी,
कर सकते हैं तंग।
फोटो, वीडियो को एडिट कर,
जो भ्रम - भय फैलाते।
फँस जाते हैं जब चक्कर में, हवा
जेल की खाते।
बच्चे - युवा रहें चौकन्ने, दें भविष्य
पर ध्यान।
करें न निजता - हनन, बढ़ाएँ, केवल
शैक्षिक ज्ञान।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र

मेंहदी है लगाने वाली

प्रकृतिमेल डेस्क

मेंहदी का उपयोग सदियों से शादी-ब्याह या दिन-त्योहार पर हाथ-पैरों को सजाने के लिए किया जाता है। इसके साथ ही बालों की खूबसूरती और चमक के लिए भी मेहंदी का हेयर-पैक के तौर पर इस्तेमाल होता है।

आयुर्वेद के हिसाब से मेंहदी केवल रंग-एजेंट ही नहीं है, बल्कि औषधीय जड़ी-बूटी है। इसमें एनाल्जेसिक,एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-फंगल, एंटी-इंफ्लेमेटरी, एंटी-माइक्रोबियल, एंटी-ऑक्सीडेंट जैसे औषधीय गुण पाए जाते हैं जो कई बीमारियों से बचाव भी करते हैं।

अपने गुणों के कारण भी मेंहदी सभी की पसन्द बना है।

- लोग अपने केश की सेहत को अच्छा करने के लिए भी मेंहदी का खूब इस्तेमाल करते है। मेंहदी का पौधा फरवरी से मार्च के बीच लगाना बेहतर होता है। मेंहदी के पौधे में कांटे होते है जो दिक्कत दे सकते हैं। इसके लिए इस पौधे को अपने घर के बगीचे के किनारे पर लगाना बेहतर होता है। मेंहदी के फूल बहुत भीनी सुगन्ध जिए होते है जो कि बहुत मोहक होती है। इस पौधे की मौजूदगी और इसके फूलों की महक बगीचे का वातावरण अच्छा कर देते हैं।

- मेंहदी में एंटीबैक्टीरियल, एंटीफंगल, एंटीआक्सीडेंट, एंटीटयूमर जैसे औषधियें गुण भरे होते है। हमारे शरीर को जिनसे बहुत लाभ मिलता है। जहाँ मेंहदी लगी होती है वहाँ आसपास के पौधों को भी सुरक्षा मिलती रहती है। मेंहदी की एंटीफंगल और एंटीबैक्टीरियल गुण दूसरे पौधों को भी बचाते है।

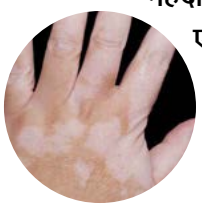

- त्वचा और बालों पर यह विशेष रूप से काम करता है। बालों में रूसी, बालों का सफेद होना, सिर में फंगल इंफेक्शन, बालों का झड़ना आदि के लिए मेंहदी एक प्राकृतिक उपाय है।

- मेंहदी एक प्राकृतिक कंडीशनर भी है जो बालों की सेहत को अच्छा करता है। इससे महंगे केमिकल वाले कंडीशनर से लोगो को निजात मिलती है।

- मेंहदी में मौजूद गुण पित्त के कारण होने वाले सिर दर्द में काफी राहत देता है।

- माना जा रहा है कि डायरिया में भी मेंहदी काफी लाभदायक है। आंतों में मेंहदी अपने एंटीफंगल गुण के कारण काफी आराम देती है, इसपर अभी और प्रयोग होना बाकी है। एंटीफंगल गुण के कारण यह घाव पर, खुजली आदि में भी मेंहदी फायदा देती है। गुणकारी और मोहक सुगन्ध वाली मेंहदी को आप आपनी बागवानी का हिस्सा बना सकते है।

प्रकृति के रंग

लक्ष्मीकांत वर्मा
लखीमपुर खीरी

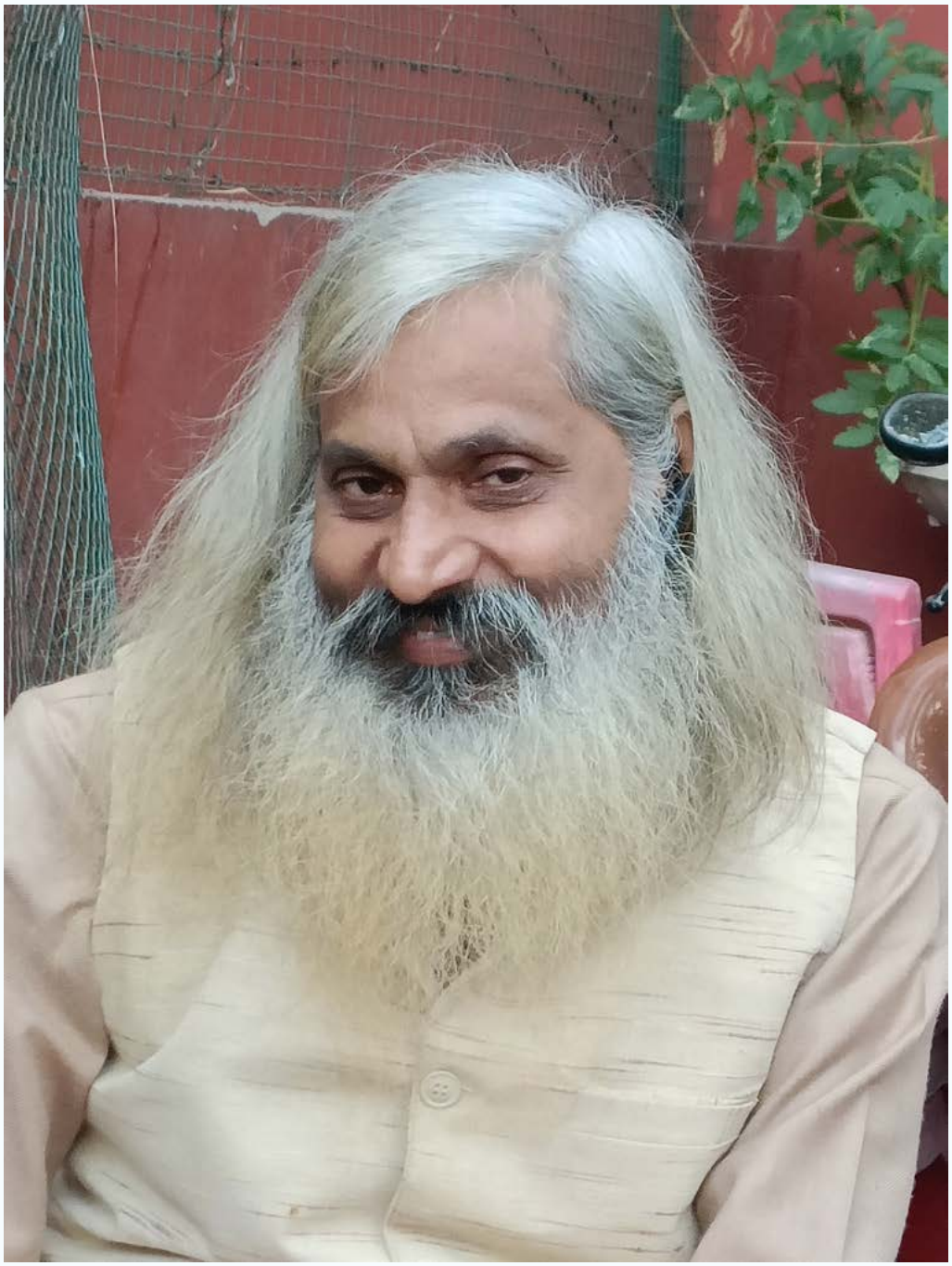

"अवस्था विशेष कार्य विशेष के लिए द्रव्य पदार्थ बनाने की क्रिया है, जो जिस कार्य के लिए अपना भूगोल बनाता है, उसी कार्य की पूर्णता, है बना हुआ पदार्थ ब्रह्माण्ड में अवरोध को मिटाकर अपना गंधीय विस्तार करता है।"

'अशोक मानव'

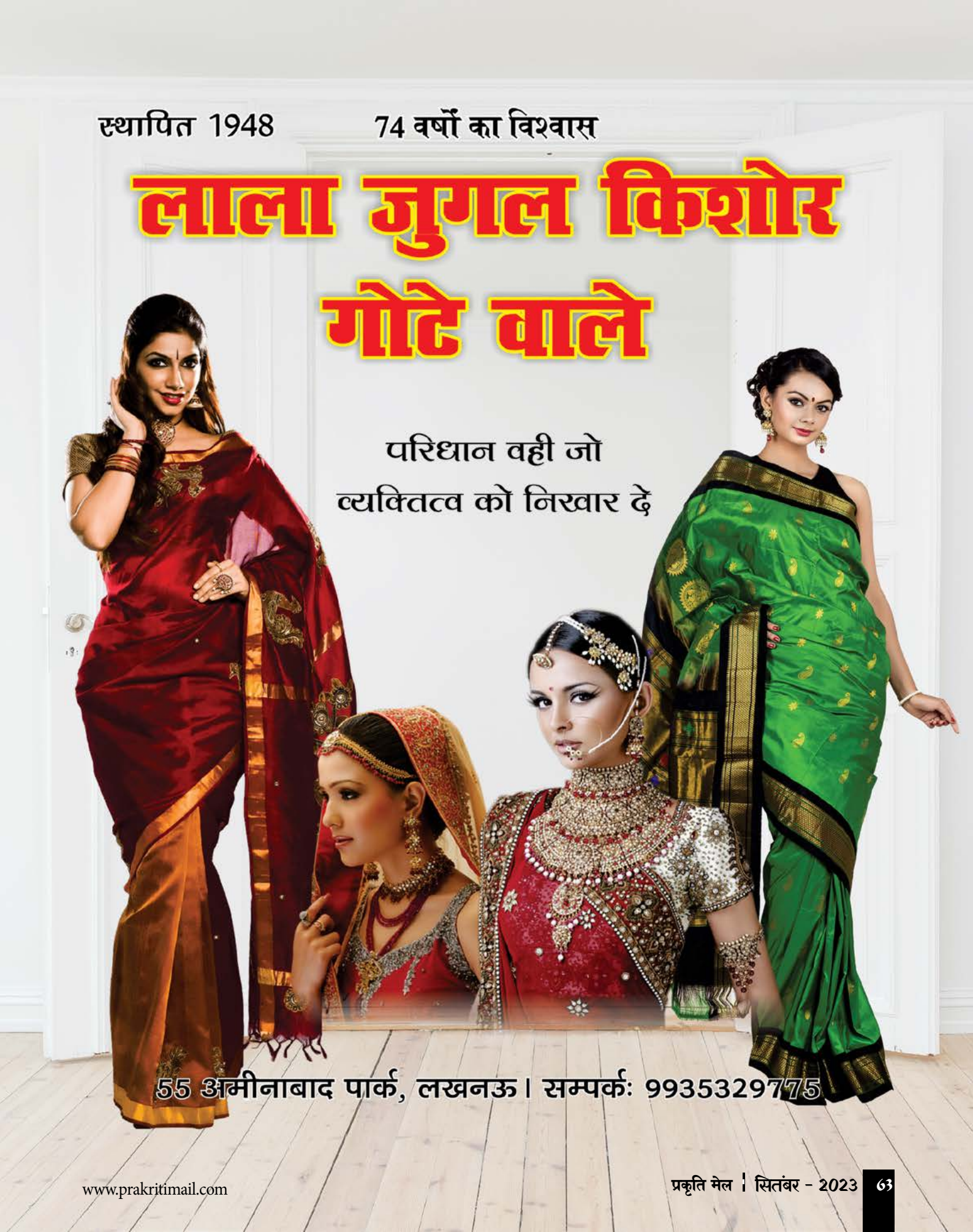

स्थापित 1948
74 वर्षों का विश्वास
लाला जुगल किशोर
गोटे वाले
परिधान वही जो
व्यक्तित्व को निखार दें
55 अमीनाबाद पार्क, लखनऊ। सम्पर्कः 9935329775

दुर्गा आटो सेल्स

सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दे

Aurhorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equipments & Spare Parts

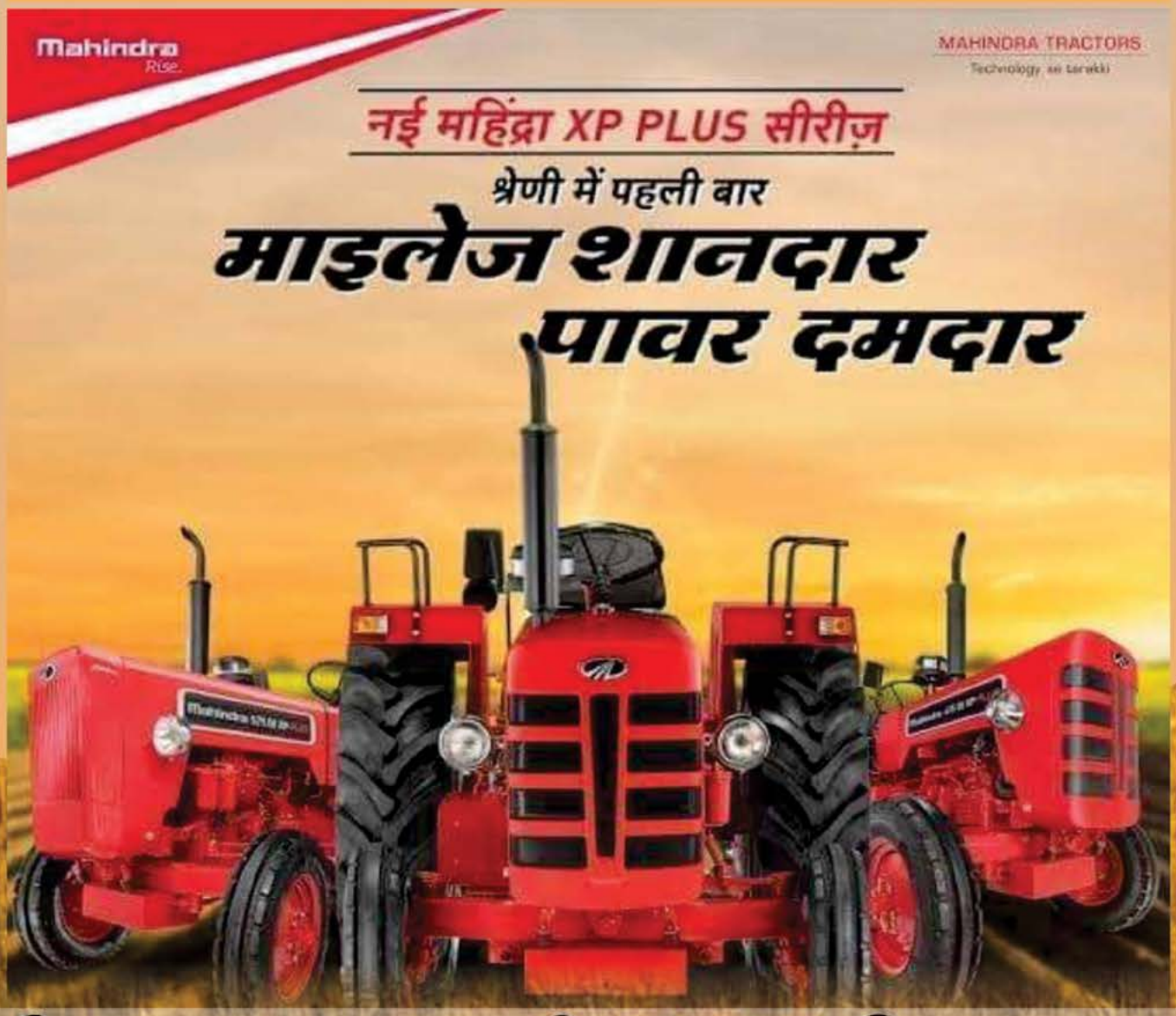

durgaautosale2000@gmail.com 9919528830 0545-4242216

इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मद्धली शहर, जौनपुर, उ. प्र.।